Daily
THE PHOTON NEWS
सच के हक में...
Published from Ranchi

Ranchi ● Tuesday, 31 October 2023 ● Year : 01 ● Issue : 282 ● Ranchi Edition ● Page : 12 ● Price : 3 ● www.thephotonnews.com
E-Paper : epaper.thephotonnews.com

सुविचार

आपके पास पचास मित्र हैं, यह अधिक नहीं है। आपके पास एक शत्रु है, यह बहुत अधिक है।

विजय सेतुपति संग काम करेंगी कंगना

SHARE

सेंसेक्स	:	64,112.65
निफ्टी	:	19,140.90

SARAFA

सोना	:	5,740
चांदी	:	78.05

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

BRIEF NEWS

SC का मनीष सिसोदिया को बेल देने से इन्कार

NEW DELHI : सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को दिल्ली के पूर्व उप मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी नेता मनीष सिसोदिया को जमानत देने से इनकार कर दिया। जस्टिस संजीव खन्ना की अध्यक्षता वाली बेंच ने कहा कि अगर छह से आठ माह में मुकदमा खत्म न हो तो वह दोबारा जमानत के लिए आवेदन कर सकते हैं। सुप्रीम कोर्ट ने 17 अक्टूबर को फैसला सुरक्षित रख लिया था। उल्लेखनीय है कि दिल्ली सरकार की आबकारी नीति में कथित अनियमितता मामले में गिरफ्तार सिसोदिया फिलहाल सलाखों के पीछे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने पिछली सुनवाई के दौरान एएसजी एसवी राजू से पूछा था कि मुकदमे में क्या प्रगति है। कोर्ट ने कहा था कि इस मामले में लगभग 20 से 30 हजार दस्तावेज हैं। 290 से अधिक गवाह हैं। ऐसे में ट्रायल पूरा कैसा होगा।

हमास ने बंधकों का वीडियो किया रिलीज

TEL AVIV : इजराइल-हमास जंग का आज 24वां दिन है। इस बीच हमास ने बंधकों का एक वीडियो जारी किया है। 76 सेकेंड के वीडियो में तीन इजराइली महिलाएं दिख रही हैं। इसमें एक महिला कह रही है- इजराइल के प्रधनमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू लोगों की सुरक्षा करने में नाकाम रहे। उसने रिहाई के लिए प्रीजनर स्वैप का प्रपोजल मानने की अपील की है। हमास ने 200-250 लोगों को बंधक बनाया है। अब तक सिर्फ 4 बंधक आजाद किए गए हैं। वहीं, हमास के जारी किए गए वीडियो को इजराइल ने प्रोपागेंडा बताया है। सरकार का कहना है- हम बंधकों को वापस लाने के लिए हर संभव कोशिश कर रहे हैं। अल जजीरा की रिपोर्टर ने बताया कि गाजा सिटी में रह रहे लोगों को फोन पर शहर खाली करने की चेतावनी दी जा रही है।

अमृत कलश यात्रा के समापन कार्यक्रम में भाग लेंगे पीएम

NEW DELHI : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 31 अक्टूबर को शाम लगभग 5 बजे कर्तव्य पथ पर 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान की अमृत कलश यात्रा के समापन पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लेंगे। यह कार्यक्रम आजादी का अमृत महोत्सव का समापन समारोह भी होगा। प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) ने सोमवार को एक बयान जारी कर यह जानकारी दी। इसमें कहा गया है कि कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री अमृत वाटिका और अमृत महोत्सव स्मारक का उद्घाटन करेंगे। इसे देश के प्रत्येक भाग से एकत्र की गई मिट्टी से कर्तव्य पथ पर विकसित व निर्मित किया गया है। पीएमओ के अनुसार प्रधानमंत्री देशभर से कार्यक्रम में शामिल होने वाले हजारों अमृत कलश यात्रियों को संबोधित भी करेंगे। कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री देश के युवाओं के लिए 'मेरा युवा भारत' (माय भारत) प्लेटफॉर्म का शुभारंभ भी करेंगे।

सुगम आवागमन की सुविधा आर्थिक विकास का सशक्त माध्यम : हेमंत

दुमका के मयूराक्षी नदी पर बना झारखंड का सबसे बड़ा उच्च स्तरीय पुल का उद्घाटन

PHOTON NEWS DUMKA : सूबे के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने सोमवार को दुमका के कुमड़ाबाद में मयूराक्षी नदी पर बनाए गए राज्य का सबसे बड़ा उच्च स्तरीय पुल समेत 543 करोड़ रुपये की लागत से बनकर तैयार व बनने वाली 21 योजनाओं का शिलान्यास व उद्घाटन करते हुए कहा कि इससे आर्थिक विकास की गति तेज होगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि आर्थिक विकास में सुगम आवागमन सुविधा सबसे खास पहलू है। कहा कि मुंबई, कोलकाता, ओड़िशा समेत देश के कई विकसित राज्य व शहरों का तीव्र विकास इसलिए हुआ है क्योंकि यह समुद्री तट के किनारे बसे हैं। कहा कि दुमका के मयूराक्षी नदी पर 198.11 करोड़ रुपये की लागत से बनकर तैयार 2.34 किलोमीटर लंबा उच्च स्तरीय पुल के बन जाने से न सिर्फ पश्चिम बंगाल, रांची, जामताड़ा व नाला की दूरी कम हो जाएगी बल्कि इससे आर्थिक व पर्यटन के क्षेत्र में विकास होगा। दुमका और मसलिया प्रखंड के कई गांवों के ग्रामीणों को भी अब दुमका आने जाने में काफी सहूलियत होगी। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने इस पुल का नाम दिशोम गुरु शिबू सोरेन सेतु रखा जाएगा। इसके लिए तमाम सरकारी प्रक्रियाएं पूरी कर शीघ्र ही यहां शिलापट्ट भी लगाया जाएगा। यह घोषणा मुख्यमंत्री ने मंच पर बतौर विशिष्ट अतिथि कृषि मंत्री बादल पत्रलेख के दिए गए प्रस्ताव के बाद की। उन्होंने कहा कि राज्य के आंदोलनकारियों को सम्मान देने की हमारी परंपरा रही है। हेमंत सोरेन ने कहा कि केंद्र सरकार झारखंड के साथ सौतेला व्यवहार कर रही है।

मयूराक्षी नदी पर बने पुल के उद्घाटन से पहले पूजा-अर्चना करते सीएम।

राज्य का तेजी से हो रहा विकास : बादल

विशिष्ट अतिथि कृषि मंत्री बादल पत्रलेख ने कहा कि हेमंत सोरेन के नेतृत्व में संताल परगना समेत पूरे राज्य में तेज गति से विकास हो रहा है। उन्होंने कहा कि बीते तीन वर्षों में पथ निर्माण विभाग की ओर से स्वीकृत तीन हजार 85 करोड़ रुपये की स्वीकृत योजनाओं में अकेले 865 करोड़ रुपये की योजनाएं दुमका जिले में स्वीकृत की गई है। इतना ही नहीं संताल परगना से रांची व पश्चिम बंगाल की दूरी कम करने के लिए मुख्यमंत्री ने निरसा के निकट वीर वेदिया में 280 करोड़ रुपये की लागत से उच्च स्तरीय पुल निर्माण की स्वीकृत दी है। इसी क्रम में बादल ने कुमड़ाबाद में बनाए गए उच्चस्तरीय पुल का नाम दिशोम गुरु शिबू सोरेन सेतु रखने का प्रस्ताव भी दिया। कहा कि शिबू सोरेन के संघर्षों के परिणाम अलग झारखंड है। उनकी वजह से झारखंड के लोगों को झारखंडी होने का एहसास हो सका है। बादल ने कहा कि राज्य सरकार ने तमाम प्रतिकूल परिस्थितियों में भी राज्य के 22 लाख लोगों को सर्वजन पेंशन योजना, पांच लाख किसानों की कर्ज माफी, 25 लाख किसानों को मुख्यमंत्री सुखाड़ राहत योजना से आच्छादित करने का काम किया है।

सीएम आज पलामू में 5000 युवाओं को सौंपेंगे नियुक्ति पत्र

PHOTON NEWS RANCHI : सूबे के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन मंगलवार को पलामू के 5000 युवाओं को नियुक्ति पत्र सौंपेंगे। इस दौरान वो आयोजन स्थल से सभा को संबोधित करेंगे। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के पलामू दौरे को लेकर प्रशासन अलर्ट मोड में है। सीएम पलामू में प्रमंडल स्तरीय रोजगार मेला सह ऑफर लेटर वितरण समारोह में भाग लेंगे। इस दौरान युवाओं के बीच ऑफर लेटर का वितरण करेंगे। इसकी तैयारी को लेकर पलामू के उपायुक्त की देखरेख में कई उपसमितियों का गठन किया गया है। सीएम हेमंत सोरेन के कार्यक्रम को लेकर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। इसके लिए तीन हजार पुलिस के जवान लगाए गए हैं। विशेष सुरक्षा को लेकर रांची से एक्सपर्ट की टीम पलामू पहुंच चुकी है। बम निरोधक दस्ता, डॉग स्क्वॉयड आदि भी सक्रिय रहेंगे। पलामू की एसपी रिष्मा रमेशन ने पुलिस लाइन में सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन मंगलवार को दुमका से 11:30 बजे हवाई मार्ग से आकर 12:59 बजे चियांकी स्थित हवाई पट्टी में उतरेंगे, फिर वहां से सड़क मार्ग से होते हुए 01:10 बजे पुलिस लाइन आयेंगे।

देवघर व गोड्डा के 24 ठिकानों पर इनकम टैक्स ने मारा छापा

जमीन बिक्री और शराब कारोबार से जुड़े मामले में हुई कार्रवाई

CRIME REPORTER RANCHI : सोमवार सुबह देवघर और गोड्डा के 24 ठिकानों पर अचानक इनकम टैक्स की टीमें पहुंची और ताबड़तोड़ छापेमारी शुरू कर दी। मामला चारु शीला ट्रस्ट और फलेरिया कोठी की जमीन के साथ-साथ शराब कारोबार से जुड़ा है। वहीं, इसी मामले में देवघर निगम के पूर्व मेयर राजनारायण खवाड़े उर्फ बबलू खवाड़े, उनके सहयोगी रहे उमाशंकर सिंह, रियल एस्टेट कारोबारी संजय मालवीय के कई ठिकानों पर भी रेड मारी। बबलू खवाड़े के रितिक राज होटल सहित अन्य ठिकाने पर भी छापेमारी हुई। आईटी ने संजय मालवीय के होटल अंजुला मेंशन उनके अपार्टमेंट पर भी आईटी की टीम ने छापा मारा है। देवघर में जमीन कारोबारी बृजेश राय के जसीडीह स्थित तीन ठिकाने सियाराम हॉस्पिटल, संत फ्रांसिस हॉस्पिटल वाली गली स्थित बृजेश राय के आवास और उसके सिमरिया स्थित आवास पर इनकम टैक्स की टीम ने छापेमारी की। दूसरी तरफ गोड्डा के कॉन्ट्रेक्टर मुकेश बजाज के आवास पर भी छापेमारी हुई। गोड्डा में मुकेश के आवास के अलावा उसके अन्य दुकान में भी छापेमारी के लिए टीम पहुंची। उधर, झारखंड मुक्ति मोर्चा के नेता नंदकिशोर दास के यहां भी छापेमारी हुई। इनकम टैक्स डिपार्टमेंट को जमीन बिक्री में सरकार को स्टांप ड्यूटी में कम रकम दशार्ते हुए अधिक पैसे कमाने का मामला पता चला है।

योगेंद्र तिवारी से जुड़ा है कनेक्शन

बताया जा रहा है कि ईडी की टीम जिन लोगों के ठिकानों पर छापेमारी कर रही है, सभी का कनेक्शन चर्चित शराब कारोबारी योगेंद्र तिवारी से रहा है। सभी लोग पहले शराब व जमीन कारोबार से जुड़े थे। बता दें कि योगेंद्र तिवारी को बीते दिनों ईडी ने गिरफ्तार किया था। ईडी के अधिकारी योगेंद्र तिवारी को रिमांड पर लेकर पूछताछ कर रहे हैं। पूछताछ के क्रम में ही योगेंद्र तिवारी ने अपने अन्य सहयोगियों के नाम ईडी की बताये हैं, जिसके बाद आज सोमवार सुबह से ही ईडी गोड्डा और देवघर के कई ठिकानों पर छापेमारी कर रही है।

कोलकाता के 11 ठिकानों पर रेड

झारखंड के चारू शीला ट्रस्ट और फलेरिया कोठी की जमीन अलग तरीके से बेचने और शराब कारोबार से जुड़े मामले में आयकर विभाग (इनकम टैक्स डिपार्मेंट) की टीम कोलकाता और दुगार्पुर के 11 ठिकानों पर छापेमारी कर रही है। आयकर विभाग के सूत्रों ने बताया कि सोमवार तड़के इनकम टैक्स की टीम ने झारखंड के देवघर और गोड्डा के 24 ठिकानों पर छापेमारी की थी। इसी टीम की निशानदेही पर कोलकाता के चार्टर्ड अकाउंटेंट माखन सतनालीवाला के ठिकाने पर ईडी छापेमारी हुई है। इसके अलावा दुगार्पुर में बलानंद आश्रम और दुगार्पुर कैंसर हॉस्पिटल से जुड़े 10 ठिकानों पर तलाशी ली। इन सभी का संबंध जमीन बिक्री से संबंधित मामले में टैक्स चोरी से है। इनकम टैक्स के अधिकारी ने नाम उजागर नहीं करने की शर्त पर बताया कि जो जमीन बिक्री योग्य थी और उसके अलावा जो सरकारी जमीन थी, उसकी भी खरीद-बिक्री की गई। जमीन की खरीद-बिक्री के समय स्टांप ड्यूटी कम रकम दशार्ते हुए इनकम टैक्स को नुकसान पहुंचाया गया। इसके अलावा शराब कारोबार में भी इसी तरह कोलकाता के चार्टर्ड अकाउंटेंट माखन सतनालीवाला ने दस्तावेजों में फजीर्वाड़ा कर खरीद-बिक्री में मदद की। इस संबंध में ईडी की हिरासत में मौजूद झारखंड के योगेंद्र तिवारी ने पूछताछ में खुलासा किया था।

8 लाख जरूरतमंदों को घर देगी राज्य सरकार

अबुआ आवास योजना पोर्टल तैयार

PHOTON NEWS RANCHI : राज्य के करीब आठ लाख गरीब लोगों को अबुआ आवास योजना का लाभ देने के लिए ग्रामीण विकास विभाग एक पोर्टल तैयार हो चुका है। इसे जैप आइटी के सहयोग से विकसित किया गया है। अगले तीन वर्ष में लगभग 16 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा खर्च कर राज्य सरकार अपनी निधि से जरूरतमंद लोगों को आवास उपलब्ध करवाएगी। अबुआ आवास योजना के पात्र राज्य के वैसे सभी लोग होंगे, जो कच्चे मकान में रह रहे हैं।

योजना के लाभुकों के चयन की प्रक्रिया राज्य स्थापना दिवस 15 नवंबर से शुरू की जाएगी। वित्तीय वर्ष 2023-24 में प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण में नये आवासों की स्वीकृति नहीं मिली। इसको लेकर राज्य और केंद्र सरकार के बीच कई बार बातचीत भी हुई। प्रधानमंत्री आवास योजना में राज्य सरकार की वित्तीय भागीदारी 40 प्रतिशत होती थी। इसके बाद राज्य सरकार ने अपने वित्तीय स्रोत से अबुआ आवास योजना के तहत 2023-24 में दो लाख परिवारों को आवास देने का निर्णय लिया है।

प्रति आवास के लिए लाभुकों को मिलेंगे दो लाख रुपये

अबुआ आवास योजना के तहत तीन कमरे के मकान के लिए प्रति आवास राज्य सरकार दो लाख रुपये लाभुकों को देगी। इस वित्तीय वर्ष में भी दो लाख आवास 31 मार्च 2024 तक स्वीकृत कर दिए जाएंगे। इसमें करीब 4106.67 करोड़ रुपये का खर्च आएगा। आगामी वित्तीय वर्ष 2024-25 में 3,50,000 इकाई आवास निर्माण की स्वीकृति दी जाएगी, जिसमें 7106.67 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। वहीं, 2025-26 में 2,50,000 इकाई आवास स्वीकृत होंगे, जिसमें 5106.96 करोड़ रुपये खर्च होंगे। यानी अगामी तीन वर्षो में 16 हजार करोड़ से अधिक की राशि खर्च की जाएगी।

जनता को पार्टियों का इनकम सोर्स जानने का अधिकार नहीं

इलेक्टोरल बॉन्ड पर केंद्र ने सुप्रीम कोर्ट से कहा

AGENCY NEW DELHI : इलेक्टोरल बॉन्ड के तहत राजनीतिक पार्टियों को मिलने वाले चंदे को सार्वजनिक बनाने की मांग करने वाली याचिका पर अटॉर्नी जनरल आर वेंकटरमणी ने रविवार को अपने विचार रखे। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट से कहा कि संविधान ने नागरिकों को इन फंड्स का सोर्स जानने का मौलिक अधिकार नहीं दिया है। उन्होंने कोर्ट को चेतावनी दी कि इलेक्टोरल बॉन्ड को रेगुलेट करने के लिए पॉलिसी डोमेन में न आए। रविवार को उन्होंने कहा कि नागरिकों को ये अधिकार तो है कि वे उम्मीदवारों की क्रिमिनल हिस्ट्री जानें, लेकिन इसका ये मतलब नहीं है कि उन्हें पार्टियों की इनकम और पैसों के सोर्स जानने का अधिकार है। दरअसल, 31 अक्टूबर को सुप्रीम कोर्ट में सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पांच जजों की संविधान पीठ इलेक्टोरल बॉन्ड मामले की सुनवाई करेगी।

पूछताछ के बाद नक्सली प्रमोद मिश्रा को पटना का बेउर जेल भेजा गया

RANCHI : भाकपा माओवादी नक्सली संगठन के केंद्रीय कमेटी के सदस्य प्रमोद मिश्रा को झारखंड एनआइए ने पूछताछ के बाद पटना के बेउर जेल भेज दिया है। सूत्रों से सोमवार को मिली जानकारी के अनुसार झारखंड एनआइए ने मिश्रा को पूछताछ के लिए रिमांड पर रांची लाया था। पूछताछ के दौरान उसे रांची के सेंट्रल जेल, होटवार में रखा गया था। रिमांड पर पूछताछ करने के बाद प्रमोद मिश्रा को एनआइए ने पटना के सेंट्रल जेल बेउर जेल भेज दिया। पूछताछ में उसने बताया है कि झारखंड, बिहार, छत्तीसगढ़ में पहले की तरह लेवी की पैसे की उगाही नहीं हो रही है, जिसके कारण गोली, बम और अन्य सामान खरीदने में संगठन को परेशानी हो रही है।

आज ओडिशा के राज्यपाल पद की शपथ लेंगे रघुवर दास

शपथ लेने से पहले पुरी में भगवान जगन्नाथ का झारखंड के पूर्व सीएम ने किया दर्शन

PHOTON NEWS PURI : ओडिशा के मनोनीत राज्यपाल रघुवर दास सोमवार को पुरी पहुंचे और एक दिन बाद होने वाले शपथ ग्रहण समारोह से पहले पुरी स्थित जगन्नाथ मंदिर में दर्शन किए। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री दास तड़के ट्रेन से पुरी पहुंचे। इसके बाद वह तटीय शहर स्थित राजभवन गए और बाद में मंदिर पहुंचे। गृह राज्य मंत्री टीके बेहरा ने मंदिर के मुख्य द्वार सिंह द्वार पर मनोनीत राज्यपाल रघुवर दास का स्वागत किया। मंदिर में दर्शन करने के बाद रघुवर दास ने संवाददाताओं से कहा, मैं भाग्यशाली हूं कि मुझे ओडिशा के लोगों की सेवा करने का मौका मिला है। मैंने भगवान जगन्नाथ से वंचितों की सेवा करने की शक्ति देने का आशीर्वाद मांगा। राज्य का विकास मेरी प्राथमिकता है। ओडिशा का राजभवन 24 घंटे लोगों के लिए खुला रहेगा। रघुवर दास ने पड़ोसी राज्य आंध्रप्रदेश में रेल दुर्घटना में करीब 14 लोगों की मौत पर भी दुख व्यक्त किया। भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के वरिष्ठ नेता रघुबर दास दिन में बाद में राज्य की राजधानी भुवनेश्वर गए। सोमवार की रात ओडिशा के राजभवन में रूंके।

भगवान जगन्नाथ की दर्शन मंदिर से निकलते पूर्व सीएम रघुवार दास।

भारत की जीत की हैट्रिक, चाइना को दी मात

एशियन गेम्स में मिली हार का भारत ने लिया बदला

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड वूमेंस एशियन चैंपियंस ट्रॉफी के तीसरे दिन का आखिरी मुकाबला भारत और चाइना के बीच खेला गया। इस रोमांचक मुकाबले में मेजबान भारत ने 2-1 से जीत दर्ज की। रांची के मरांग गोमके जयपाल सिंह मुंडा एस्ट्रो टर्फ स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में भारत ने चाइना को 2-1 से मात देकर एशियन गेम्स में मिली हार का बदला लिया। पहले क्वार्टर में दोनों टीमों के बीच कड़ा मुकाबला हुआ। लेकिन भारत ने पहले क्वार्टर के 15वें मिनट में चाइना को गलती करने पर मजबूर किया और पेनाल्टी स्ट्रोक हासिल किया। दीपिका ने पेनाल्टी स्ट्रोक लिया और बिना गलती किए उसे गोल में तब्दील करते हुए 1-0 की बढ़त ली। भारत के लिए दूसरा गोल मुकाबले के 26 वें मिनट में आया। झारखंड की सलीमा टेटे ने चाइना की डिफेंस को भेदकर शानदार फील्ड गोल कर पहले हॉफ में 2-0 की बढ़त बनाई। मैच के 41 वें मिनट में चाइना ने पेनाल्टी कॉर्नर जीता और जियाकी जोंग ने उसे गोल में तब्दील किया। तीसरे क्वार्टर तक भारत ने 2-1 की लीड बनाए रखी।

कोरिया और मलेशिया के बीच 1-1 से मुकाबला ड्रा

तीसरे दिन पहला मुकाबला कोरिया और मलेशिया के बीच 1-1 से ड्रा रहा। रांची के मरांग गोमके जयपाल सिंह मुंडा एस्ट्रो टर्फ स्टेडियम में आयोजित मुकाबले में दोनों टीम एक दूसरे पर हावी नजर आई। पहले हॉफ में दोनों टीमों ने कोई गोल नहीं किया।

जापान ने थाइलैंड को 4-0 से दी मात

चैंपियंस ट्रॉफी के तीसरे दिन जापान ने लगातार तीसरी लीग मुकाबले को जीता। दिन का दूसरा मुकाबला जापान और थाईलैंड के बीच खेला गया, जिसमें जापान ने 4-0 से जीत दर्ज की। मुकाबले का पहला क्वार्टर गोल रहित रहा। लेकिन दूसरे क्वार्टर में जापान ने गोल मारकर 1-0 की बढ़त बनाई।

आंध्रप्रदेश ट्रेन हादसे में अबतक 14 की मौत

AMRAVATI : आंध्रप्रदेश के विजयनगरम जिले में रविवार की शाम दो ट्रेनें टकरा गई। इस हादसे में 9 यात्रियों की मौत हो गई थी। सोमवार सुबह मरने वालों का आंकड़ा बढ़कर 14 हो गया। हादसे में 50 यात्री घायल हुए हैं। ट्रेनों की टक्कर विजयनगरम में अलमांडा-कंकटपल्ली के बीच हुई। ईस्ट कोस्ट रेलवे के सीपीआरओ बिस्वजीत साहू ने बताया, हादसा मानवीय भूल के चलते हुआ। विशाखापट्टनम-रायगड़ा पैसेंजर ट्रेन के ड्राइवर ने सिग्नल को ओवरशूट किया, जिससे यह आगे चल रही विशाखापट्टनम-पलासा पैसेंजर ट्रेन से भिड़ गई। टक्कर से दोनों ट्रेन के पांच डिब्बे पटरी से उतर गए। इनमें से 3 कोच आगे की ट्रेन के और दो पीछे आ रही ट्रेन के थे। रेलवे सीपीआरओ के मुताबिक, सिग्नल ओवरशूट तब होता है जब कोई ट्रेन रेड सिग्नल पर रुकने के बजाय आगे बढ़ जाती है।

हिंसक हो गया मराठा आरक्षण आंदोलन

एनसीपी विधायक के घर पर हमला, गाड़ियों में लगाई आग

AGENCY MAHARASTRA : महाराष्ट्र में मराठा आरक्षण की मांग को लेकर प्रदर्शनकारियों ने सोमवार को बीड में दो विधायकों के घरों में आग लगा दी, वहीं शदर पवार गुट के एनसीपी का दफ्तर भी जला दिया। प्रदर्शनकारियों ने बीड के माजलगांव में विधायक प्रकाश सोलंके के घर और दफ्तर पर पथवराव किया। सैकड़ों प्रदर्शनकारियों ने यहां दर्जनों बाइक और कार को भी फूंक दिया। वहीं, देर शाम बीड में ही एक और एनसीपी विधायक संदीप क्षीरसागर का घर भी जला दिया गया। मराठा आरक्षण आंदोलन इस साल अगस्त से ही चल रहा है। आरक्षण की मांग को लेकर 11 दिनों में 13 लोग सुसाइड कर चुके हैं। एनसीपी विधायक प्रकाश सोलंके ने घटना को लेकर कहा- जब हमला हुआ तब मैं अपने घर के अंदर ही था। हालांकि मेरे परिवार का कोई भी सदस्य या कर्मचारी घायल नहीं हुआ।

BRIEF NEWS

विधायक ने महापर्व छठ को लेकर की बैठक

GIRIDIH : महापर्व छठ को लेकर नगर निगम 38 छठ घाटों के साफ-सफाई में जुट गया है। इसी क्रम में सोमवार को सदर विधायक सुदिव्य कुमार सोनू ने उप नगर आयुक्त स्मृति कुमारी, बिजली विभाग, पुलिस अधिकारियों और निगम के 30 छठ पूजा समिति के सदस्यों के साथ बैठक की। विधायक ने बैठक में 38 घाटों का जिक्र करते हुए कहा कि पिछले वर्षों की तरह इस बार भी छठ घाटों तक के आवागमन के रास्ते को दुरुस्त करना जरूरी है। इसके अलावा जिन घाटों में लाइट की व्यवस्था नहीं है वैसे घाटों में निगम की ओर से लाइट लगाया जाए। ऐसे घाट, जहां आने जाने का रास्ता बेहद खराब हैं, तो वहां स्टोन डस्ट भर कर उसे चलने लायक बनाया जाएगा। इस दौरान सदर विधायक सोनू ने उप नगर आयुक्त स्मृति को निर्देश देते हुए कहा कि निगम दीपावली के पूर्व ही सफाई अभियान में जुट जाए और लाइट की व्यवस्था भी कर ले।

पत्नी ने पत्थर से कूचकर की पति को हत्या

LOHARDAGA : लोहरदगा के कैरो थाना क्षेत्र के खरता गांव में रविवार की रात एक महिला ने अपने पति को पत्थर से कूच-कूचकर मार डाला। मृतक के भाई गुंजन उरांव के फर्द बयान के अनुसार खरता निवासी प्रदीप उरांव (34) ने तीन विवाह किया था। पहली पत्नी देवकी उरांव से मृतक के भाई गुंजन उरांव ने विवाह कर लिया है, वही फिलहाल उसकी दो पत्नियां हैं। मौजूदा समय में उसने अपनी दो पत्नियों को रांची में रखा था। खबर है कि वह जतरा देखने के लिए गांव पहुंचा था जहां उसकी पत्नी से कुछ बात को लेकर विवाद हुआ. जिसके बाद पत्नी ने पति की बेरहमी से पत्थर से कूच-कूचकर हत्या कर दी और मौके से भाग निकली। हत्या के पीछे पति-पत्नी के बीच आपसी विवाद होने की बात कही जा रही है। इधर, घटना की सूचना मिलने के बाद कैरो थाना अध्यक्ष शंखनाथ उरांव, सब इंस्पेक्टर ऋषिकांत कुमार शर्मा और असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर संजय कुमार राय दल बल के साथ घटना स्थल पर पहुंचे, जहां उन्होंने शव को पोस्टमार्टम के लिए लोहरदगा भेजा। फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुट गई है।

देवघर में 21वां पुस्तक मेला 12 जनवरी से

DEOGHAR : देवघर में 21वें पुस्तक मेले का आयोजन 12 से 22 जनवरी तक होगा। इस संबंध में मेला संयोजक डॉ सुभाष चंद्र राय ने जानकारी दी कि पुस्तक मेला के सफल संचालन के लिए कोर कमेटी का गठन किया जायेगा।इसकी बैठक पांच नवंबर को रेड रोज स्कूल में संध्या पांच बजे होगी।

राष्ट्रीय एकता दिवस पर आज सरकारी कर्मी करेंगे रक्तदान

KHUNTI : राष्ट्रीय एकता दिवस पर जिला प्रशासन द्वारा 31 अक्टूबर को प्रातः नौ बजे से सदर अस्पताल, खूंटी में रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। शिविर में सभी सरकारी कर्मी बढ़-चढ़कर भाग लेंगे एवं आमजनों अपील है कि जागरूक दृष्टिकोण अपनाते हुए रक्तदान के पुनीत कार्य। जिला प्रशासन ने आम लोगों से अपील की है कि वे अधिक से अधिक संख्या में रक्तदान करें। बताया जाता है कि सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती के मौके पर(राष्ट्रीय एकता दिवस) के अवसर पर खूंटी बाजार टांड़ से सुभाष चौक (ऊपर चौक) तक सरदार बल्लभ भाई पटेल की स्मृति में विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा एक पदयात्रा निकाली जायेगी। पदयात्रा प्रातः नौ बजे से खूंटी बाजार टांड़ से शुरू होगी।

चोरी की नौ बाइक के साथ दो गिरफ्तार

LOHARDAGA : लोहरदगा पुलिस ने बाइक चोर गिरोह का भंडाफोड़ किया है। सदर थाना पुलिस ने एसपी के निर्देश पर छापेमारी कर दो लोगों को गिरफ्तार करते हुए चोरी की नौ मोटरसाइकिल को जब्त किया है। लोहरदगा एसपी हारीस बिन जमां ने सोमवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर थाना प्रभारी अनिल उरांव के नेतृत्व में टीम गठित कर छापेमारी अभियान चलाकर मोटरसाइकिल चोर गिरोह के खिलाफ कार्रवाई की गई है। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान सदर थाना क्षेत्र के जुरिया निवासी किताबुल अंसारी और रांची जिला के मांडर निवासी इरफान अंसारी के रूप में हुई है।

शौच के लिए गई महिला के साथ हुआ दुष्कर्म, चार युवकों पर प्राथमिकी दर्ज

प्रेमी से मिलने के बहाने गई थी महिला, तीन अन्य युवक भी पहुंचे वहां

PHOTON NEWS PALAMU : जिला मुख्यालय मेदिनीनगर से सटे चैनपुर थाना क्षेत्र के रबदा पंचायत क्षेत्र में एक 27 वर्षीय महिला के साथ रेप किया गया। रविवार की देर शाम महिला शौच करने के लिए घर से बाहर निकली थी। इसी क्रम में वहां आए चार युवकों में से दो ने उसके साथ दुष्कर्म किया। सोमवार को एमएमसीएच में महिला की मेडिकल जांच करायी गयी। साथ ही न्यायालय में 164 के तहत बयान दर्ज कराया गया है। चैनपुर पुलिस इस संबंध में कांड संख्या 279/23 दर्ज कर मामले की छानबीन कर रही है।

घटना के समय महिला का पति घर पर नहीं था। बाहर

रहकर मजदूरी करने के कारण दूसरे प्रदेश में गया हुआ है। महिला के अनुसार घटना रात करीब 1 बजे की है। महिला शौच के लिए बाहर निकली थी। इसी क्रम में चार लड़के आए। इनमें एक उससे पूर्व परिचित था। दो युवकों ने उसके साथ दुष्कर्म किया।

इधर, जानकारी मिली है कि पूर्व परिचित युवक के साथ महिला का प्रेम प्रसंग चल रहा था। महिला शौच के बहाने युवक से मिलने गई थी। इसी क्रम में तीन अन्य युवक भी वहां पहुंच गए। चारों में एक प्रेमी और एक अन्य युवक ने उसके साथ दुष्कर्म किया। यह भी चर्चा है कि महिला के साथ उसके प्रेमी ने शादी के लिए एक सप्ताह पहले मारपीट की थी। प्रेमी का कहना था कि उसका पति दोनों के रिश्ते के बारे में जानता है। ऐसे में वह उसे छोड़कर उससे शादी कर ले। महिला द्वारा इनकार करने पर प्रेमी ने मारपीट की थी। यहां यह भी बता दें कि महिला का प्रेमी उसका पति का साथी बताया गया है।

मामले में चैनपुर पुलिस का कहना है कि चार युवकों पर महिला से दुष्कर्म से संबंधित प्राथमिकी दर्ज की गई है। आरोपी बंदूआ क्षेत्र के हैं। उनकी गिरफ्तारी के लिए छापामारी की जा रही है।

छात्रा के साथ दो भाईयों ने किया दुष्कर्म का प्रयास, एक गिरफ्तार दूसरा फरार

PALAMU : मेदिनीनगर सदर थाना क्षेत्र में एक कॉलेज छात्रा से दुष्कर्म का प्रयास करने का मामला सामने आया है। इस संबंध में मामला दर्ज कर पुलिस ने एक आरोपी भीमगड़ा के नागेन्द्र यादव को गिरफ्तार कर सोमवार को जेल भेज दिया है, वहीं दूसरा आरोपी निरंजन यादव फरार है। उसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस छानबीन कर रही है। आरोपी दोनों मौसेरे भाई हैं। पुलिस के अनुसार घटना गत 22 अक्टूबर की है। रात में छात्रा पंडाल घूमकर आ रही थी। इसी क्रम में दोनों भाइयों ने छात्रा को अगवा कर उसे पास के खेत में ले गए और दुष्कर्म का प्रयास किया। छात्रा द्वारा शोर मचाए जाने पर युवक दुष्कर्म नहीं कर पाए। आस पास के ग्रामीण मौके पर न पहुंच जाए, इस कारण दोनों वहां से निकल गए। छात्रा का 164 के तहत कोर्ट में बयान दर्ज कराया गया और अनुसंधान के दौरान आरोपी एक भाई को पकड़ा गया।

सड़क दुर्घटना में डीसी के बॉडीगार्ड की मौत

PHOTON NEWS LOHARDAGA : सदर थाना क्षेत्र के पावरगंज चौक के समीप हुई सड़क दुर्घटना में डीसी के बॉडीगार्ड की मौत हो गई। बताया जाता है कि सोमवार सुबज करीब सात बजे डीसी का बॉडीगार्ड हवलदार मरियानुश किंडो ड्यूटी पर जा रहा था। इसी क्रम में अनियंत्रित स्कूली बस की चपेट में आने से हवलदार की मौके पर ही मौत हो गई। हवलदार अपनी बुलेट मोटरसाइकिल पर सवार था। हवलदार मरियानुश किंडो गुमला जिले के घाघरा के लुदको गांव निवासी डोमनिक किंडो का पुत्र था। वर्तमान में वह मधुबन टोली में किराए के मकान में अपनी पत्नी और बच्चों के साथ रहता था।

घटना की सूचना के पश्चात सदर अस्पताल पहुंचकर उपायुक्त बाघमारे प्रसाद कृष्ण,

एसडीओ अमित कुमार, सीओ अभिषेक व सिविल सर्जन डॉ राजमोहन खलखो समेत पुलिस एशोसिएशन के प्राधिकारियों समेत डीसी कार्यालय के कर्मियों ने सदर अस्पताल पहुंच कर पीड़ित के परिजनों को ढांढस बंधाया। शव का पोस्टमार्टम कराने के बाद पुलिस लाइन लाया गया, जहां उन्हें अंतिम विदाई दी गई। समाहरणालय में शोक सभा का आयोजन किया गया। अंगरक्षक का शव उनके गांव भेज दिया गया।

कर्रा में वृद्ध जनों के लिए निशुल्क नेत्र जांच शिविर का हुआ आयोजन

नेत्र जांच शिविर में उपस्थित ग्रामीण। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS KHUNTI : खूंटी जिले के कर्रा प्रखंड के सभागार में साइट सेवर और जेएसएलपीएस के संयुक्त तत्वावधान में सोमवार को वृद्ध जनों के लिए निःशुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 150 मरीजों की जांच की गई। प्रखंड विकास पदाधिकारी स्मिता नागेशिया ने शिविर का अवलोकन किया व मरीजों से मिलकर शिविर में मिल रही सुविधा की जानकारी ली।

शिविर में सुगम रूप से नेत्र जांच, विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा उचित परामर्श दिय गया और 42 मरीजों को आवश्यकता के अनुरूप चश्मा उपलब्ध कराया गया। साथ ही 57 लाभुक को मोतियाबिंद के ऑपरेशन के लिए चिह्नित किया गया। निःशुल्क नेत्र जांच होने से लाभुकों ने प्रशासन का आभार व्यक्त किया। आयोजन को सफल बनाने के लिए जेएसएलपीएस के बीपीएम प्रमोद कुमार झा, बीपीओ संजय झा के अलावा अन्य सभी क्षेत्रीय कर्मियों ने सहयोग दिया।

जीटी रोड सिक्सलेन अंडर पास में पड़ने लगी दरारें, माहभर पहले ही हुई थी ढलाई

PHOTON NEWS HAZARIBAGH : हजारीबाग में चौपारण के जीटी रोड सिंघरावां मोड़ में बन रहे सिक्सलेन अंडर पास में दरार पड़नी शुरू हो गई है। जहां दरार दिख रही है, वहां सड़क बने माहभर भी नहीं गुजरे हैं। एक तरफ सड़क बनाई जा रही है और दूसरी तरफ दरार पड़ती जा रही है। दुर्गा मंडप के पास सिक्सलेन अंडर पास में दरार दिखाई दे रही है। यह रोड एनएचआई से बनाई जा रही है। अंडर बाईपास की मांग ग्रामीण कई वर्षों से सांसद और विधायक से करते आ रहे हैं। जनप्रतिनिधियों के दबाव पर एनएचएआई ने सिंघरावां के दुर्गा मंडप के सामने बनने वाला अंडर पास को प्लेसमेंट कर सिंघरावां मोड़ पर वर्ष 2021 में अंडर पास बनाने का काम शुरू किया था। तीन साल बीतने को हैं और अब तक एक तरफ भी अंडर पास पूर्ण नहीं हो पाया है। इस

संबंध में बच्छई के मुखिया वीरेंद्र कुमार ने कहा कि एनएचआई संवेदक गुणवत्ता को ताक पर रख कर सिक्स लेन का निर्माण करा रहा है। समय रहते एनएचआई और प्रशासन की नींद नहीं खुली, तो उसका खामियाजा आने वाले समय में स्थानीय लोगों को भुगतना होगा। सिक्स लेन से गुजरने वाले राहगीरों को जान-माल का खतरा होगा।

भारी वाहन चलने से पूर्व उभरने लगी दरार : सिंघरावां मोड़ पर वर्ष 2021 से कच्छप गति से बन रही अंडर पास सड़क दिल्ली से कोलकाता की ओर जाने वाला लेन बन कर अभी पूरा भी नहीं हुआ है और न ही इस पर एक भी वाहन गुजरा है। उससे पहले ढलाई के बाद ही इसमें दरार पड़ने लगी। चोरी-छिपे इसकी मरम्मत की जा रही है। बच्छईके मुखिया कहते हैं कि गुणवत्ता को ताक पर रख निर्माण पूर्ण होने पर अंडर पास के ऊपर से भारी वाहन 100 टन से अधिक माल लेकर गुजरेगा, तो इस सड़क से सुरक्षित मंजिल तक पहुंच पाएगा कि नहीं, यह कल्पना से परे है।

दो अलग-अलग सड़क हादसों में सात घायल, तीन रेफर

PHOTON NEWS KODERMA : जिले में सोमवार को दो अलग-अलग सड़क हादसों में सात लोग घायल हो गए। जयनगर थाना के सोनपुरा के समीप बिहार के नवादा से बच्चों को कार से लेकर तिलैया डैम स्थित एक निजी कोचिंग संस्थान में बच्चों को छोड़ने जा रहे व्यक्ति की कार कोडरमा थर्मल पावर प्लांट से कुछ दूरी पर दुर्घटनाग्रस्त हो गई।

इस दुर्घटना में कार सवार दो बच्चे और दो लोग घायल हो गए। घायलों की पहचान बिहार के नवादा निवासी नीतीश कुमार सिंह (35), अहम कुमार (10), संस्कार कुमार (10) एवं चिंटू कुमार (35) शामिल है। कार केटीपीएस प्लांट के आगे अनियंत्रित होकर खेत में पलटी खाते हुए दुर्घटनाग्रस्त हो गई। दुर्घटना के बाद स्थानीय लोगों के द्वारा घायलों को इलाज के लिए सदर अस्पताल कोडरमा पहुंचाया

गया, जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर रूप से घायल नीतीश कुमार सिंह, संस्कार कुमार और अहम कुमार को बेहतर इलाज के लिए रांची रिम्स रेफर कर दिया।

वहीं दूसरी घटना कोडरमा थाना क्षेत्र अंतर्गत कोलटेक्स के समीप हुई। वहां एक वाहन की चपेट में आने से बाइक सवार तीन युवक घायल हो गए। घायलों में विशु कुमार उर्फ विष्णु भुईयां (17) शामिल है। दो युवक को हल्के-फुलकी चोट लगी है। बाइक सवार तीन युवक तिलैया से कोडरमा की तरफ आ रहे थे। जो कोलटेक्स के समीप वाहन की चपेट में आ जाने से घायल हो गए। बेहतर इलाज के लिए विष्णु भुईयां को रिम्स रेफर कर दिया गया।

मुख्यमंत्री के कार्यक्रम का जिला परिषद करेगा बहिष्कार

PHOTON NEWS PALAMU : मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के पलामू कार्यक्रम को लेकर श्रम, नियोजन, प्रशिक्षण एवं कौशल विकास विभाग द्वारा प्रमंडलीय रोजगार मेला (ऑफर लेटर वितरण) समारोह के आयोजन से संबंधित आमंत्रण पत्र तैयार किया गया है। इस आमंत्रण पत्र में मुख्यमंत्री के अलावा पांच मंत्री, आठ विधायकों को नियमानुसार अतिथि बनाकर स्थान दिया गया है, लेकिन पलामू जिला परिषद अध्यक्ष-उपाध्यक्ष का कोई जिक्र आमंत्रण पत्र में नहीं किया गया है। इससे नाराज होकर जिला परिषद पलामू ने मुख्यमंत्री के कार्यक्रम का बहिष्कार करने का निर्णय लिया है।

सोमवार को अध्यक्ष प्रतिमा कुमारी के अलावा जिला पार्षद

बैठक में उपस्थित जिला परिषद के सदस्य। ● फोटोन न्यूज

प्रमोद कुमार सिंह, जयशंकर सिंह उर्फ संग्राम, विजय कुमार, फजायल अहमद, खुशबू कुमारी, रूपवंती देवी ने बैठक के बाद एक पत्र जारी कर सामूहिक रूप से मुख्यमंत्री के कार्यक्रम का बहिष्कार करने का निर्णय लिया। पत्र के माध्यम से कहा गया है कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के रोजगार मेला में पलामू आगमन पर जिला प्रशासन पलामू की ओर से जारी किए गए आमंत्रण पत्र में जिला परिषद अध्यक्ष-उपाध्यक्ष का नाम नहीं दिया गया है। पंचायती राज संस्था के सर्वोच्च पद की अवहेलना की गयी है, जिसका जिला परिषद परिवार घोर निन्दा करता है एवं कार्यक्रम का सामूहिक बहिष्कार का निर्णय लिया है। मामले में जिला परिषद की ओर से मुख्यमंत्री से संज्ञान लेने के लिए आग्रह किया गया है।

जमीन विवाद को सुलझाने के लिए फास्ट ट्रैक कोर्ट की आवश्यकता : नेशनल पीपुल्स पार्टी

खतियान गुम हो रहे या फाड़े जा रहे हैं, संदिग्ध माफिया कार्यालय में सक्रिय : अमर महतो

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड बनने के बाद किस तरह से शहरीकरण में तेजी आई है। जिस तरह से भूमि विवाद में भी बढ़ोतरी हुई है भूमि को लेकर हत्याएं बड़ी है। रांची शहर के नजदीकी प्रखंड शहर अंचल, बड़गांई अंचल, काके अंचल, नामकुम अंचल के रैयत का खतियान जिला रिकॉर्ड रूम में नहीं मिल रहे हैं। तमाड़ -बुंडू - सोनाहातु क्षेत्र के भूमि का डिजिटल नहीं होने के कारण भूमि की विस्तृत जानकारी नहीं हो पा रही है।

खतियान प्राप्त निकासी की कार्यशैली मे पारदर्शिता नहीं है। दूसरी और ऑनलाइन कागजात सुधारने के नाम पर खूब धांधली

अमर महतो।

होती है। कुछ कंप्यूटर ऑपरेटर जानबूझकर गड़बड़ी करते हैं ताकि रैयत से वसूली कर सके। रांची रजिस्ट्री ऑफिस में फर्जी कागजात के आधार पर रजिस्ट्री इन दिनों चरम पर है। बिना पूर्ण दस्तावेज सत्यापन के निबंधन कार्य तेजी से किया जा रहा है।

छोटानागपुर काशतकारी अधिनियम का पालन नहीं किया जा रहा है। फर्जी वंशावली बनाकर भी जमीन की खरीद बिक्री किया जा रहा है जो बाद में विवाद बन जाता है। गरीब लोग अदालत के चक्कर लगाते हैं और तबाह हो जाते हैं। जमीन को लेकर शोषण उत्पीड़न झारखंड बनने के बाद बढ़ोतरी हुई है। रांची जिले में अन्य जिले के ज्यादातर लोग फर्जी आधार कार्ड बनकर जमीन की खरीदारी करते हैं। जमीन की प्रकृति से हेरा-फेरी कर जमीन कबजाने का प्रयास करते हैं। पुलिस प्रशासन भी इस पर जमीन विषय को लेकर चुप्पी साधते हैं जो बाद में आगे चलकर अपराध का स्वरूप ले लेता है।

खतियान लेखन कार्य में लगे कर्मचारी भी खेसरा-रकवा लिखने में काफी त्रुटि से लिख रहे हैं। अंकों के हेर फेर से खतियान रैयत को सुविधा का सामना करना पड़ता है। जिला प्रशासन को निरीक्षण कर वर्तमान स्थिति को देखते हुए उचित कार्रवाई करने चाहिए। ताकि किसी तरह का दस्तावेज के साथ छेड़छाड़ ना हो। नेशनल पीपुल्स पार्टी के नेताओं ने कहा जमीन विवाद को सुलझाने के लिए फास्ट ट्रैक कोर्ट की स्थापना की जानी चाहिए। अगर स्थिति में सुधार नहीं हुआ तो राज्य के विभिन्न प्रखंड-पंचायत के रैयत के साथ मिलकर जिला रिकॉर्ड रूम का घेराव किया जाएगा।

विधायक नीलकंठ सिंह मुंडा ने कांची नदी पर बनने वाले उच्चस्तरीय पुल का किया शिलान्यास, बोले-

बरगलाने वालों से सावधान रहें गांव के लोग

खूंटी के हर गांव का विकास हुआ है : काशीनाथ

कार्यक्रम में उपस्थित विधायक निलकंठ सिंह मुंडा। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS KHUNTI : आज तक किसी भी सरकार ने गरीब आदिवासियों की जमीन को नहीं लूटा और न ही भविष्य में कोई सरकार ऐसा कर सकती है, लेकिन चुनाव के मौसम में बहुत से ऐसे लोग आते हैं और भोली-भाली गरीब जनता को उनकी जमीन लूटे जाने का भय दिखाकर उन्हें बरगलाने का काम करते हैं। ऐसे लोगों से आम लोगों को सावधान रहने की जरूरत है, क्योंकि ऐसे तत्व कभी भी उनके हितैषी नहीं हो सकते। इसलिए जो भी आपके हर सुख-दुःख में आपके साथ रहता हो, उसे ही अपना समर्थन दें। ये बातें खूंटी के विधायक और राज्य कें पूर्व ग्रामीण विकास मंत्री नीलकंठ सिंह मुंडा ने कही।

विधायक सोमवार को खूंटी प्रखंड के सिल्दा-कालामाटी रोड पर उरांव मसना के समीप कांची नदी पर तीन करोड़ 33 लाख रुपये की लागत से बनने वाले पांच स्पेन के उच्च स्तरीय पुल निर्माण कार्य का शिलान्यास करने के बाद आयोजित जनसभा को संबोधित कर रहे थे। विधायक ने कहा कि आजादी के 75 वर्ष बाद अब इस क्षेत्र के लोगों की पुरानी मांग पूरी हो रही है। पुल बन जाने से सिल्दा, करमडीह, चांपी, लोधमा सहित उक्त क्षेत्र के दर्जनों गांवों के ग्रामीणों को कालामाटी आने के लिए लंबी दूरी तय नहीं करनी पड़ेगी। विधायक ने कहा कि जनता के आशीर्वाद से उन्होंने विधानसभा क्षेत्र के जंगलों और पहाड़ों तक तथा अधिकतर नदी-नालों पर गुणवत्तापूर्ण सड़क और पुल पुलियों का निर्माण कराया है। पुल- पुलियों के अतिरिक्त विकास के अन्य कार्य भी यहां सर्वाधिक हुए हैं।

पिकअप से अवैध शराब बरामद, एक गिरफ्तार

जब्त की गयी शराब की पेटियां। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS CHATRA : चतरा जिले की सदर थाना पुलिस ने एक पिकअप वाहन से सब्जी के नीचे छिपाकर ले जा रहे भारी मात्रा में अवैध अंग्रेजी शराब को बरामद किया है। मामले में पुलिस ने एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है।

सदर एसडीपीओ अविनाश कुमार ने सोमवार को बताया कि गुप्त सूचना मिली थी कि एक सफेद रंग के पिकअप मालवाहक वाहन (जेएच 02बीजे 8784) में सब्जी के नीचे छिपाकर नकली अंग्रेजी शराब भारी मात्रा में बेचने के फिराक में है। इस सूचना पर एक छापेमारी टीम का गठन किया गया। एसडीपीओ ने बताया कि टीम ने सूचना के बाद त्वरित कार्रवाई करते हुए देवी मंडप जतराहीबाग के पास वाहन को चेक किया। वाहन चेक करने पर भारी मात्रा में अंग्रेजी शराब बरामद की गई। पुलिस ने जितेंद्र कुमार ठाकुर नाम के व्यक्ति को को गिरफ्तार किया।

BRIEF NEWS

पीवीयूएन में सतर्कता जागरूकता सप्ताह की शुरूआत

RANCHI : पीवीयूएन पतरातू ने सोमवार को हर्षोल्लास के साथ सतर्कता जागरूकता सप्ताह की शुरूआत की। इस अवसर पर सम्मेलन हॉल में पीवीयूएन सीईओ रवींद्र कुमार और जीएम (इंजीनियरिंग) बी. दास द्वारा सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाई गई। प्रशासन भवन की प्रतिज्ञा में सभी विभागाध्यक्षों और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी देखी गयी। जानकारी के अनुसार अगले दिनों में पीवीयूएन के कर्मचारियों, परिवारों और स्थानीय लोगों के लिए विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे।

मेडिकल हेल्थ बीमा लागू करने के लिए सरकार करेगी कर्मचारियों संग बैठक

RANCHI : राज्य के कर्मचारियों को मेडिकल हेल्थ बीमा लागू करने के लिए सरकार ने कर्मचारियों के साथ 31 अक्टूबर को बैठक बुलायी है। यह बैठक नेपाल हाउस सभागार में दोपहर बाद 3 I30 बजे से होगी। बैठक में मेडिकल बीमा योजना के तहत चिकित्सा पैकेज तैयार करने को लेकर विचार-विमर्श किया जाएगा। झारखंड राज्य अराजपत्रित कर्मचारी महासंघ इस बैठक में स्वास्थ्य बीमा योजना राज्य कर्मियों के हित में केंद्र के अनुरूप हू-ब-हू लागू करने की मांग करेगा। इस बैठक में भाग लेने के लिए विभाग के उप सचिव ध्रुव कुमार ने महासंघ को आमंत्रित किया है।

अनुबंध पर रिसर्च असिस्टेंट की होगी नियुक्ति

RANCHI : रिम्स के वायरल रिसर्च एंड डायग्नोस्टिक लैबोरेट्रीज डिपार्टमेंट ऑफ माइक्रोबायोलॉजी में एक साल के अनुबंध अथवा परियोजना कार्य तक के लिए रिसर्च असिस्टेंट की नियुक्ति को लेकर विज्ञापन का प्रकाशन किया गया है। 10 नवंबर को सुबह 9.30 बजे से 11 बजे तक रिम्स निदेशक कार्यालय में साक्षात्कार के लिए आवेदकों को शामिल होने का निर्देश दिया गया है।

ग्रामीण विकास मंत्री ने सुनी लोगों की समस्याएं

RANCHI : झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमिटी के तत्वावधान में कांग्रेस कोटे के सभी मंत्रियों का जन-सुनवाई कार्यक्रम लगातार जारी है। इसी कड़ी में सोमवार को जन-सुनवाई कार्यक्रम के तहत कांग्रेस भवन, रांची में राज्य के ग्रामीण विकास मंत्री आलमगीर आलम ने राज्य के विभिन्न जिलों से आये लोगों की समस्याओं को सुना। साथ ही उनके निराकरण के लिए अधिनस्थ पदाधिकारियों को दूरभाष के माध्यम से कई निर्देश दिये। फरियादियों के आवेदनों पर संज्ञान लेते हुए मंत्री ने विशेष टिप्पणी के साथ त्वरित लिखित रूप से भी संबंधित पदाधिकारियों को निर्देश देने का कार्य किया।

atom美 ATOMY INDIA
RANCHI TEAM
WARRIOR CENTRE
4th Floor, Shop No. 22, 23, 24
Roshpa Roshpa Tower,
Main Road, Ranchi - 834001
Mob. 9334495776

42 पुड़िया ब्राउन शुगर के साथ पुलिस ने तीन युवकों को दबोचा

छात्रों को टारगेट कर सस्ते दामों में देकर लगाते थे नशे की लत

CRIME REPORTER RANCHI : डोरंडा थाना की पुलिस ने सोमवार को 42 पुड़िया ब्राउन शुगर के साथ तीन आरोपी मनोज कुमार, राज नारायण और अभिषेक कुमार को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। तीनों आरोपियों ने बताया कि वह अरगोड़ा इलाके से और जमेशदपुर से ब्राउन शुगर लाते है। तीनों आरोपी ब्राउन शुगर का सेवन भी करते हैं और खरीद बिक्री का काम भी करते हैं। आरोपियों ने अपने कई साथियों का नाम बताया है। पुलिस अन्य आरोपियों की तलाश में छापेमारी कर ही है। पुलिस का कहना है कि तीनों आरोपी डोरंडा थाना क्षेत्र स्थित फारेस्ट कालोनी में पिछले तीन दिन से ब्राउन शुगर बेच रहे थे। पुलिस को इसकी सूचना मिली तो आरोपियों को मोहल्ले से गिरफ्तार कर लिया गया। तीनों आरोपी कालेज के छात्रों को टारगेट करते थे। आरोपी पहले कम पैसा में छात्रों को ब्राउन शुगर देते हैं। छात्रों को इसकी लत लग जाती है तब आरोपी उनसे ज्यादा पैसा लेते थे।

डोरंडा पुलिय की गिरफ्त में आरोपी।

मोबाइल बंद मिलते ही फरार हो जाते हैं गिरोह के सदस्य

पुलिस का कहना है कि ब्राउन शुगर का सप्लाई करने वाले लोगों का मोबाइल बंद मिलते ही गिरोह के सदस्य सक्रिय हो जाते हैं और फरार हो जाते हैं। मोबाइल बंद मिलते ही गिरोह के सदस्यों को पता चल जाता है कि सप्लायर पुलिस की गिरफ्त में आ चुके हैं। पुलिस ने तीनों आरोपी को पकड़ा तो उनके मोबाइल पर लगातार फोन आ रहा था। पुलिस पूछताछ कर रही थी इस वजह से तीनों आरोपियों का मोबाइल बंद कर दिया गया। पुलिस आरोपियों का मोबाइल नहीं बंद करती तो इस गिरोह के अन्य सदस्यों तक पुलिस पहुंच जाती। हालांकि पुलिस का कहना है कि कई सदस्यों के बारे में अहम सुराग मिला है। पुलिस जल्द ही अन्य सदस्यों को पकड़कर जेल भेजेगी।

सिटी एसपी ने सभी थानेदरों को दिया टास्क

सिटी एसपी राजकुमार मेहता ने शहर के सभी थानेदारों को टास्कर दिया है। एसपी का आदेश है कि हर थानेदार अपने अपने क्षेत्र में ब्राउन शुगर का कारोबार करने वाले सदस्यों का लिस्ट तैयार करें और छापेमारी कर उन्हें जेल भेजे। जो आरोपी जेल से बाहर निकले हैं उनपर नजर रखें। थानेदार स्कूल और कालेज के पास लोगों को अपना नंबद दें ताकि ब्राउन शुगर का कारोबार करने वाले आरोपियों के बारे में पुलिस को सूचना मिल सके। एसपी का कहना है कि ब्राउन शुगर का कारोबार करने वाले लोगों के खिलाफ विषेश अभियान चलेगा।

ट्रैक्टर चोरी में चार गिरफ्तार

गिरफ्तार आरोपी

CRIME REPORTER RANCHI : ओरमांझी थाना पुलिस ने चोरी के ट्रैक्टर को बरामद करते हुए चार चोर को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार चोरों में रोबिन एंथोनी, करण कुमार राम, रंथु उरांव और गोविंद कुमार शामिल है। इनके पास से चोरी का ट्रैक्टर बरामद किया गया है। ग्रामीण एसपी मनीष टोप्पो ने सोमवार को संवाददाता सम्मेलन में बताया कि 27 अक्टूबर को ओरमांझी निवासी सुनील कुमार ने थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई थी। दर्ज प्राथमिकी में बताया गया था कि ट्रैक्टर (जेएच ड2 एई 1536) के चालक सौरम राजवार अज्ञात व्यक्ति के साथ ओरमांझी से सिमेन्ट और कारकेट शीट लाने के लिए ट्रैक्टर लेकर गया था। इसके बाद से ट्रैक्टर ड्राईवर तथा भाड़ा बुक करने वाले व्यक्ति का मोबाईल स्वीच ऑफ है। ऐसा लगता है कि ड्राईवर और गाड़ी बुक करने वाला मेरा ट्रैक्टर को चोरी कर लिया है। मामले की गंभीरता को देखते हुए सिल्ली डीएसपी के नेतृत्व में एक एसआईटी टीम का गठन किया गया। गठित टीम ने अनुसंधान के क्रम में ट्रैक्टर चालक सौरभ रजवार को रामगढ़ से बरामद किया गया । इसके बाद मामले में शामिल चार चोरों को गिरफ्तार किया।

नगरपालिका सेवा संवर्ग नियुक्ति परीक्षा पर सवाल

मजिस्ट्रेट से जांच कराए राज्य सरकार : बाउरी

PHOTON NEWS RANCHI : भाजपा विधायक दल के नेता अमर बाउरी ने रविवार को आयोजित नगरपालिका सेवा संवर्ग नियुक्ति परीक्षा पर सवाल उठाया है। परीक्षा में धांधली के आरोप लगाए हैं। कहा है कि राज्य सरकार झारखंड की नौकरियां बेचने में लगी है। ऐसा होने नहीं देंगे। सोशल मीडिया के जरिये आरोप लगाते कहा है कि युवा विरोधी लूट और झूठ की झारखंड सरकार का संगठित कुकृत्य एक बार पुनः सामने आया है। नगरपालिका परीक्षा में बड़ी गड़बड़ी की सूचना है। छात्रों का कहना है कि कई केंद्रों पर सील टूटे पेपर मिले।

बाउरी के मुताबिक अब जिम्मेदारी जेएसएससी (झारखंड कर्मचारी चयन आयोग) की है कि वह कैसे छात्रों की शंका का निवारण करता है। अगर मन में खोट नहीं है तो झारखण्ड सरकार मजिस्ट्रेट स्तर पर मामले की निष्पक्ष जांच कराए। अगर भ्रष्टाचार हुआ है तो दोषियों पर कड़ी कार्यवाही सुनिश्चित करते हुए परीक्षा रद्द करे।

परीक्षा भर्ती रोकथाम और निवारण विधेयक काला कानून

अमर बाउरी ने कहा है कि डर इस बात का है कि नए काला कानून झारखंड प्रतियोगी परीक्षा भर्ती रोकथाम और निवारण विधेयक के मुताबिक झारखंड सरकार अपने पाप को छुपाने के लिए आवाज उठाने वाले विद्यार्थियों को ही जेल में न डाल दें। साथ ही बाउरी ने योग्य अभ्यर्थियों की हकमारी बर्दाश्त नहीं किए जाने की चेतावनी भी दी है।

सरकार को भ्रष्ट बता रहे हैं खुद झामुमो के विधायक : शाहदेव

PHOTON NEWS RANCHI : भाजपा ने झामुमो विधायक के बहाने मुख्यमंत्री को निशाने पर लिया है। भाजपा ने मुख्यमंत्री से कहा कि केवल विपक्ष ही नहीं, उनके खुद की पार्टी के विधायक अपनी ही सरकार को भ्रष्ट और दलालों से घिरा बता रहे हैं। प्रदेश प्रवक्ता प्रतुल शाहदेव ने कहा कि अब विपक्ष के साथ-साथ सत्ताधारी दल के विधायक ही उनकी सरकार पर गंभीर आरोप लगा रहे हैं। विधायक लोबिन हेंब्रम ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन पर युवाओं के सपनों को तोड़ने का आरोप लगाया है। कहा कि स्थानीयता के नाम पर उन्होंने अर्जुन मुंडा की सरकार से समर्थन वापस लिया था। लेकिन 4 वर्ष तक झुनझुना बजाते रहे।

बाल विवाह मुक्त भारत बनाने के लिए पुलिसकर्मियों को दिलाई गई शपथ

कार्यक्रम में शामिल अधिकारी।

PHOTON NEWS RANCHI : बाल विवाह मुक्त भारत कार्यक्रम के तहत जगन्नाथपुर और पुंदाग ओपी परिसर में सोमवार को कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान थाना प्रभारी बाल विवाह मुक्त अभियान के तहत सभी पुलिसकर्मियों और समाजसेवियों को शपथ दिलवायी गयी। सभी ने शपथ लिया कि वो अपने क्षेत्र को बाल विवाह मुक्त बनाने का कार्य करेंगे। इस कार्यक्रम का आयोजन सत्यार्थी फाउंडेशन और चाइल्ड राइट्स फाउंडेशन रांची के सहयोग से किया गया। गौरतलब है कि झारखंड के पुलिस पदाधिकारियों व कर्मियों को क्रिमिनल इन्वेस्टिगेशन डिपार्टमेंट (सीआईडी) ने बाल विवाह मुक्त भारत अभियान के तहत शपथ दिलवाने में सहयोग करने का निर्देश दिया है। इसे लेकर सीआईडी ने सभी जिलों के एसएसपी व एसपी को पत्र लिखा है। लिखे पत्र में कहा गया है कि कैलाश सत्यार्थी फाउंडेशन के तहत पूरे भारत में बाल विवाह मुक्त भारत अभियान कार्यक्रम निर्धारित किया गया है। इस अभियान के तहत झारखंड में चाइल्ड राइट्स फाउंडेशन की ओर से जागरुकता अभियान चलाया जा रहा है।

करवा चौथ को लेकर शृंगार और कपड़े की दुकानों पर उमड़ रही भीड़, ब्यूटी पार्लर में एडवांस बुकिंग जारी

PHOTON NEWS RANCHI : एक नवंबर को करवा चौथ है। पति की लंबी आयु और अखंड सौभाग्य की कामना के साथ सुहागिन महिलाएं बुधवार सुबह सरगही करेंगी। दिनभर उपवास के बाद शाम को अर्घ देंगी और पति के हाथों पानी पीकर व्रत तोड़ेंगी। इसको लेकर राजधानी के बाजारों में भी खासा उल्लास दिख रहा है। महिलाएं पूजन, शृंगार सामग्री की खरीदारी कर रही हैं। कपड़ों की दुकानों पर भी भीड़ है। साथ ही मेहंदी और ब्यूटी पार्लर में एडवांस बुकिंग की जा चुकी है। बाजार में करवा थाल, चलनी, लोटा जैसी जरूरी सामग्री बिक रही हैं। मिट्टी, पीतल, चीनी का करवा खास है।

खरीदारी करते लोग।

इसके अलावा करवा सेट, सजी थाली, सजी चलनी आदि को काफी पसंद किया जा रहा है। एक पूजा दुकान के संचालक ने बताया कि करवा सेट की रेंज 250-550 रुपये के बीच है। वहीं मिट्टी का प्लेन करवा 20-40 रुपये, मिट्टी का सजा करवा 50-125 रुपये, पीतल का करवा 250-550 रुपये, मीना कारीगरी वाला पीतल का करवा 300-700 रुपये, चलनी 50-150 रुपये, चीनी का करवा 20-30 रुपये की रेंज में उपलब्ध है।

अखंड सौभाग्य के लिए सुहागिनें कल करेंगी करवा चौथ का व्रत

करवा चौथ का व्रत सुहागिन महिला अपने पति की लंबी उम्र के लिए रखती हैं। महिलाएं करवा चौथ के दिन कठिन उपवास रखती है और चांद के निकलने तक पानी की एक बूंद भी ग्रहण नहीं करती हैं। दिनभर व्रत पर रहने के बाद रात में चौथ का चांद देखने के बाद चलनी में पति का चेहरा कर ही महिलाएं व्रत का पारण करती हैं। पंडित राजेंद्र पांडेय ने सोमवार को बताया कि पंचांग के अनुसार एक नवम्बर को करवा चौथ मनाया जाएगा। उन्होंने बताया कि करवाचौथ एक सांध्य ब्यापनी व्रत है। जिस दिन सांध्य को चौथ पड़ेगा, उसी भी दिन यह व्रत होगा। ऋषिकेश पंचांग के चंद्रदर्शन रात 8 बजे है। इसलिए 9.30 बजे रात तक चंद्रमा का पूजन और अर्घ्य कार्यक्रम किया जाएगा। कुछ जगहों पर पति-पत्नी एक साथ मिलकर व्रत करते हैं और साथ मिलकर व्रत तोड़ते हैं।

चांडिल डैम के 84 मौजा के विस्थापितों का टूटा धैर्य, अनशन करने पहुंचे राजभवन

PHOTON NEWS RANCHI : अपनी 10 सूत्री मांगों को लेकर चांडिल डैम के 84 मौजा के विस्थापितों का धैर्ट टूटता जा रहा है। अखिल झारखंड विस्थापित अधिकार मंच के तत्वावधान में वे लोग आमरण अनशन करने फिर राजभवन पहुंचे हैं। सोमवार को सभी चांडिल से नामकुम रेलवे स्टेशन पहुंचे। वहां से राजभवन तक अधिकार पदयात्रा निकाली। विस्थापितों द्वारा जाकिर हुसैन पार्क के पास अनिश्चितकालीन आमरण अनशन करने का निर्णय लिया गया है। बता दें कि 17 अक्टूबर को इन्होंने राजभवन को ज्ञापन सौंपा था। इससे पहले गत 3 अक्टूबर को चांडिल से पदयात्रा करते हुए ये लोग राजभवन पहुंचे थे। एक दिवसीय धरना-प्रदर्शन के दौरान राजभवन द्वारा कहा गया था कि चार दिन के उपरांत राज्यपाल विस्थापितों की समस्या सुनेंगे।

अनशन करने पदयात्रा कर जाते चांडिल डैम के 84 मौजा के विस्थापित।

परंतु 28 दिन बीत जाने के बाद भी कोई सूचना नहीं मिलने पर ये विस्थापित फिर राजभवन पहुंचे हैं। मंच के अध्यक्ष राकेश रंजन महतो ने कहा कि चांडिल डैम के 84 मौजा के 116 गांवों के विस्थापित 16 जून 2023 से चांडिल डैम स्थित पुराना अधीक्षक कार्यालय परिसर में 122 दिनों से अधिक दिनों तक अनिश्चितकालीन धरना पर बैठे थे। परंतु अभी तक विस्थापितों की मांगों को लेकर विभाग एवं सरकार द्वारा कोई सकारात्मक पहल नहीं की गयी है।

सिविल कोर्ट के वकील का लेटर वायरल, लिखा

लोग टकला कह चिढ़ाते हैं, हेयर ट्रांसप्लांट के लिए ASSOCIATION दे डेढ़ लाख

PHOTON NEWS RANCHI : वकीलों के व्हाट्सएप ग्रुप में एक पत्र वायरल हुआ है, जिसकी काफी चर्चा हो रही है। दरअसल धनबाद सिविल कोर्ट के अधिवक्ता आतिश कुमार के लेटर पैड से जारी एक पत्र में मेडिकल सुविधा के लिए डेढ़ लाख रुपये देने की मांग जिला बार एसोसिएशन से की गई है। पत्र में कहा गया है, अधिवक्ता आतिश कुमार पिछले दो टर्म से बार चुनाव लड़ रहे हैं, लेकिन उन्हें दोनों बार हार मिली है। जिसके कारण वह

तनाव में रहते हैं और उसी वजह से उनके बाल झड़ने लगे हैं। धनबाद सिविल कोर्ट के अधिवक्ता उन्हें गंजा और टकला कहकर चिढ़ाते हैं, इसलिए वह अपने सर पर बालों का प्रत्यारोपण करवाना चाहते हैं। जब धनबाद सिविल कोर्ट के अधिवक्ता आतिश कुमार से पत्र के बारे में लगातार संवाददाता ने जानकारी ली, तो उन्होंने बताया कि बालों के प्रत्यारोपण के लिए उन्होंने बार एसोसिएशन को ना तो पत्र लिखा है और ना ही पैसे ही मांगे हैं। कहा कि उनके प्रतिद्वंदी ललन गुप्ता ने उनके साइन और पैड का इस्तेमाल कर यह पत्र लिखा है और उसे वायरल भी कर दिया है। अधिवक्ता ललन गुप्ता धनबाद बार एसोसिएशन के पदाधिकारी हैं।

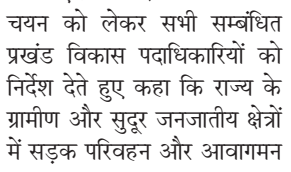

बेतला नेशनल पार्क की सबसे उम्रदराज हथिनी जूही है शुभंकर

एशियन महिला हॉकी चैंपियनशिप के शुभंकर 'जूही' का बढ़ा क्रेज

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड महिला एशियन चैंपियंस ट्रॉफी का हॉकी प्रेमियों में जबरदस्त क्रेज है। मैच की दीवानगी के साथ-साथ इस हॉकी चैंपियनशिप के शुभंकर की दीवानगी भी इन दिनों बढ़ी हुई है। झारखंड महिला एशियन चैंपियंस ट्रॉफी का शुभंकर बेतला नेशनल पार्क की सबसे उम्र दराज हथिनी 'जूही' को बनाया गया है। पलामू टाइगर रिजर्व नॉर्थ जोन के डिप्टी डायरेक्टर प्रजेश जेना ने बताया कि हथिनी जूही का क्रेज इन दिनों काफी बढ़ गया है। रांची में चल रहे झारखंड एशियन महिला हॉकी चैंपियनशिप 2023 के शुभंकर के तौर पर जूही को ही तय किया गया है। ऐसे में जब से उसका नाम इतने प्रतिष्ठित इंटरनेशनल टूनामेंट से जुड़ा है, खेल प्रेमियों से लेकर आम जन तक, सभी उसके बारे में पूछताछ करने लगे हैं। उसकी खोजबीन करते लोग बेतला पार्क तक पहुंच रहे हैं। हर कोई किसी रूप में पार्क में उसके साथ सेल्फी के लिए उतावला हुआ जा रहा है हालांकि वन विभाग अपने स्तर से उसकी सुरक्षा में मुस्तैद है।

बेतला नेशनल पार्क की सबसे उम्र दराज हथिनी 'जूही'।

13 अक्टूबर को एशियन चैंपियंस ट्रॉफी के शुभंकर का हुआ था अनावरण

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने 13 अक्टूबर को प्रोजेक्ट भवन में झारखंड महिला एशियन चैंपियंस ट्रॉफी रांची 2023 के शुभंकर का अनावरण किया था। जूही नाम का शुभंकर बेतला नेशनल पार्क की लोकप्रिय हथिनी से प्रेरित है। इस अवसर पर सीएम ने कहा था कि चूंकि झारखंड महिला एशियन चैंपियंस ट्रॉफी रांची 2023 के प्रतिष्ठित आयोजन के लिए आधिकारिक मैस्कॉट जूही को पेश करते हुए सम्मानित महसूस कर रहा हूं। शुभंकर हाथी जूही की प्रेरणादायक कहानी है, जो सुंदर बेतला राष्ट्रीय उद्यान का पर्याय बन गई है। हजारों पर्यटकों को ले जाने के अलावा जूही ने दशकों तक जंगल में मानव जाति के रक्षक के रूप में भी काम किया। एक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त किया। यह हमारे समाज के लोगों में मानव मूल्यों को विकसित करने और हमारे झारखंड राज्य से जुड़े प्रिय वन्य जीवन के बारे में दुनिया भर के हॉकी सितारों के बीच जागरूकता पैदा करने का एक शानदार तरीका है।

डीसी ने की सीएम गाड़ी योजना की समीक्षा, दिए कई निर्देश

PHOTON NEWS RANCHI : रांची के उपायुक्त राहुल कुमार सिन्हा ने सोमवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक की। बैठक में राज्य सरकार की महत्वाकांक्षी योजना मुख्यमंत्री गाड़ी योजनाइ की समीक्षा की गयी। उपायुक्त ने मुख्यमंत्री ग्राम गाड़ी योजना 2022 के कार्यान्वयन के लिए ग्रामीण क्षेत्रों के मार्गो का चयन को लेकर सभी सम्बंधित प्रखंड विकास पदाधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि राज्य के ग्रामीण और सुदूर जनजातीय क्षेत्रों में सड़क परिवहन और आवागमन व्यवस्था को बेहतर बनाने पर सरकार का विशेष जोर है। इस कड़ी में ग्रामीण क्षेत्रों को प्रखंड , अनुमंडल और जिला मुख्यालय से जोड़ने के लिए मुख्यमंत्री ग्राम गाड़ी योजना शुरू किया जाना है, ताकि, दूर दराज के गांव में रहने वाले लोगों को सुलभ परिवहन व्यवस्था उपलब्ध हो सके। इसके लिए अस्पताल, विद्यालय, महाविद्यालय, साप्ताहिक हाट , स्थानीय बाजार और रेलवे स्टेशन, ग्रामीण क्षेत्र एवं सार्वजनिक स्थलों को ध्यान में रखकर रूट बनाने का को कहा गया।

BRIEF NEWS

सिविल टाउनशिप में प्रकाश उत्सव मना

ROURKELA : सिविल टाउनशिप गुरुद्वारा में श्री श्री गुरु रामदास महाराज के प्रकाश उत्सव मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर श्रम मंत्री शारदा प्रसाद नायक उपस्थित थे। उन्होंने श्रद्धालुओं के बीच लंगर बांटा। इस दौरान उन्होंने कीर्तन सुना तथा सभी लोगों को प्रकाश उत्सव की बधाई दी।

श्री नवरात्रि उत्सव समिति ने शरद पूर्णिमा उत्सव मनाया

ROURKELA : श्री नवरात्रि उत्सव सेवा समिति द्वारा गुजराती सनातन समाज राउरकेला में शरद पूर्णिमा उत्सव का आयोजन किया गया। ओडिशा सरकार के श्रम मंत्री सारदा प्रसाद नायक समारोह में शामिल हुए। राउरकेला गुजराती समाज के सदस्य ने भी गरबा और डांडिया के साथ डिस्को और कई अन्य खेलों का आनंद लिया। इस दौरान नवरात्रि उत्सव सेवा समिति के सदस्य राजेश भाई जोशी, भूपेश जोशी, मनोज जोशी, हरीश टौंक, जोतीश जोशी, दिनेश पटेल, जितेश ठक्कर, अमित अडाडिया, जयेश अडाडिया, अतुल कक्कड़, धवल जोशी, उमंग जोशी, किशोर टंक, सुरेश व्यास अहम भूमिका रही।

टेंसा से राउरकेला तक परिवहन किराया तय करने की मांग

ROURKELA : राउरकेला माइनिंग एरिया ट्रक और टिपर ओनर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष दिलीप मोहंती के नेतृत्व में संगठन के सदस्यों ने राउरकेला एसपी मित्र भानु से मुलाकात की। टेंसा से राउरकेला तक परिवहन किराया की एक दर तय करने की मांग की है। एसपी ने जल्द ही समस्या का समाधान कराने का वादा किया है।

मारवाड़ी युवा मंच ने हॉकी इंडिया के चैयरमैन दिलीप तिर्की से की मुलाकात

ROURKELA : मारवाड़ी युवा मंच राउरकेला सिटी शाखा द्वारा आयोजित होने वाले कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण शिविर में पदमश्री हॉकी इंडिया के चैयरमैन दिलीप तिर्की को अतिथि के रूप में आने का आमंत्रण देने के लिए संगठन सदस्यों ने उनसे मुलाकात की। उन्होंने इस कार्यक्रम की सराहना की और अगर दिल्ली जाने का कार्यक्रम रद्द हुआ तो शिविर में आने का आश्वासन दिया। इस क्षेत्र में मारवाड़ी युवा मंच द्वारा इस नेक काम करने के लिए आभार प्रकट किया।

ड्यूटी का घंटा बढ़ाए जाने पर लोको पायलटों ने स्टेशन पर किया प्रदर्शन

JAMSHEDPUR : रेलवे सेफ्टी नियम के खिलाफ ड्यूटी का घंटा बढ़ाने से आक्रोशित लोको पायलटों ने सोमवार को टाटानगर स्टेशन परिसर स्थित गार्ड एवं क्रू लॉबी के बाहर जमकर प्रदर्शन किया। लोको पायलट ड्यूटी का घंटा बढ़ाने का विरोध कर रहे थे। ऑल इंडिया लोको रनिंग स्टाफ एसोसिएशन ने बताया कि रेलवे दिनों दिन मनमानी कर रही है। ड्यूटी समय में बदलाव से मालगाड़ियों और एक्सप्रेस ट्रेनों में ड्यूटी करने वाले लोको पायलटों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। ओवरटाइम व नाइट ड्यूटी सभी तरह के आदेश में विरोधाभास है। रेलवे को तत्काल व्यवस्था में सुधार करनी चाहिए। मालूम हो की रेल चक्रधरपुर मंडल रेल मुख्यालय से कुछ दिनों पूर्व रनिंग कर्मचारियों के लिए नया गाइडलाइन जारी हुआ था, जिसको लेकर लोको पायलटों में आक्रोश है।

बिसरा में ट्रेनों के ठहराव की मांग को लेकर 8.45 घंटा हावड़ा-मुंबई मुख्य रेलमार्ग को ग्रामीणों ने किया जाम

टाटानगर-इतवारी एक्सप्रेस समेत 3 ट्रेनें रद्द, आधा दर्जन ट्रेनों का रूट डायवर्ट

PHOTON NEWS ROURKELA : चक्रधरपुर-राउरकेला स्टेशन के बीच बिसरा में स्थानीय ग्रामीणों के द्वारा यात्री ट्रेनो के ठहराव की मांग को लेकर सोमवार सुबह से हावड़ा-मुंबई रेलमार्ग को जाम कर दिया। सुबह 6.45 बजे से ही ग्रामीणों ने नारेबाजी करते हुए हावड़ा-मुंबई रेलमार्ग पर बैठ गए। इससे अप-डाउन दोनो ओर से रेल का परिचालन ठप हो गया। रेल चक्का जाम से 3 ट्रेनों को रेलवे ने रद्द कर दिया। वहीं आधा दर्जन ट्रेनों को डायवर्ट रूट से चलाया गया। दोपहर 3.30 बजे रेल चक्का जाम समाप्त हुआ, इसके बाद से परिचालन सामान्य हो गया।

धरने पर बैठे ग्रामीण। ● फोटोन न्यूज

सुबह 9 बजे रेलवे ने टाटानगर से चलने वाली ट्रेन नंबर-18109 टाटा-इतवारी एक्सप्रेस को रद्द करने की घोषणा की। इसके साथ ही ट्रेन नंबर 08107/08108 चक्रधरपुर-राउरकेला चक्रधरपुर स्पेशल के साथ ही ट्रेन नंबर-08161/08164 चक्रधरपुर-राउरकेला स्पेशल को रद्द कर दिया। ट्रेनों के अचानक रद्द होने से यात्री परेशान रहे।

कोरोना से पहले इन ट्रेनों का होता था स्टॉपेज : कोरोना महामारी से पहले बिसरा रेलवे स्टेशन पर उत्कल एक्सप्रेस, समलेस्वरी एक्सप्रेस, इस्पात एक्सप्रेस, तपस्विनी एक्सप्रेस, बोकारो-अलेपी एक्सप्रेस जैसी यात्री ट्रेनों का ठहराव होता था। कोरोना संक्रमण फैलने पर इन ट्रेनों को बंद कर दिया गया था। यह स्थिति दो साल से अधिक समय से बनी हुई है। इसके लिए बिसरा के लोगों ने विभिन्न स्तरों पर आवेदन कर अपनी मांगों को रखा। असफल होने के बाद रेल रोकने का कदम उठाया गया है।

एक माह पूर्व ही की थी रेल रोको की घोषणा : बिसरा एक्शन कमेटी ने रेल रोको की घोषणा एक माह पहले ही कर दी थी। हालांकि शनिवार को रेलवे विभाग के अधिकारियों के साथ इस मुद्दे को लेकर वार्ता हुई थी। वार्ता विफल होने के बाद सोमवार से रेल रोको का निर्णय लिया गया। मुख्य आंदोलन स्थल पर बिसरा पब्लिक एक्शन कमेटी के अध्यक्ष प्रदीप राउतराय, बिसरा सरपंच सूरज नायक, सीटू के सचिव सुरेंद्र दास, पूर्व विधायक जॉर्ज तिर्की समेत सैकड़ों लोग ट्रेन लाइन पर मौजूद हैं।

बाजार बंद कर व्यापारी भी आंदोलन में हुए शामिल : बिसरा बाजार बंद कर बिसरा के व्यापारी संगठन भी आंदोलन में शामिल हो गए हैं रेल रोको के कारण सुबह चलने वाली ट्रेनें प्रभावित हुई हैं। पूर्व विधायक जार्ज तिर्की और बिसरा एक्शन कमिटी की ओर से सोमवार से अनिश्चित काल के लिए रेल रोको आंदोलन शुरू किया गया है।

जिले का सबसे पुराना स्टेशन है बिसरा : गौरतलब है कि बिसरा रेलवे स्टेशन जिले का सबसे पुराना रेलवे स्टेशन है। यहां से चूना पत्थर को उडुसु अंचल से केंद्र सरकार के विभिन्न औद्योगिक इकाइयों तक परिवहन किया जाता था। यह क्षेत्र धीरे-धीरे एक बड़ा व्यावसायिक केंद्र बन गया है। इस कारण भी एक्सप्रेस ट्रेनों का ठहराव बंद करने का विरोध किया जा रहा है।

डायवर्ट कर चलायी गयी ट्रेनें

- ट्रेन नंबर 12262 हावड़ा-सीएमएसटी दुरंतो एक्सप्रेस को डायवर्ट कर चलाया गया। ट्रेन को टाटा-चांडिल-मुरी-हटिया-राउरकेला होकर चलाया गया।
- ट्रेन नंबर 13288 राजेन्द्रनगर -दुर्ग साउथबिहार एक्सप्रेस को टाटा-चांडिल-मुरी-हटिया-राउरकेला होकर चलाया गया।
- ट्रेन नंबर 20818 नईदिल्ली-भूवनेश्वर राजधानी एक्सप्रेस चांडिल-पुरुलिया-राउरकेला होकर चलाया गया।
- ट्रेन नंबर 12859 गीतांजलि एक्सप्रेस को राउरकेला-हटिया-मुरी-चांडिल होकर चलाया गया।
- ट्रेन नंबर -12833 अहमदाबाद-हावड़ा एक्सप्रेस को राउरकेला-मुरी-पुरूलिया-चांडिल-टाटा होकर चलाया गया।

सूरजमल जैन डीएवी पब्लिक स्कूल में दो दिवसीय एक्सपो शुरू

हमें तकनीक में निरंतर हो रहे बदलावों का सकारात्मक उपयोग करना चाहिए : एसपी

PHOTON NEWS CHAIBASA : स्थानीय सूरजमल जैन डीएवी पब्लिक स्कूल में देश के महान वैज्ञानिक, पद्मभूषण डॉक्टर होमी जहांगीर भाभा की जयंती के अवसर पर 'क्रिएटिव सोशियो साइंटिफिक एक्सपो' का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के तौर पर पुलिस अधीक्षक आशुतोष शेखर व बतौर सम्मानित अतिथि उनकी पत्नी डॉक्टर प्रियंका सिंह उपस्थित थीं।

फीता काटकर कार्यक्रम का उद्घाटन करते एसपी आशुतोष शेखर व अन्य। ● फोटोन न्यूज

पुलिस अधीक्षक आशुतोष शेखर ने कहा कि हमें तकनीक में निरंतर हो रहे बदलावों का सकारात्मक उपयोग करना चाहिए। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए विभिन्न संस्थाओं में शैक्षिक भ्रमण पर भी उन्होंने जोर दिया। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार आखिरी पायदान पर खड़े व्यक्ति तक विकास योजनाओं को पहुंचने के लिए प्रयासरत है।

प्राचार्या रेखा कुमारी ने विविध विषयों में प्रदर्शनी की उपयोगिता पर अपने विचार व्यक्त किए। पद्मभूषण डॉक्टर होमी जहांगीर भाभा की उपलब्धियों पर छात्रा राय बनर्जी ने विचार व्यक्त किए। शिक्षिका मनीषा सिन्हा ने महान वैज्ञानिक के जीवन की उपलब्धियां पर प्रकाश डाला। कक्षा सातवीं की छात्राओं द्वारा पारंपरिक नृत्य, विज्ञान गीत व रंगारंग नृत्य प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर प्रिंसिपल डीएवी नोवामुण्डी पीके भुइयां, प्रिंसिपल डीएवी चिड़िया एसके झा, प्रिंसिपल डीएवी झींकपानी एसके पाठक व प्रिंसिपल जेएनवी जे करपग माला उपस्थित थीं। मौके पर एलएमसी सदस्य अभिषेक दोदराजका सहित काफी तादाद में अभिभावक उपस्थित थे। निर्णायक मंडली के सदस्यों में मानस रंजन मिश्रा, विश्वजीत कुमार सतपथी, उत्तम कुमार घोष, संजय कुमार गोराई, अशोक कुमार कुंटिया, दीप्ति सिन्हा, प्रसन्न कुमार आचार्या, विनोद कुमार ओझा व विश्वनाथ लकड़ा उपस्थित थे। मंच संचालन शिक्षक एसबी सिंह ने किया।

राउरकेला और बालासोर में सतर्कता प्रभाग कार्यालय का हुआ उद्घाटन

ईमानदारी और निष्ठा लागू करना हमारी राज्य नीति के मुख्य स्तंभों में से एक : प्रदीप कुमार जेना

PHOTON NEWS BHUBANESHWAR : मुख्यमंत्री नवीन पटनायक द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बालासोर और राउरकेला में कंप्यूटर आधारित जांच और अभियोजन प्रबंधन प्रणाली और सतर्कता प्रभाग कार्यालय के नए भवनों का उद्घाटन सोमवार को किया गया। फाइव टी एवं नवीन ओडिशा के अध्यक्ष वीके पांडियन उपस्थित थे।

ओडिशा के मुख्य सचिव प्रदीप कुमार जेना ने अपने संबोधन में कहा कि सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी और निष्ठा लागू करना पहले से ही हमारी राज्य नीति के मुख्य स्तंभों में से एक है। उन्होंने कहा, भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई में ओडिशा सबसे आगे रहा है।

मालूम हो कि इस साल अब तक ओडिशा विजिलेंस ने 38 ग्रुप-ए अधिकारियों और 37 ग्रुप-बी अधिकारियों सहित 364 व्यक्तियों के खिलाफ 201 मामले दर्ज किए हैं। 42 ग्रुप-ए और 31 ग्रुप-बी अधिकारियों सहित 486 व्यक्तियों के खिलाफ 198 मामलों में आरोप पत्र दायर किए गए हैं। 115 आरोपी व्यक्तियों के खिलाफ 87 मामले सजा में समाप्त हो गए हैं। सतर्कता मामलों में दोषसिद्धि के बाद 27 लोक सेवकों को सेवा से बर्खास्त कर दिया गया है और 14 सेवानिवृत्त लोक सेवकों की पेंशन रोक दी गई है।

कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य सचिव व अन्य। ● फोटोन न्यूज

राज्य स्तरीय कला उत्सव में पूर्वी सिंहभूम के छात्रों का शानदार प्रदर्शन, चार को मिला प्रथम स्थान

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : राज्य स्तरीय कला उत्सव 2023 का आयोजन सोमवार को रांची में आयोजित किया गया। इसमें पूर्वी सिंहभूम जिले के विद्यार्थियों का शानदार प्रदर्शन रहा है। यहां कुल चार विद्यार्थियों को अलग अलग प्रतियोगिताओं में पहला स्थान मिला है जबकि एक को दूसरा स्थान मिला। विद्यार्थियों के प्रदर्शन पर जिला शिक्षा पदाधिकारी कार्यालय ने सभी बधाई देते हुए उन्हें इसे जिले के लिए गौरव का क्षण बताया है।

डीईओ निर्मला कुमारी बरेलिया ने कहा कि एक जिले के चार विद्यार्थियों का चार अलग अलग प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान पर आना एक बड़ी उपलब्धि है। वहीं विजेता सभी विद्यार्थियों को सर्टिफिकेट प्रदर्शन कर सम्मानित किया गया।

प्रमाण-पत्र व मेडल के साथ विजयी प्रतिभागी। ● फोटोन न्यूज

शास्त्रीय संगीत में कुशल दिव्यम, जूस्को स्कूल साउथ पार्क को प्रथम स्थान, दृष्य कला में स्वपन मारडी, केजीवीपी पोटका को मिला प्रथम स्थान, नाटक एकल अभिनय में धनराज विश्वकर्मा, एबीएमपी राहरगोड़ा को प्रथम स्थान तथा लोक नृत्य में बिकाश महाली, अपग्रेड प्लस टू उवि दीघी भुला को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। दुसरी ओर स्थानीय खेल खिलौने में श्रृष्टी पांडा, जेबीएवी गुडाबांधा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया है।

उपायुक्त ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से की समीक्षात्मक बैठक, दिए कई दिशा-निर्देश

PHOTON NEWS CHAIBASA : पश्चिमी सिंहभूम के उपायुक्त अनन्य मित्तल की अध्यक्षता में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से अबुआ वीर दिशोम अभियान-2023 के तहत वन अधिकार समिति का गठन/पुनर्गठन एवं मोबाइल एप्लीकेशन के क्रियान्वयन और जिला अंतर्गत बीएसएनएल/एयरटेल तहत मोबाइल टावर लगाए जाने हेतु चल रहे कार्यों की समीक्षा की गई। बैठक में सर्वप्रथम वन अधिकार समिति का गठन/पुनर्गठन हेतु आयोजित ग्राम सभा की कार्रवाई के संदर्भ में अंचल वार समीक्षा की गई। तदुपरांत सभी अंचल

उपायुक्त अनन्य मित्तल।

अधिकारी को समिति का गठन/पुनर्गठन से संबंधित ग्राम सभा की कार्रवाई पूर्ण कराने व बैठक की रंगीन फोटो के साथ प्रतिवेदन जिला कार्यालय को उपलब्ध करवाने का निर्देश दिया । इसके अलावा अबुआ वीर दिशोम अभियान के लिए ग्राम सभा/एफआरसी को प्रक्रियागत सहयोग हेतु मोबाइल एप्लीकेशन संचालन के लिए ग्राउंड कैडर वीर बंधु के तौर पर दो योग्य कर्मियों का चयन तथा अनुमंडल/प्रखंड स्तर पर एफआरसी सेल का गठन तत्काल करते हुए प्रतिवेदन अग्रसारित करने का निर्देश दिया।

वर्चुअल बैठक के दौरान उपायुक्त ने जिला अंतर्गत एयरटेल व बीएसएनएल द्वारा लगाए जा रहे मोबाइल टावर के निर्माण से संबंधित अद्यतन प्रतिवेदन की भी समीक्षा की। इस क्रम में उपायुक्त के ने संबंधित अंचल अधिकारी को अमीन संग मिलकर लंबित सर्वे व लैंड रिपोर्ट के कार्यों को बेहतर समन्वय स्थापित कर तत्काल पूरा कराने का निर्देश दिया। साथ ही नेटवर्क प्रदाता कंपनियों के प्रतिनिधियों को एनओसी प्राप्त भूमि पर निर्माण कार्य तेजी से प्रारंभ करने तथा वैसे निर्माण कार्य जो अंतिम चरण में है, उसे यथाशीघ्र पूरा करने का निर्देश दिया। उन्होंने बताया कि जिला अंतर्गत मोबाइल कनेक्टिविटी को बेहतर बनाने के लिए जिला प्रशासन लगातार प्रयासरत है। आने वाले दिनों में तकरीबन 250 मोबाइल टावर का निर्माण कर क्षेत्र में नेटवर्क की स्थिति को सुधारने का कार्य सुनिश्चित किया जा रहा है।

पश्चिमी सिंहभूम जिला क्रिकेट संघ के तत्वावधान में आयोजित एसआर रूंगटा बी डिविजन क्रिकेट लीग

लक्ष्मण गिलुआ क्रिकेट क्लब को हराकर एसआर रुंगटा ग्रुप ने क्वार्टर फाईनल में बनाई जगह

PHOTON NEWS CHAIBASA : पश्चिमी सिंहभूम जिला क्रिकेट संघ के तत्वावधान में चल रहे एसआर रूंगटा बी डिविजन लीग के अंतर्गत सोमवार को खेले गए ग्रुप डी के एक महत्वपूर्ण मुकाबले में एसआर रुंगटा ग्रुप की टीम ने चक्रधरपुर के लक्ष्मण गिलुआ क्रिकेट क्लब को एक नजदीकी मुकाबले में 21 रनों से हरा कर क्वार्टर फाईनल में अपना स्थान पक्का कर लिया है। इस तरह एसआर रूंगटा ग्रुप की टीम जिला क्रिकेट लीग में क्वार्टर फाईनल में पहूँचने वाली पहली टीम बन गई है।

बिरसा मुंडा क्रिकेट स्टेडियम मैदान पर खेले गए इस मैच में टॉस लक्ष्मण गिलुआ क्रिकेट क्लब के कप्तान ने जीता तथा विपक्षी टीम को पहले बल्लेबाजी के लिए

एसआर रुंगटा ग्रुप के खिलाड़ी। ● फोटोन न्यूज

आमंत्रित किया। पहले बल्लेबाजी करते हुए एसआर रूंगटा ग्रुप ने निर्धारित तीस ओवर में आठ विकेट खोकर 212 रन बनाए। कप्तान अभिषेक कच्छप ने एक बार फिर शानदार बल्लेबाजी करते हुए सात चौकों एवं छः छक्कों की सहायता से 82 रनों की बेहतरीन पारी खेली और अंत तक आउट नहीं हुआ। विजय रोहित ने भी आठ चौकों एवं एक छक्का की मदद से 59 रनों की अर्धशतकीय पारी खेली। अन्य बल्लेबाजों में राहुल महतो ने 25 तथा सुरेंद्र सिंह ने 18 रन बनाए। लक्ष्मण गिलुआ क्रिकेट क्लब की ओर से पियुष कुमार ने 38 रन देकर तीन विकेट तथा अंजनी कुमार यादव ने 47 रन देकर दो विकेट हासिल किए। कप्तान विवेक चौरसिया, समरेश महतो एवं अजय प्रधान को एक-एक विकेट मिला।

जीत के लिए निर्धारित तीस ओवर में 213 रनों का पीछा करने उतरी लक्ष्मण गिलुआ क्रिकेट क्लब की टीम ने भी भरपूर प्रयास किया पर पूरी टीम 28.4 ओवर में 191 रन बनाकर आल आउट हो गई। इस टीम की ओर से दसवें नंबर पर बल्लेबाजी करने आए रोहित उरांव ने चार चौकों एवं चार छक्कों की सहायता से मात्र 22 गेंदों पर 51 रन ठोक कर मैच को रोमांचक मोड़ पर पहूँचा दिया था पर उसके आउट होते ही टीम का प्रतिरोध समाप्त हो गया। लक्ष्मण गिलुआ क्रिकेट क्लब की ओर से अन्य बल्लेबाजों में सौरभ गुप्ता ने 28, अभिमन्यु कुमार ने 26, अंजनी कुमार यादव ने 18 तथा अजय प्रधान ने 13 रन बनाए पर उनका यह प्रयास नाकाफी साबित हुआ।

एसआर रुंगटा ग्रुप की ओर से गेंदबाजी करते हुए सलालुद्दीन युसुफ ने 30 रन देकर तीन विकेट तथा सुरेंद्र सिंह ने 41 रन देकर तीन विकेट हासिल किए। अभिषेक कुमार महतो को दो तथा अमित कुमार सिंह को एक सफलता हाथ लगी।

ग्रुप डी से कौन सी दूसरी टीम क्वार्टर फाईनल के लिए क्वालीफाई करेगी इसका निर्णय 16 नबंबर को होगा। जब चाईबासा क्रिकेट क्लब की टीम मेघाहातुबुरू क्रिकेट क्लब से टकराएगी। इन दोनों टीमों के बराबर-बराबर अंक हैं और इनके बीच होनेवाले मैच की विजेता टीम ही क्वार्टर फाईनल के लिए क्वालीफाई करेगी।

झामुमो का प्रखंड स्तरीय प्रशिक्षण शिविर सह सदस्यता अभियान 5 को

बैठक में शामिल विधायक दीपक बिरुवा व अन्य कार्यकर्ता। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS CHAIBASA : सदर विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत झींकपानी प्रखंड के चांदीपी फुटबाल मैदान में 5 नवंबर को झारखंड मुक्ति मोर्चा पार्टी का प्रखंड स्तरीय प्रशिक्षण शिविर सह सदस्यता अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। झामुमो प्रखंड समिति ने इसकी तैयारी शुरू कर दी है। कार्यक्रम का सफल आयोजन के लिए सोमवार को झींकपानी स्थित झामुमो कार्यालय में माननीय विधायक श्री दीपक बिरुवा की उपस्थिति में तैयारी समिति की बैठक हुई।

बैठक में विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई। इसके अलावा अन्य कार्यक्रमों के बारे में चर्चा करते हुए कार्यक्रम का सफल आयोजन के लिए कार्यकताओं को विभिन्न जिम्मेदारी दी गई। बैठक में झामुमो प्रखंड अध्यक्ष सोंगा बुडीउली, सचिव शिशिर बुडीउली, हरिलाल करजी, प्रखंड प्रमुख प्रदीप तामसोय, मुखिया चरण मुंडा, पूर्व मुखिया मेंजारी मुंडा, संजीव गोप, शिवा चौधरी, सुशील बुडीउली, तूती सरदार, हरविंदर, कुसविंदर, पारु हेस्सा, सुंदर गोप, सोमनाथ कुंकल समेत अन्य उपस्थित थे।

बीजेपी सांसद पर भड़के स्वामी रंगनाथाचार्य

तुमलोग हिंदुओं को बेचकर राज कर रहे हो: संत पर हुआ था हमला, मिलने नहीं आने पर हुए नाराज

गया । स्वामी रंगनाथाचार्य बीजेपी सांसद सुशील सिंह से नाराज दिखें। उन्होंने कहा कि तुमलोग हिंदुओं को बेचकर राज कर रहे हो। तुम हिंदुत्व के रक्षक नहीं भक्षक हो। आज किसलिए आए हो, पब्लिसिटी के लिए आए हो ना। उन्होंने सांसद सुशील सिंह को इतना तक कह दिया कि तुम लोग हिन्दू के नाम पर कलंक हो। तुम नेता बनते हो, तुम्हारी नेतागिरी ही खत्म हो जाएगी। कभी नीतीश (जदयू) की गोद में तो कभी मोदी की गोद में बैठ जाते हो। ये राजतंत्र नहीं है, प्रजातंत्र है। तुम लोग अघोषित राजतंत्र चला रहे हो। इस बातचीत का वीडियो भी सामने आया है, जिसमें सांसद सुनील सिंह हाथ जोड़े खड़े हैं। वो स्वामी रंगनाथाचार्य को समझाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन संत ने उनकी एक ना सुनी। दरअसल, बीते जुलाई में श्री वैष्णव सिद्ध पीठ नवादा के स्वामी रंगनाथाचार्य पर कुछ लोगों ने हमला कर दिया था। हालांकि इस घटना में संत रंगनाथाचार्य बाल-बाल बच गए, लेकिन औरंगाबाद सांसद सुशील सिंह ने उनसे मुलाकात नहीं की थी, इसलिए स्वामी रंगनाथाचार्य उनसे नाराज थे। बीते 4 माह से जिले के टिकारी के पंचानपुर के रामेश्वर बाग में चतुर्मास महायज्ञ चल रहा था। 29 जून से दिव्य चातुर्मास

व्रतानुष्ठान सह श्री लक्ष्मी नारायण महायज्ञ चल रहा था। इसे कराने श्री वैष्णव सिद्ध पीठ नवादा के स्वामी रंगनाथाचार्य आए हुए थे। यज्ञ के समापन पर बीजेपी सांसद पहुंचे थे। जहां स्वामी रंगनाथाचार्य ने उनपर अपनी भड़ास निकाली। उन्होंने कहा कि तुमलोग हिंदुओं के नाम पर कलंक हो। हिंदू हो तुम, जिसपर सांसद ने कहा कि हैं महाराज। तब संत और भड़क गए और कहने लगे अगर हिन्दू हो तो शिखा तुम्हारी कहां है ? दिखाओ। यह सुन सांसद ने कहा कि हम यहां बहस करने नहीं आए हैं। इस पूरे प्रकरण के दौरान सांसद सुशील सिंह रंगनाथाचार्य के सामने हाथ जोड़े खड़े रहे। इस पूरे मामले का वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है। 29 जून से शुरू हुए यज्ञ के बाद 2 जुलाई को स्वामी रंगनाथाचार्य पर कुछ लोगों ने उस वक्त हमला कर दिया जब वो अपनी कुटिया में सोए हुए थे। इस हमले में वो बुरी तरह जख्मी हुए थे। अपराधियों ने कई राउंड फायरिंग भी की थी। उस वक्त स्वामी रंगनाथाचार्य ने कहा था कि बिहार में साधु-संत सुरक्षित नहीं हैं। रंगनाथाचार्य ने इस मामले में केस भी दर्ज करा रखा है। हमले के बाद सांसद के मुलाकात नहीं करने पर स्वामी रंगनाथ खफा थे। दिव्य चातुर्मास व्रत अनुष्ठान सह श्री लक्ष्मी नारायण महायज्ञ के आचार्य सह पुरोहित रंगनाथाचार्य थे। नवादा के नरहट स्थित वैष्णव आश्रम पीठ के मुख्य पीठाधीश्वर कहे जाते हैं। वो हिंदू धर्म संसद के सदस्य भी हैं।

दो घरों में छापेमारी, 34 किलो डोडा बरामद

गया । रविवार की रात ज़िले के धनगांई थाना के थानाध्यक्ष दीपक कुमार को गुप्त सूचना मिली, सूचना यह मिली की थाना क्षेत्र अंतर्गत दो गांव में लाखों रुपए के मादक पदार्थ डोडा धंधेबाज छुपाकर कर रखे हुए हैं। धनगाईं थानाध्यक्ष दीपक कुमार को इस तरह की सूचना मिलते हीं एसएसपी को अवगत कराया। छापेमारी और कार्रवाई के लिए एसएसपी से मिले निर्देश के बाद एसएसबी बीबी पेसरा के शस्त्र बल तथा धनगांई थाना के पुलिस पदाधिकारी एवं अन्य पुलिसकर्मियों के साथ सबसे पहले कादल गांव पहुंचे तो देखा घर से निकलकर एक युवक पुलिस टीम को देखकर भागने लगा। जिसे पुलिस बलों के द्वारा काफी पीछा किया गया। परंतु अंधेरे एवं जंगल का फायदा उठाते हुए वह भाग निकलने में सफल हो गया। भागे युवक के घर की तलाशी ली गई। तलाशी के क्रम में उसके घर के कमरे से दो अलग-अलग प्लास्टिक के बोरे में 10-10 किलोग्राम का 20 किलो डोडा बरामद हुआ। तब पश्चात धनगांई पुलिस वासुदी गांव पहुंची तो पुलिस वाहन की की आवाज सुनकर घर का दरवाजा खोलकर एक युवक भागने लगा। जिसका पीछा किया गया। परंतु वह भी अंधेरे और जंगल इलाका होने का फायदा उठाकर भागने में सफल हो गया। उसके घर की तलाशी ली गई।तलाशी के क्रम में घर के कमरे से प्लास्टिक के बोरे में 14 किलो डोडा एक प्लास्टिक के थैले में 6 सौ ग्राम गांजा समेत बिछावन के नीचे से एक देसी कट्टा और एक मिसफायर कारतूस 315 बोर के बरामद किए गए। इस संबंध में धनगांई थानाध्यक्ष दीपक कुमार ने बताया बरामद 34 किलो डोडा,गांजा समेत एक देसी पिस्तौल को थाना लाया गया है। इस मामले में संबंध में धनगांई थाने में केस दर्ज किया गया है।

सो रहे होटल संचालक की गोली मारकर हत्या

नालंदा । बीती रात होटल संचालक की गोली मारकर हत्या कर दी गई। मामला भागन बीघा ओपी अंतर्गत मोरा तालाब रेलवे ओवरब्रिज के पास की है। मृतक की पहचान मोरा तालाब निवासी किशोरी सिंह के बेटे सुनील सिंह उर्फ गब्बर सिंह (60) के रूप में किया गया है। सुनील सिंह उर्फ गब्बर सिंह के भाई मदन सिंह भाजपा के पूर्व जिला मंत्री रह चुके हैं। घटना के संबंध में मृतक के विक्रम सिंह ने बताया कि सुनील सिंह अपने होटल राधा फैमली ढाबा में बीती रात सो रहे थे। होटल बंद होने के बाद उनके बगल में वह खुद अपने बेटे के साथ बेड पर ही सो रहे थे। तभी रात करीब 1:00 बजे अपराधियों ने उन्हें गोली मार दी। अचानक

आवाज से उन लोगों की नींद खुली, उनके बेटे को लगा कि टायर फटा है। सुनील सिंह के पास से टप-टप की आवाज आ रही थी। उन्हें लगा पानी गिर रहा है जब पास जाकर देखा तो सिर में गोली लगी थी और खून जमीन पर गिर रहा था। इसके बाद स्थानीय पुलिस और घर वालों को सूचना दी गई। और आनन-फानन में सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया। विक्रम सिंह ने बताया कि होटल के बाहर खड़े ट्रक ड्राइवर ने बताया कि एक चार पहिया गाड़ी आकार होटल पर रुका और उससे दो लोग गाड़ी से बाहर निकले और सुनील सिंह के सिर में गोली मार गाड़ी पर बैठ फरार हो गया। जिस तरह से घटना को अंजाम दिया गया है। उससे साफ से लग रहा है कि सुनियोजित तरीके से प्लानिंग कर हत्या की गई है।हत्या का कारण अभी तक स्पष्ट नहीं हो सका है, पड़ोसी से कुछ विवाद की बातें सामने निकलकर आ रही है, लेकिन परिजन स्पष्ट रूप से कुछ भी बताने से परहेज कर रहे हैं। वहीं भागन विगहा ओपी प्रभारी पप्पू कुमार ने बताया कि होटल संचालक को गोली मारने की सूचना पर पुलिस तत्काल घटनास्थल पर पहुंची और उन्हें इलाज के लिए बिहार शरीफ सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया। शव को कब्जे में लेकर पुलिस पोस्टमार्टम कराने की प्रक्रिया में जुट गई है आवेदन मिलने पर की जाएगी। परिजन कुछ भी स्पष्ट रूप से बताने से परहेज कर रहे हैं। पुलिस सभी बिंदुओ पर जांच कर रही है।

नौकरी के नाम पर लिए पैसे मांगा तो की फायरिंग

वैशाली । सराय थाना क्षेत्र के पौरा मदन सिंह गांव में नौकरी लगाने के नाम पर लिए पैसा मांगने पर बदमाशों ने घर में घुसकर गोली मार दी। हालांकि इस दौरान किसी को गोली नहीं लगी है। सूचना पाकर पुलिस ने कार्रवाई करते हुए ठगी करने वाले और गोली चलाने वाले युवक रामकुमार राय को गिरफ्तार कर लिया है। जिसके पास से पुलिस ने दर्जनों विभिन्न विभाग के मोहर, पांच खोखा, दो जिंदा कारतूस दो बाइक बरामद किया है। रामकुमार नौकरी के नाम पर कई लोगों से ठगी की है। पीड़ित सुजीत कुमार पिता रामबली राय पौडा मदन सिंह निवासी ने बताया कि मुझसे

मेरे गांव के रामकुमार राय पिता जदू राय पौडा मदन सिंह एवं बिट्टू राणा पिता विनोद कुमार राणा शीतल भकुरहर दोनों थाना सराय ने मुझसे करीब एक साल पहले फारेस्ट विभाग में सिपाही के पद पर नौकरी लगाने के नाम पर 2 लाख रुपया ले चुके था।
जब नौकरी लगाने की बात पर हो जायेगा बोल कर टाल मटोल करते रहे। जब रूपया की मांग की तो दो बाइक से चार लोग सवार होकर उसके घर पहुंचे और गाली-गलौज करने लगे। जब गाली-गलौज करने से मना किया तो सभी फायरिंग करने लगे।
गोली की आवाज सुनकर लोगों में अफरा-तफरी मच गई। सराय थानाध्यक्ष मणिभूषण कुमार सिंह ने बताया कि नौकरी दिलाने के नाम पर ठगी करने का मामला सामने आया है। जब नौकरी नहीं मिली तो लोग रूपया की मांग किया था तभी उसके घर चढ़कर गोलीबारी की गई थी। जांच पड़ताल की जा रही है। गिरफ्तार किए गए आरोपी को जेल भेजा जाएगा।

संक्षिप्त डायरी

चलती ट्रेन से गिरकर 4 बच्चों की मां की मौत: पंजाब से पूर्णिया लौट रहा था परिवार

पूर्णिया। दीपावली और छठ पूजा को लेकर परिवार संग घर लौट रही एक महिला की चलती ट्रेन से गिरकर मौत हो गई। महिला ट्रेन के डब्बे के गेट पर खड़ी थी। तभी उसे चक्कर आ गया। इसके बाद महिला का संतुलन बिगड़ा और फिर वह ट्रेन से गिरकर सीधे पहिए के नीचे आ गई। इससे मौके पर ही महिला ने दम तोड़ दिया। महिला अपने चार बच्चे और पति संग पंजाब से वापस अपने गृह जिले पूर्णिया लौट रही थी। मृतका की पहचान मीरगंज नगर पंचायत के पहाड़टोल के वार्ड 11 निवासी संजय मुनि की पत्नी रंजो देवी (45) के रूप में हुई है। महिला की मौत के बाद से उसके घर में मातम पसरा है। घटना की जानकारी देते हुए मृतका के पति संजय मुनि ने बताया कि वे दीपावली और छठ पूजा को लेकर पत्नी और बच्चों के साथ पंजाब से वापस अपने घर पूर्णिया लौट रहे थे। कि तभी उत्तरप्रदेश के देवरिया के समीप उनकी आंख लग गई। इसके बाद उनकी पत्नी वाशरूम के लिए उठी। हालांकि वाशरूम इंगेज होने के कारण वह गेट पर खड़े होकर वाशरूम खाली होने का इंतेजार करने लगी। इसी दौरान उनकी पत्नी को चक्कर आया। जिसके बाद वह अपना संतुलन खो बैठी। जिसके बाद चलती हुई ट्रेन के पहिए के नीचे आने से उसकी मौके पर ही मौत हो गई। घटना उत्तर प्रदेश के देवरिया में हुई। महिला के शव के पोस्टमार्टम के बाद रेलवे पुलिस ने शव को परीजनों के हवाले कर दिया। जिसके बाद मृतका का शव रविवार मीरगंज थाना के पहाड़ टोल गांव पहुंचा। घटना के बाद से महिला के पति, बच्चे और परिवार वालों का रो -रो कर बुरा हाल है। जबकि गांव में शव पहुंचने के बाद से कोहराम मचा हुआ है।

आटा चक्की में घुसा दुर्लभ प्रजाति का सांप

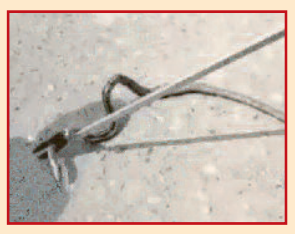

बगहा। वाल्मीकि टाइगर रिजर्व के पास टंकी बाजार स्थित मनोज कुमार के आटा चक्की में कॉपर हेडेड ट्रिंकेट सांप घुस गया। यह दुर्लभ प्रजाति का सांप है। यह सांप बदलते हुए जलवायु के कारण रिहाइशी क्षेत्र में दिखाई दे रहे हैं। सांप निकालने की सूचना जैसे ही वन विभाग को मिली। वन विभाग की टीम ने सांप का रेस्क्यू किया। रेस्क्यू टीम में शामिल मणि भूषण और अमरेश चौधरी ने कहा कि इस सांप को वन सुंदरी भी कहते हैं। क्योंकि देखने में काफी सुंदर दिखता है। इससे पहले दो बार इस सांप को वाल्मीकि टाइगर रिजर्व के आसपास देखा गया है। जिसे रेस्क्यू कर टाइगर रिजर्व में छोड़ दिया गया है। सांप के पास आने पर या जब इसे खतरा महसूस होता है तो यह अपने अगले हिस्से को फूला लेता है और मुंह को धरातल से ऊपर उठाकर फूंकार मारता है। इस तरह सांप अपना गुस्सा दिखाता है। यह सांप कभी भी अपना रंग बदल लेता है। इस सांप में रंग बदलने की कला होती है। यही कला अन्य सांपों से इसे अलग बनाती है। इस सांप का नाम कॉपर हेडेड ट्रिंकेट है। दरअसल, इस सांप का सिर कॉपर के समान चमकता रहता है। यह दुर्लभ प्रजाति का सांप है। इस प्रजाति की खासियत शरीर पर काले रंग की पट्टी होती है, शरीर का रंग लाल-भूरा होता है। सांप का मुंह काफी हद तक कॉपर कलर का होता है। यह आमतौर पर कृन्तकों, पक्षियों, छोटे स्तनधारी, पक्षी, छिपकली और मेंढक को अपना शिकार बनाता है। कई अन्य देशों में इस सांप को दवाई के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

प्रेम प्रसंग में युवक की जमकर पिटाई

बेगूसराय । प्रेम प्रसंग की वजह से लड़की के परिजनों ने लड़के की जमकर पिटाई कर दी, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। युवक का इलाज सदर अस्पताल बेगूसराय में चल रहा है। घटना सिंघौल थाना

क्षेत्र के कैलाशपुर गांव का है। पीड़ित विकेश कुमार की मां ने आरोप लगाते हुए कहा कि कैलाशपुर गांव के ही शंकर तांती से विकेश कुमार की दोस्ती थी और दोस्ती की वजह से विकेश कुमार पासवान का शंकर तांती के घर आना जाना होता था। इसी क्रम में विकेश कुमार और शंकर तांती की बहन के साथ प्रेम संबंध स्थापित हो गया। इसके बाद शंकर तांती और उसके परिजनों के द्वारा विकेश कुमार पर शादी करने का दबाव बनाया जाने लगा। तब विकेश कुमार ने शादीशुदा होने और दो बच्चे के पिता होने की बात बताई। विकेश कुमार की मां ने आरोप लगाया है कि ऐसा सुनते ही शंकर तांती और उसके परिजनों ने विकेश कुमार का अपहरण कर लिया और पटना लेकर चले गए। जब विकेश कुमार की पत्नी ने शंकर तांती पर अपने पति को ढूंढ कर लाने का दबाव बनाया, तब शंकर तांती उसे लेकर पहले अपने घर आया और कमरे में बंद कर उसकी पिटाई की। अगल-बगल के लोगों के द्वारा विकेश कुमार के परिजनों को घटना की जानकारी मिली तब विकेश कुमार के परिजनों ने सिंघौल थाने को इसकी सूचना दी। तब मौके पर पहुंचकर सिंघौल थाने की पुलिस में विकेश कुमार की जान बचाई तथा लड़की और उसके पिता को हिरासत में ले लिया है। गौरतलब है कि विकेश कुमार और आरोपी लड़की पूर्व से ही शादीशुदा है। इस संबंध में सिंघौल थाना अध्यक्ष दीपक कुमार ने बताया है कि प्रेम प्रसंग में युवक की पिटाई का मामला सामने आया है। वहीं इस पिटाई के मामले में दो लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ पुलिस द्वारा की जा रही है।

महिला सिपाही का पति बोला: पहले उसने मुझपर कट्टा ताना, छीना झपटी में पत्नी को लगी गोली

रातभर बॉयफ्रेंड से बात करती, सिंदूर भी नहीं लगाती

पटना । महिला सिपाही हत्याकांड मामले में आरोपी पति गजेंद्र ने रविवार को जहानाबाद के काको थाने में सरेंडर कर दिया। सरेंडर के बाद पटना पुलिस उसे अपने साथ ले गई। पूछताछ में आरोपी गजेंद्र ने बताया कि उसने अपनी पत्नी शोभा की हत्या नहीं की। बल्कि पत्नी ही मेरी हत्या करना चाहती थी। गजेंद्र ने पुलिस के सामने कहा- शोभा ने ही हत्या के उद्देश्य से फोन कर उसे पटना के होटल में बुलाया। होटल में कमरा भी शोभा ने ही बुक कर रखा था। उसका दो साल से धीरज कुमार से अफेयर चल रहा था। जब मैं वहां पहुंचा तो इसी बात को लेकर लड़ाई होने लगी। इसके बाद उसने बैग से कट्टा निकाला और मेरे ऊपर तान दी। इसी दौरान छीना झपटी में उसे गोली लग गई। मैं डर गया था इसी लिए मैं भाग गया। मुझे कुछ नहीं पता कैसे क्या हो गया। बता दें गजेंद्र और शोभा ने 7 साल पहले लव मैरिज की थी। गजेंद्र पेशे से टीचर है और उनकी पत्नी बीएमपी-2 की जवान थी। दशहरा को लेकर उसकी ड्यूटी पटना में थी। गजेंद्र ने बताया कि उसकी पत्नी का धीरज कुमार से अफेयर था। दो साल से वो उससे बात कर रही थी। मुझे इसका पता तब चला जब मैं घर आया और उसके मोबाइल पर गंदे मैसेज देखे तो मेरे होश उड़ गए। 4 माह पहले ही मुझे इस बात की जानकारी हुई। जिससे मैं डिप्रेशन में आ गया था। आरोपी पति ने बताया कि मेरी पत्नी मेरे सामने धीरज से फोन पर बात करती

थी। 17 अक्टूबर को उसने होटल बुक किया और मुझे बुलाया। उस दिन मैं नहीं आ सका। अगले दिन उसने फिर बुलाया। उसने मेरा नंबर भी ब्लॉक कर दिया था। धीरज से उसका बात करने का टाइमिंग फिक्स था। वो उससे 4-4 घंटे बात करती थी। पुलिस ने जब गजेंद्र से पूछा कि होटल में हथियार कहां से आया। इस पर गजेंद्र ने कहा कि मै कट्टा लेकर होटल नहीं पहुंचा था। मेरे कंधे पर मेरी बेटी थी। शोभा के हाथ में बैग था। उसी में वह मुझे मारने के लिए कट्टा लेकर आई थी। आरोपी पति का कहना है-घटना वाले दिन सब कुछ ठीक था। उससे मेरी अच्छे से बातचीत हुई थी। उस दिन वह अबीर लेकर भी आई थी। जबकि पिछले तीन महीने से वो सिंदूर नहीं लगा रही थी। मैं जब पूछता था सिंदूर क्यों नहीं लगाती इस पर वह बोलती थी- मेरी मर्जी। घटना वाले

दिन मैंने उसे अबीर लगाया तो वो गुस्सा गई। मुझसे उलझ गई। मैं कमजोर हूं सेहत से। मेरा इलाज चल रहा है। उसने मुझे दो थप्पड़ भी मार दिया। जवाब में मैने भी एक थप्पड़ मार दिया। उसके बाद उसने दरवाजा बंद कर दिया। बैग से कट्टा से निकाल कर मेरे ऊपर तान दिया। मुझे पटक भी दिया। तभी मैंने उसका हाथ पकड़ लिया और छीना झपटी में उसे गोली लग गई। मैंने उसकी हत्या नहीं की। मैं डर गया इसलिए वहां से भाग गया। मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा था। क्या करूं मैंने तो उसे देखा भी नहीं उसके बाद, बस वहां से भाग गया। आरोपी पति ने बताया कि 7 साल पहले उसकी शोभा से लव मैरिज हुई थी। हम दोनों एक दूसरे से बहुत प्यार करते थे। हमने उसे पढ़ने के लिए पटना भेजा, तभी यह सब हुआ। ये सब धीरज के कारण ही हुआ है। गजेंद्र ने कहा कि शोभा चाहती थी कि वह धीरज से बात करना बंद कर दे, लेकिन धीरज अपने मां-बाप को धमकी देता था कि अगर शोभा बात नहीं करेगी तो वह अपनी जान दे देगा। इसी डर से उसके पैरेंट्स शोभा को कहते थे कि उसे मरने से बचा लो। तब शोभा का कहना था कि कैसे उसे मरने के लिए छोड़ दूं। फिर दोनों रोज बात करने लगे। गजेंद्र के मुताबिक,मेरे पिता जी का इलाज चल रहा है। उनका दवा लेने दिल्ली गए थे। वहां से आकर मैं खुद सरेंडर कर रहा हूं। जो भी हुआ किसी की गलती नहीं। मेरे सास, ससुर, मम्मी पापा सब अच्छे हैं। शोभा किसी की बात नहीं मानती थी। शोभा के मां-बाप भी जानते हैं कि मैं गलत नहीं हूं। जहानाबाद काको थानाध्यक्ष अजीत कुमार ने बताया कि गजेंद्र कुमार ने थाना पहुंच कर सरेंडर किया है। इसकी सूचना पटना पुलिस को मैंने दी। पुलिस थाने पहुंचकर उसको अपने साथ ले गई। दरअसल. पटना जंक्शन स्थित एक होटल में पति ने महिला कॉन्स्टेबल की हत्या कर दी गई थी। गोली महिला के सिर में लगी थी। उसके शरीर पर एक भी कपड़ा नहीं था। कमरे में खून और सिंदूर बिखरा हुआ था। कॉन्स्टेबल का नाम शोभा (30) है। वह भागलपुर जिला पुलिस की कॉन्स्टेबल थी। शोभा कुमारी अरवल की रहने वाली थी। वह चार दिन पहले नवरात्रि की ड्यूटी के लिए पटना आई थी। वारदात मीनाक्षी होटल के कमरा नंबर 303 में हुई थी।

10 दिन से गायब सीएसपी संचालक का मिला शव

सुपौल। जिले के पिपरा थाना इलाके से बीते 20 अक्टूबर से लापता सीएसपी संचालक का शव उनके ही घर के सामने 200 मीटर की दूरी पर बगान में मिला। शव सड़ रहा था। बदबू के कारण लोगों को लाश के बारे में पता चला। जिसके बाद सूचना पुलिस को दी गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को मिट्टी से निकलवाया। परिजनों ने शव की शिनाख्त की। मृतक की पहचान पिपरा थाना अंतर्गत रामपुर पंचायत के राजपुर वार्ड नं.-2 निवासी मिश्रीकांत यादव के पुत्र संजीव कुमार राजीव के रूप में हुई। मृतक के पिता मिश्रीकांत यादव सरकारी रिटायर्ड शिक्षक हैं। उनका बेटा राजपुर गांव में ही सेंट्रल बैंक आफ इंडिया का सीएसपी संचालक के रूप कार्य किया करता था। मृतक के परिजन संतोष कुमार ने कहा कि रोज की तरह वह बीते 20 अक्टूबर को भी शाम करीब 7:00 बजे घर पहुंचा और 9:30 बजे खाना खाकर अपने कमरे में चला गया। घर वालों को यह लगा कि वह रोज कि तरह टहलकर घर के कमरे में वापस आकर सो जाएगा। लेकिन 21 अक्टूबर की सुबह जब उसकी मां और पिता उसके कमरे की तरफ गए, तो देखा घर का कमरा खुला हुआ था और वह गायब था। घर वालों ने आसपास पहले काफी खोजबीन की और रिश्तेदारों के यहां भी ढूंढ़ा लेकिन नहीं मिला।

डांगर नहर में डूबने से किसान की मौत

भोजपुर। जिले के उदवंतनगर थाना क्षेत्र के चकिया गांव स्थित डंगरा नहर में रविवार की देर शाम डूबने से खेत पटाने गए एक किसान की मौत हो गई। परिजनों द्वारा काफी खोजबीन के बाद शव को नहर से बाहर निकाला गया । घटना को लेकर लोगों के बीच काफी देर तक अफरा-तफरी मची रही। मृतक को उदवंतनगर थाना क्षेत्र के चकिया गांव निवासी स्व.राम लखन के 55 वर्षीय पुत्र जमुना मुसहर हैं एवं वह पेशे से किसान थे।
इधर,मृतक के पोते केदार मुसहर ने बताया कि रविवार की शाम वह गांव में स्थित दक्षिण साइड खेत पटाने गए थे। खेत पटाने के बाद वह खेत के किनारे स्थित डंगर नहर

के किनारे चले गए और नहर में गिरकर डूब गए। काफी देर बीत जाने के बाद जब वह घर वापस नहीं लौटे तो परिजन उन्हें खोजने के लिए खेत में पहुंचे। लेकिन वह खेत में नहीं थे। इसके बाद परिजन नहर के पास गए। जहां उन्होंने देखा कि वह नहर में गिरे पड़े है। जिसके बाद परिजनों ने ग्रामीणों के सहयोग से उन्हें नहर से बाहर निकाला। इसके बाद अपनी संतुष्टि को लेकर वह उन्हें इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल ले आए। जहां चिकित्सक ने देख उन्हें मृत घोषित कर दिया। इसके पश्चात परिजनों ने इसकी सूचना सदर अस्पताल में पदस्थापित पुलिस पदाधिकारी को दी।
सूचना पाकर पुलिस सदर अस्पताल पहुंची और शव को अपने कब्जे में लेकर उसका पोस्टमार्टम करवाया। बताया जाता है कि मृतक अपने तीन भाई व दो बहन में दूसरे स्थान पर थे। मृतक के परिवार में पत्नी फुलवा देवी तीन पुत्री आशा, अनुभति,गौरी व दो पुत्र राधे श्याम एवं धनु लाल है। घटना के बाद मृतक के घर में कोहराम मच गया है। इस घटना के बाद मृतक की पत्नी फुलवा देवी एवं परिवार के सभी सदस्यों का रो-रोकर बुरा हाल है।

डॉक्टरों पर हमला करने वालों को भेजो जेल

पिछले दिनों राजधानी में सैकड़ों डॉक्टर राजघाट पर एकत्र हुए। ये वही डॉक्टर हैं, जो जानलेवा कोरोना की दूसरी लहर के समय भगवान के दूत बनकर रोगियों का इलाज कर रहे थे। लेकिन, अब ये डरे-सहमे हुए हैं। इनके डर की वजह यह है कि इन पर होने वाले हमलों और दुर्व्यवहार के मामलों की घटनाओं में तेजी से वृद्धि हो रही है । केन्द्र सरकार से यह मांग कर रहे हैं कि वो तुरंत ही कोई सख्त कानून लेकर आए ताकि डॉक्टर बिना किसी भय भाव के काम सकें। फिलहाल तो डॉक्टरों पर हमले लगातार बढ़ते ही चले जा रहे हैं। आप स्वयं गूगल करके देख लें। आपको डॉक्टरों पर हमलों के अनगिनत मामले मिलेंगे। बेशक, डाक्टरों के साथ बदतमीजी या मारपीट करना किसी भी सभ्य समाज में सही नहीं माना जा सकता। इसकी भरपूर निंदा तो होनी ही चाहिए और जो इस तरह की अक्षम्य हरकतें करते हैं, उन्हें कठोर दंड भी मिलना चाहिए। बेशक, देशभर में हजारों-लाखों निष्ठावान डॉक्टर हैं। वे रोगी का पूरे मन से इलाज करके उन्हें स्वस्थ करते हैं। आपको पटना से लेकर लखनऊ और दिल्ली से मुंबई समेत देश के हरेक शहर और गांव में सुबह से देर रात तक कड़ी मेहनत करते हुए हजारों डॉक्टर बंधु मिल जाएंगे। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष डॉ. विनय अग्रवाल भी राजघाट तक के मार्च में शामिल थे। उनकी मांग है कि डॉक्टरों पर हमले करने वालों पर पांच लाख रुपये तक का जुमार्ना और तीन साल तक की कैद हो। ये सारे कदम इसलिए उठाए जाने की जरूरत है ताकि डॉक्टरों पर हमले करने के बारे में कोई सपने में भी न सोचे। डॉ. विनय अग्रावल कोरोना काल में किसी फरिश्ते की तरह कोरोना की चपेट में आए लोगों को अस्पताल में बेड दिलवा रहे थे। यह उन दिनों की बातें हैं जब कोरोना के रोगियों के संबंधी अस्पतालों में बेड तलाश रहे थे। निश्चय ही उस डरावने दौर को याद करते ही दिल बैठने लगता है जब कोरोना के कारण प्रलय वाली स्थिति बन गई थी। तब कोरोना के रोगियों के इलाज करने के लिए सिर्फ डॉक्टर और उनका स्टाफ ही सामने आ रहे थे। उस भयानक दौर में डॉ. विनय अग्रवाल और उनके साथी डॉक्टर दिन-रात रोगियों का इलाज कर रहे थे। उन्होंने उस दौरान सैकड़ों कोरोना रोगियों के लिए बेड की व्यवस्था करवाई थी। आज वे ही डॉक्टर अपनी जान की रक्षा करने के लिए सरकार से गुजारिश कर रहे हैं। यह वास्तव में बेहद दुखद स्थिति है। आप कभी राजधानी में देश के चोटी के डॉ. राममनोहर लोहिया अस्पताल यानी आरएमएल में जाइये। वहां की इमरजेंसी सेवाओं में हर समय करीब एक दर्जन बलिष्ठ भुजाओं वाले बाउंसर तैनात मिलते हैं। यहां पर मरीजों के दोस्तों और रिश्तेदारों के डॉक्टरों के साथ कई बार हाथापाई करने के बाद अस्पताल मैनेजमेंट ने बाउंसरों को तैनात कर दिया है। जब से यहां पर बाउंसर रहने लगे हैं तब से अस्पताल में शांति है। वरना तो लगातार डॉक्टरों के साथ बदसलूकी और मारपीट के मामले सामने आते थे। कई बार डॉक्टरों को इलाज में कथित देरी या किसी अन्य कारण के चलते कुछ सिरफिरे लोग मारने-पीटने भी लगते थे। यहां पर कुछ महिला बाउंसर भी हैं। याद रख लें कि अगर डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल में भी डॉक्टर सुरक्षित नहीं हैं तो फिर बाकी जगहों की बात करना बेकार है। इस अस्पताल में सरकारी बाबुओं से लेकर देश के सांसदों और मंत्रियों तक का इलाज होता है। कोरोना काल में यहां के डॉक्टरों ने अनगिनत लोगों की जान बचाई थी। राजधानी के ही लोकनायक जयप्रकाश नारायण अस्पताल ने भी अपने डॉक्टरों को बचाने के लिए बाउंसर रख दिए हैं। करीब दो साल पहले लोकनायक जयप्रकाश अस्पताल में गार्ड की तीमारदारों ने मारपीट की थी। दिल्ली पुलिस के जवान जब तक बचाने आते तब तक सुरक्षाकर्मी को तीमारदार मारपीट कर चुके थे। यह हाल उस सुरक्षाकर्मी का था जिसके कंधे पर डॉक्टरों को बचाने की जिम्मेदारी थी। उसका हाथ तक टूट गया था। इस घटना के बाद लोकनायक जयप्रकाश अस्पताल ने बाउंसरों को लगाया। इन दोनों अस्पतालों में सारे देश से रोगी पहुंचते हैं। आपको पिछले कुछ महीने पहले राजस्थान के दौसा जिले की उस घटना की याद होगी जब एक महिला डॉक्टर डॉ. अर्चना शर्मा ने आत्महत्या कर ली थी। उस घटना से देशभर के डॉक्टर सहम गए थे। वह घटना चीख-चीख कर इस चिंता की पुष्टि कर रही थी कि वक्त आ गया है कि देश के डॉक्टरों को पर्याप्त सुरक्षा दी जाए। अगर यह नहीं किया गया तो डॉक्टर बनने से पहले नौजवान कई-कई बार सोचेंगे। बता दें दौसा में डॉ.अर्चना शर्मा का एक अस्पताल था। उनके पास लालूराम बैरवा नाम का एक शख्स अपनी पत्नी आशा देवी को डिलीवरी के लिए लेकर आया। डिलीवरी के दौरान प्रसूता (आशा देवी) की मौत हो गई, वहीं नवजात सकुशल है। आशा देवी के निधन के बाद शुरू हो गया हंगामा। आशा देवी की मौत के बाद उसके घरवालों ने मुआवजे की मांग को लेकर अस्पताल के बाहर जमकर बवाल काटा। उन्होंने डॉ. अर्चना शर्मा के खिलाफ हत्या का मामला पुलिस में दर्ज करवा दिया। पुलिस ने इस केस को हत्या के मामले के रूप में दर्ज कर लिया। इससे डॉ. अर्चना बुरी तरह से घबरा गईं और उन्होंने आत्मग्लानि से पीड़ित होकर खुदकुशी ही कर ली। महिला डॉक्टर की आत्महत्या के मामले को लेकर राजस्थान के सभी डॉक्टरों ने हड़ताल भी की थी। डॉ.अर्चना शर्मा गांधीनगर मेडिकल कॉलेज में एसोसिएट प्रोफेसर भी रही थीं।

अमरत्व का संधान है संस्कृत

ANALYSIS

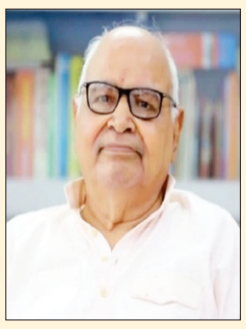

हृदयनारायण दीक्षित

लिथुआनिया में संस्कृत के विद्वान विटिस विदुनस भारत आए हैं। वे विल्नियस यूनिवर्सिटी के एशियन एवं बहुसांस्कृतिक अध्ययन विभाग में प्रतिष्ठित विद्वान हैं। उन्होंने राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में एक भाषण दिया है। उन्होंने भारत और लिथुआनिया में भाषाई समानता के तथ्य सामने रखे। लिथुआनिया आगे शोध करना चाहता है। कार्यक्रम में भारत लिथुआनिया की राजदूत डायना मिकेविसीन भी मौजूद थीं। उन्होंने कहा कि संस्कृत, लिथुआनियाई भाषा की करीबी बहन है। उन्होंने जानकारी दी कि भारत में लिथुआनिया के दूतावास ने देशभर में दोनों भाषाओं के सम्बंधों की पहचान के लिए प्रयास प्रारम्भ किए हैं। उन्होंने बताया कि दोनों भाषाओं की समानताएं शब्दावली तक ही सीमित नहीं है। व्याकरण की संरचना में भी समानताएं हैं। भारत में ज्ञान, विज्ञान, अर्थशास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्वेद, नाटक, संगीत, कला, योगदर्शन और अनुभूति की भाषा संस्कृत है।

अंग्रेजी आग्रही लोगों के लिए शुभ सूचना नहीं है। लेकिन संस्कृत प्रेमी प्रसन्न हैं। लिथुआनिया यूरोप का विकसित और समृद्ध देश है। उत्तर-पूर्वी यूरोप में बाल्टिक सागर के किनारे स्थित यह देश संप्रति संस्कृत भाषा के आकर्षण में है। जर्मन विद्वान मैक्समूलर संस्कृत और ऋग्वेद पर मोहित थे ही। विलियम जोन्स भी संस्कृत प्रेमी थे। अब लिथुआनिया ने विश्वास प्रकट किया है कि इसकी भाषा और संस्कृति का जुड़ाव भारत की भाषा संस्कृत से है। लिथुआनिया में संस्कृत के विद्वान विटिस विदुनस भारत आए हैं। वे विल्नियस यूनिवर्सिटी के एशियन एवं बहुसांस्कृतिक अध्ययन विभाग में प्रतिष्ठित विद्वान हैं। उन्होंने राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में एक भाषण दिया है। उन्होंने भारत और लिथुआनिया में भाषाई समानता के तथ्य सामने रखे। लिथुआनिया आगे शोध करना चाहता है। कार्यक्रम में भारत लिथुआनिया की राजदूत डायना मिकेविसीन भी मौजूद थीं। उन्होंने कहा कि संस्कृत, लिथुआनियाई भाषा की करीबी बहन है। उन्होंने जानकारी दी कि भारत में लिथुआनिया के दूतावास ने देशभर में दोनों भाषाओं के सम्बंधों की पहचान के लिए प्रयास प्रारम्भ किए हैं। उन्होंने बताया कि दोनों भाषाओं की समानताएं शब्दावली तक ही सीमित नहीं है। व्याकरण की संरचना में भी समानताएं हैं। भारत में ज्ञान, विज्ञान, अर्थशास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्वेद, नाटक, संगीत, कला, योगदर्शन और अनुभूति की भाषा संस्कृत है। पाली प्राकृत और अपभ्रंश होते हुए हिन्दी का विकास हुआ। अनेक भाषा विज्ञानी विकास क्रम में भिन्न मत भी रखते हैं। लेकिन प्राकृत के वैयाकरण वररूचि ने लिखा है

'प्रकृतिः संस्कृंत/तस्मादुदभूतं प्राकृतं।' संस्कृत प्रकृति है। प्राकृत उसी से प्रकट हुई है। भारतीय संस्कृति का विकास और कथन संस्कृत में हुआ था। हिन्दी ने उसे आगे बढ़ाया। संस्कृत को मृतभाषा कहने वाले मित्र दयनीय हैं। भाषा कभी नहीं मरती। उसे बोलने वाले ही भाषा प्राणतेज रहित होते हैं। हिन्दी संस्कृत की उत्तराधिकारी है। बेशक विदेशी सत्ता ने संस्कृति व संस्कृत को दुर्बल बनाया लेकिन संस्कृत को मिटाया नहीं जा सकता। संस्कृत अमरत्व का संधान है। यूरोपीय सभ्यता का केन्द्र ईसाईयत है। ईसाईयत का विरोध या ईसाईयत की निकटता दोनों परस्पर पूरक हैं। भारतीय सभ्यता सोच विचार और चिन्तन का केन्द्र वैदिक दर्शन है। वैचारिक विविधता तर्क प्रतितर्क और सतत शोध इस संस्कृति की प्रकृति है। संस्कृत हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में शोध और बोध की विरासत है। अंग्रेजी ऐसी अनुभूति नहीं देती। लेकिन भारत में अंग्रेजी की ठसक है। अनेक हिन्दी विद्वान भी अंग्रेजी को अंतरराष्ट्रीय भाषा मानते हैं। गांधी जी हिन्दी लिखने बोलने में कठिनाई अनुभव करते थे। उन्होंने समर्थकों से कहा था 'अंग्रेजी की कोई जरूरत नहीं। वायसराय से भी अपनी भाषा में बात करो।' बंकिम चन्द्र भारतीय भाषाओं के प्रेमी थे। उन्होंने लिखा, 'हम चाहे कितनी ही अंग्रेजी लिख पढ़ लें, अंग्रेजी हमारे लिए मरे हुए शेर की खाल ही सिद्ध होगी। हम उसे पहनकर सिंह गर्जना नहीं कर सकते।' अंग्रेजी ने हम सबके भीतर आत्महीन भाव पैदा किया है। अंग्रेजी संस्कारों के कारण ही हम वास्तविक इतिहास बोध से दूर हैं। स्वाधीनता संग्राम के समय अंग्रेजी प्रतीकों से भारत की टक्कर थी। संस्कृत और हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं की समृद्धि समय का आह्वान है। संविधान सभा में पं. नेहरू ने भी स्वीकार किया था कि संस्कृत भारत ही नहीं एशिया के बड़े क्षेत्र में विद्वानों की भाषा थी। आज संस्कृत की स्थिति वैसी नहीं है। संस्कृतविद् प्रायः आधुनिकता की अपेक्षा से दूर है और आधुनिकता प्रेमी संस्कृत से। संस्कृत आधुनिक विज्ञान, तकनीकी, उद्यम और प्रबोधन की भाषा भी हो सकती है। प्राचीन भारत का सारा ज्ञान विज्ञान, हर्ष विषाद और प्रसाद प्रकट करने वाली भाषा आखिरकार आधुनिक जगत की लोकप्रिय भाषा क्यों नहीं हो सकती? चुनौती बड़ी है। संस्कृत जैसा पूर्ण अनुशासन किसी भी भाषा में नहीं है लेकिन संस्कृत कालवाह्य घोषित हो रही है। हम विशिष्ट संस्कृति के कारण ही विश्व के अद्वितीय राष्ट्र हैं। संस्कृति और संस्कृत परस्पर एक हैं। संस्कृत और संस्कृतिनिष्ठ नया वातावरण बन रहा है। यह प्रसन्नता का विषय है। भारत में संस्कृत ही प्रार्थना की भाषा है। विवाह और अन्य संस्कारों की भी। इसी तरह मुस्लिम मित्रों के यहां संस्कार आदि की भाषा अरबी है। रोमन कैथोलिक में लैटिन है। यहूदियों में हिब्रू है। आथोर्डाक्स ईसाई ग्रीक का प्रयोग करते हैं। भिन्न-भिन्न सभ्यताओं में प्रार्थना और संस्कार की भाषाएं भिन्न-भिन्न हैं। हरेक भाषा के संस्कार होते हैं। वैदिक भाषा के अपने संस्कार हैं। वैदिक समाज ने इसी भाषा को संवाद का माध्यम बनाया था। उन्होंने इसी भाषा माध्यम को समाज गठन का उपकरण भी बनाया। इसी भाषा से दैनिक जीवन के कामकाज भी किए और इसी भाषा के माध्यम से सूर्य, चन्द्र, नदी, पर्वत और वनस्पति आदि से भी संवाद बनाया। यज्ञ कर्मकाण्ड में भी इसी भाषा का प्रयोग होता। अभिनय कला भारत में ही विकसित हुई। भरत मुनि ने संस्कृत में उसे नाट्य शास्त्र बनाया। इसे नाट्यवेद की संज्ञा मिली। दर्शन भारत में देखा गया। द्रष्टा ऋषि कहे गये। 'अर्थशास्त्र' संस्कृत में ही उगा पहली बार। कौटिल्य ह्यअर्थशास्त्रह्ण के प्रथम प्रवक्ता हैं। आयुर्विज्ञान भी संस्कृत में प्रकट हुआ। ज्ञान विज्ञान और कला कौशल सहित राष्ट्रजीवन के सभी अनुशासन संस्कृत में ही प्रवाहमान हुए। सामूहिक हुए। एक से अनेक हुए। अनेक से एक हुए। संस्कृत ने एक संस्कृति दी और एक संस्कृति ने एक राष्ट्र। भतृहरि ने 'शब्द और अर्थ के सभी संकल्पों और विकल्पों को व्यवहारजन्य ही बताया था। आस्था ही नहीं इहलौकिक कर्मो के संधान का उपकरण भी संस्कृत ही है। संधान जैसा शब्द दूसरी भाषा में नहीं है। अनुसंधान इसी का छोटा भाई जान पड़ता है। संस्कृत में उल्लेखनीय अनुसंधान हुए हैं। भारत विरोधी मित्र संस्कृत को 'डेड लैंगुएजह्ण कहते हैं। विलियम जोन्स ने संस्कृत को लैटिन आदि अनेक भाषाओं से समृद्ध बताया था। लेकिन संस्कृत को छोटा करने के लिए इंडो-यूरोपीय नाम की एक और प्राचीन भाषा का नाम उछाला था। लेकिन इस भाषा का कोई अता-पता नहीं है। हिन्दी प्राणवान भाषा है। हिन्दी के पास संस्कृत का उत्तराधिकार है और पालि, प्राकृत, अपभ्रंश का सिंगार। यह भारतीय संस्कृति की संवाहक है। यह भारत की राष्ट्रभाषा राजभाषा है। ईस्ट इण्डिया कम्पनी यहां अंग्रेजी लाई थी। उसके बाद अंग्रेजी सत्ता आई। भाषा अपने साथ संस्कार भी लाती है। हम अपने प्रिय का स्मरण कर रहे हों, वहीं प्रियजन अचानक आ जाए। हम चहक उठते हैं कि आइए! आइए! आपकी लम्बी उम्र है, आपकी ही चर्चा हो रही थी। अंग्रेजों ने अंग्रेजी में सिखाया 'ओह! थिंक दि डेविल, डेविल इज हियर-शैतान को सोंचा, शैतान आ गया।' अंग्रेजी संस्कार कमोवेश ऐसे ही हैं। ब्रिटिश सत्ता के दौरान अंग्रेजी कप्तान, कलक्टर और अदालतों की भाषा बनी। प्रत्येक भाषा अपने लोक और संस्कृति की अभिव्यक्ति होती है। भाषा की अपनी संस्कृति होती है और हरेक संस्कृति की अपनी भाषा।

लेखक, उत्तर प्रदेश विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष हैं।

वैचारिक भाव-भूमि के प्रसंग

कई फोटो अपने में बड़ा भाव और संदेश देने वाले होते हैं। चित्रकूट में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और जगतगुरु रामभद्राचार्य की भेंट के चित्र ऐसे ही हैं। कुछ दिन पहले प्रधानमंत्री मोदी को श्रीराम मंदिर अयोध्या के लोकार्पण का आमंत्रण दिया गया। इसके बाद शुक्रवार को चित्रकूट में मोदी और रामभद्राचार्य की मुलाकात हुई। यह विलक्षण संयोग है। अयोध्या में श्रीराम मंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त करने में इन दोनों महानुभावों का योगदान उल्लेखनीय है। प्रधानमंत्री ने रामभद्राचार्य की तीन पुस्तकों का विमोचन भी किया। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि चित्रकूट की पावन और पुण्य भूमि पर मुझे दोबारा आने का अवसर मिला है। यह अलौकिक क्षेत्र है। इसके बारे में हमारे संतों ने कहा है कि चित्रकूट सब दिन बसत प्रभु सिया लखन समेत अर्थात चित्रकूट में प्रभु श्रीराम, माता सीता और लक्ष्मण जी के साथ नित्य निवास करते हैं। उन्होंने चित्रकूट में कांच मंदिर (श्री रघुवीर मंदिर) में दर्शन-पूजन किया। प्रधानमंत्री ने नए सुपर स्पेशलिटी अस्पताल का शुभारंभ किया। चित्रकूट में अरविंद भाई मफतलाल की सौवीं जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में उन पर आधारित डाक टिकट जारी किया। रामभद्राचार्य ने श्रीराम जन्मभूमि पर मंदिर के संबंध में 400 से अधिक प्रमाण सुप्रीम कोर्ट को दिए थे। उन्होंने प्राचीन ग्रंथों के प्रामाणिक उद्धरण प्रस्तुत किये थे। रामभद्राचार्य ने दावे के साथ कहा था कि वाल्मीकि रामायण के बाल खंड के आठवें श्लोक से श्रीराम जन्म के बारे में जानकारी शुरू होती है। यह सटीक प्रमाण है। इसके बाद स्कंद पुराण में राम जन्म स्थान के बारे में बताया गया है। राम जन्म स्थान से तीन सौ धनुष की दूरी पर सरयू माता बह रही हैं। एक धनुष चार हाथ का होता है। आज भी यदि नापा जाए तो जन्म स्थान से सरयू नदी उतनी ही दूरी पर बहती दिखेंगी। अथर्व वेद के दशम कांड के इकतीसवें अनुवाक्य के द्वितीय मंत्र में स्पष्ट कहा गया है कि आठ चक्रों व नौ प्रमुख द्वार वाली श्री अयोध्या देवताओं की पुरी है। उसी अयोध्या में मंदिर महल है। उसमें परमात्मा स्वर्ग लोक से अवतरित हुए थे। ऋग्वेद के दशम मंडल में भी इसका प्रमाण है। तुलसी शतक में कहा गया है कि बाबर के सेनापति व दुष्ट यवनों ने राम जन्मभूमि के मंदिर को तोड़कर मस्जिद का ढांचा बनाया और बहुत से हिंदुओं को मार डाला। तुलसीदास ने तुलसी शतक में इस पर दुख भी प्रकट किया है। मंदिर तोड़े जाने के बाद भी हिंदू साधु रामलला की सेवा करते थे। इस पूरे प्रसंग से रामभद्राचार्य जी की विलक्षण प्रतिभा का अनुमान लगाया जा सकता है। उनका अध्ययन अद्भुत है। इसी के साथ वह समाज के कल्याण में भी समर्पित हैं। जिस शिशु की दो माह बाद ही नेत्र ज्योति चली जाए, उसके लिए जीवन अंधकारमय हो जाता है। लेकिन ऐसे अनेक विलक्षण लोग हैं, जिन्होंने इस अभाव को बाधक नहीं बनने दिया। प्रबल इच्छाशक्ति के साथ उन्होंने अभाव को प्रभाव में बदल दिया। आंखें न होने के बाबजूद अपना जीवन प्रकाशित किया, साथ में समाज को भी रोशनी दिखाई। रामभद्राचार्य ऐसी ही विभूति हैं। नेत्र ज्योति चली जाने से उनके परिवार में चिंता व निराशा थी। शिशु के भविष्य को लेकर बड़ी आशंका थी। तब किसी ने यह कल्पना नहीं की होगी कि एक दिन यह बालक समाज को मार्ग दिखायेगा। श्रीराम भूमि पर उनके तर्क अकाट्य थे। सभी लोग उनके अध्ययन व ज्ञान को देखकर हतप्रभ थे। भारतीय दर्शन व प्रज्ञा का चमत्कार प्रभावित करने वाला था। ज्ञानचक्षु जीवन आलोकित हो जाता है। इसे प्रत्यक्ष देखा जा रहा था। अति विशाल भारतीय वैदिक वांग्मय के अलावा अन्य सभी ग्रन्थों की पृष्ठ संख्या तक उनकी स्मृति में थी। उन्होंने इस विलक्षण ज्ञान को अपने तक सीमित नहीं रखा, बल्कि समाज का भी वह अनवरत मार्गदर्शन कर रहे हैं। विद्या का सतत दान कर रहे हैं। वह विश्वविद्यालय के कुलाधिपति है। इस रूप में वह विद्यार्थियों को शिक्षित करते हैं। वह प्रभावी व ज्ञानवर्धक रामकथा के वाचक हैं। इस रूप में समाज को प्रभु राम की मयार्दा का संदेश देते हैं। वह तुलसीपीठ के संस्थापक और पीठाधीश्वर हैं। चित्रकूट स्थित इस संस्थान के माध्यम से केवल धार्मिक ही नहीं, सामाजिक सेवा के कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है। वह चित्रकूट में जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलाधिपति हैं। यह तब है जब अभाव के कारण सत्रह वर्ष की उम्र तक उनको औपचारिक शिक्षा का अवसर नहीं मिला था। उन्होंने कभी भी ब्रेल लिपि का उपयोग नहीं किया। सत्रह वर्ष की उम्र में ही उनके अनेक ग्रन्थ कंठस्थ हो गए थे। उनका बाईस भाषाओं पर अधिकार है। अभी तक 100 से अधिक पुस्तकें लिख चुके हैं। संस्कृत व्याकरण, न्याय वेदांत, रामायण आदि के विशेषज्ञ हैं। चित्रकूट में प्रधानमंत्री ने तुलसी पीठ के जगद्गुरु की तीन पुस्तकों अष्टाध्यायी भाष्य', रामानंदाचार्य चरितम' और 'भगवान श्री कृष्ण की राष्ट्रलीला' का विमोचन किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि इससे भारत की ज्ञान परंपरा और मजबूत होगी। संस्कृत शाश्वत है। समय ने संस्कृत को परिष्कृत किया। लेकिन इसे कभी प्रदूषित नहीं किया जा सका। प्रधानमंत्री मानते हैं कि संस्कृत का परिपक्व व्याकरण निहित है। मात्र 14 महेश्वर सूत्रों पर आधारित यह भाषा शास्त्र और सहस्त्र की जननी रही है। भारत के सभी राष्ट्रीय आयाम में संस्कृत का योगदान है। हजारों साल पुराने गुलामी के दौर में भारत की संस्कृति और विरासत को नष्ट करने प्रयास किया गया। गुलामी की मानसिकता वालों का संस्कृत के प्रति वैर-भाव था। जबकि संस्कृत परंपराओं की भाषा है। यह हमारी प्रगति और पहचान की भी भाषा है। प्रधानमंत्री ने अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा समारोह में भाग लेने के लिए श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट द्वारा दिए गए निमंत्रण का भी उल्लेख किया।

Social Media Corner

सच के हक में...

हम आदरणीय पसुम्पोन मुथुरामलिंग थेवर को उनकी पवित्र गुरु पूजा पर अपनी गहरी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। उनका समृद्ध कार्य, जो समाज के उत्थान में गहराई से निहित है, उनका आध्यात्मिक मार्ग एकता, किसानों की समृद्धि और गरीबी उन्मूलन का समर्थन करता है, जो राष्ट्रीय प्रगति के मार्ग को रोशन करता है। उनके कालजयी सिद्धांत आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा के प्रतीक बने रहेंगे।

(प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ट्विटर अकाउंट से)

दुमका में मयूराक्षी नदी पर 2 किलोमीटर से अधिक लंबाई के नवनिर्मित उच्चस्तरीय पुल का उद्घाटन किया तथा अन्य पथ परियोजनाओं के उद्घाटन और शिलान्यास करने का सौभाग्य प्राप्त मिला। आज यह नवनिर्मित पुल आप सभी को समर्पित किया जा रहा है। नया पुल, नई सड़क के निर्माण से आवागमन में आप सभी को सुविधा होगी। कृषि, पर्यटन और व्यापार में मजबूती तथा रोजगार सृजन के साथ क्षेत्र के समग्र विकास में यह निर्माण सहायक साबित होगा। इस शुभ अवसर पर सभी को अनेक-अनेक बधाई, शुभकामनाएं और जोहार।

(सीएम हेमंत सोरेन के ट्विटर अकाउंट से)

सेना की शह पर पाकिस्तान लौटे नवाज

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के देश लौटने को लेकर महीनों से जारी अटकलों पर पिछले सप्ताह विराम लग गया। चार साल के आत्मनिर्वासन के बाद वह देश लौट आये हैं। इसमें किसी को संदेह नहीं होना चाहिए कि उनकी वापसी सेना के आशीर्वाद के सहारे ही मुमकिन हुई है, जो पाकिस्तान का स्थायी सत्ता प्रतिष्ठान है। तकनीकी तौर पर, नवाज कानून की नजरों में भगोड़े हैं। लेकिन इसके बावजूद वापसी पर उनका किसी भावी प्रधानमंत्री की तरह सत्कार हुआ। उनके खिलाफ दिखने वाली और वर्ष 2017 में उन्हें सत्ता से बाहर करने में प्रमुख निभाने वाली अदालतों का भी मिजाज अलग है। उन्हें आने के साथ ही भ्रष्टाचार के दो बड़े मामलों में जमानत मिल गयी। तीन बार प्रधानमंत्री रह चुके नवाज शरीफ एक बार फिर से सेना के पसंदीदा उम्मीदवार हैं, जो उन्हें इस दफा इमरान खान के खिलाफ खड़ा करना चाहती है। एक तरह से, नवाज शरीफ की वापसी से पाकिस्तान में पहिया एक बार फिर घूमकर पुरानी जगह लौट आया है। ना केवल 2017 में हुई संदिग्ध विदाई के बाद वह वापस राजनीति के केंद्र में आ गये हैं, बल्कि उनकी राजनीति भी 1980 के दशक के दौर में पहुंच गयी है जब सेना ने बेनजीर भुट्टो को चुनौती देने के लिए उन्हें सियासत में उतारा। इस बार फिर राजनीतिक जमीन उनके पक्ष में तैयार की जा रही है। इस बात की पूरी कोशिश हो रही है कि किसी भी प्रकार से इमरान खान की पार्टी तहरीक-ए-इंसाफ को बेअसर किया जाए और उन्हें भी चुनावी मैदान में प्रभावी तरीके से उतरने से रोका जा सके। लेकिन, नवाज शरीफ चार साल बाद जिस पाकिस्तान में लौट रहे हैं, वह बदल चुका है। देश में जबरदस्त ध्रुवीकरण है, वह आर्थिक रूप से खस्ताहाल है, और जिहादी हिंसा में घिरा है। खास तौर पर आर्थिक दुश्वारियों से निपटने के लिए अपनायी गयी नीतियों की वजह से उसका जनाधार सिमटा है। एक ताजा सर्वे की मानें तो आज यदि निष्पक्ष चुनाव हों, तो इमरान खान की एकतरफा जीत होगी और नवाज की पार्टी धूल चाटती दिखेगी। अब नवाज शरीफ से उम्मीद होगी कि वह खासतौर से पंजाब में अपना मूल जनाधार मजबूत करें। हालांकि, सेना भले उन्हें गद्दी पर बिठाना चाहती हो, लेकिन उसे इस बात का भरोसा नहीं है कि कहीं नवाज फिर से पलट न जाएं। पिछले तीनों कार्यकालों में नवाज की विदाई फौज के साथ टकराने की वजह से हुई। नवाज हमेशा अपने रास्ता चलना चाहते थे, लेकिन जनरलों को यह बात मंजूर नहीं थी कि वह किसी असैनिक का आदेश मानें। ऐसे में सेना की यह कोशिश होगी कि नवाज भले ही चौथी बार सरकार बनायें, लेकिन वह गठबंधन सरकार हो, जिसकी डोर सेना मुख्यालय से संचालित होती हो। पाकिस्तान में पीटीआइ से अलग होकर निकले इमरान खान के दो करीबी लोगों, जहांगीर तरीन और परवेज खटक, के नेतृत्व में दो नयी पार्टियां चुनाव में हाथ आजमाएंगी। इस बात की पूरी कोशिश होगी कि जनादेश ऐसा बंटा आए कि केंद्र के अलावा पंजाब और खैबर-पख्तूनख्वा प्रांतों में सत्ता संतुलन की चाभी उनके हाथों में भी रहे। हालांकि पाकिस्तान में बहुत लोगों को लगता है कि ऐसी कोई सरकार टिकाऊ नहीं होगी क्योंकि उसके लिए देश को पटरी पर लाने के लिए सख्त फैसले लेना मुमकिन नहीं होगा। वैसे चुनाव में यदि इमरान खान को हिस्सा नहीं लेना दिया गया, तो ऐसे किसी चुनाव की वैधता पर सवाल जरूर उठेंगे। लेकिन पाकिस्तान की राजनीति में जायज-नाजायज को लेकर शायद ही कोई बहस होती हो। बलूचिस्तान के पूर्व मुख्यमंत्री असलम रायसानी का एक कथन मशहूर है, कि ग्रैजुएशन की डिग्री एक डिग्री ही होती है, वह चाहे असल हो या जाली। यही बात पाकिस्तान की राजनीति पर भी लागू होती है, कि चुनावी जीत का मतलब जीत है, वह चाहे जनसमर्थन से मिली हो या जोड़-तोड़ से।

रहस्यमय मुकदमा

कथित तौर पर जासूसी के आरोपी आठ भारतीयों को गुरुवार को कतर की एक अदालत द्वारा सुनाई गई मौत की सजा, जैसा कि विदेश मंत्रालय ने अपने एक बयान में कहा है, वाकई ह्लबेहद चौंकाने वालीह्व है और यह स्थिति अब नरेन्द्र मोदी सरकार की कूटनीतिक कौशल का एक बड़ा इम्तिहान साबित होने वाली है। अगस्त 2022 में गिरफ्तार किए गए पूर्व भारतीय नौसेना कर्मियों के खिलाफ आरोपों और सबूतों के बारे में बहुत ही कम जानकारी है और यह पूरा मुकदमा गोपनीयता के घेरे में है। नौसेना कर्मियों के परिजनों और दोहा स्थित भारतीय राजनयिकों की अपील के बावजूद, कतर ने इस मामले का विस्तृत ब्यौरा नहीं दिए जाने के बारे में कुछ भी स्पष्ट नहीं किया है। यहां तक कि अदालत का फैसला भी अभी तक नई दिल्ली के साथ साझा नहीं किया गया है। लीक हुई खबरों से यह पता चलता है कि इन लोगों पर एक जासूसी पनडुब्बी कार्यक्रम, जिसमें उन्होंने काम किया था, से संबंधित गोपनीय जानकारी किसी तीसरे देश के साथ साझा करने का आरोप लगाया गया है। हालांकि उनके परिजनों ने इस आरोप से इनकार किया है। उदारता और पारदर्शिता की गुहार लगाने के मकसद से भारतीय अधिकारियों की कतर की यात्रा का कोई फायदा नहीं हुआ। हालांकि यह मामला पूर्व नौसेना कमांडर जाधव के मामले से कुछ मिलता-जुलता है। जाधव भी पाकिस्तान में मौत की सजा पर हैं। फर्क बस इतना सा है कि कतर के साथ भारत के रिश्ते अपेक्षाकृत बेहतर रहे हैं। रणनीतिक और रक्षा सहयोग समझौतों के अलावा, भारत अपनी एलएनजी संबंधी जरूरतों का 40 फीसदी हिस्सा कतर से पूरा करता है। भारत कतर के आयात का तीसरा सबसे बड़ा स्रोत भी है। खासकर, निर्माण के लिए कच्चे माल और ताजा खाद्य पदार्थों का।

Printed and Published by Fahim Akhtar on behalf of MAA MEDIA VENTURE and Printed at SHIVA SAI PUBLICATION PVT.LTD, Ratu, Kathitand, Near Tender Bagicha, H.P. Petrol Pump P.O.+P.S.- Ratu, Dist.-Ranchi, 835222, Jharkhand And Published at Roshpa Tower, 5th Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001. Editor- Fahim Akhtar. E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

सरकार ने प्याज निर्यात पर लगाया अंकुश,तय किया एमईपी

निर्यात किए जाने वाले प्याज का एमईपी 31 दिसंबर, 2023 तक 800 डॉलर प्रति टन

नई दिल्ली ।

सरकार ने घरेलू बाजार में प्याज की उपलब्धता बढ़ाने और कीमतों पर अंकुश लगाने के लिए शनिवार को इस प्रमुख सब्जी के निर्यात पर 31 दिसंबर तक 800 डॉलर प्रति टन (67 रुपये प्रति किलोग्राम) का न्यूनतम निर्यात मूल्य (एमईपी) तय कर दिया। विदेश व्यापार महानिदेशालय ने एक अधिसूचना में कहा` कि विदेश भेजे जाने वाले प्याज का एमईपी 31 दिसंबर, 2023 तक 800 डॉलर प्रति टन किया जाता है। सरकार ने यह कदम प्याज की बढ़ती कीमतों को देखते हुए उठाया है। कम आपूर्ति के कारण राष्ट्रीय राजधानी के खुदरा बाजार में प्याज की कीमतें बढ़कर 65-80 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई हैं। दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र में लगभग 400 सफल खुदरा स्टोर वाली मदर डेयरी 67 रुपये प्रति किलोग्राम की दर से खुला प्याज बेच रही है। वहीं ई-कॉमर्स पोर्टल बिगबास्केट पर यह 67 रुपये प्रति किलो और ओटिपी पर 70 रुपये प्रति किलो की दर पर है। स्थानीय विक्रेता 80 रुपये प्रति किलो की दर से प्याज बेच रहे हैं। दिल्ली के कुछ इलाकों में प्याज की कीमतें 90 रुपये प्रति किलोग्राम तक पहुंच गई हैं। मंडी में विक्रेताओं का कहना है कि इसमें आगे 15-20 दिन अभी और तेजी जारी रहेगी। जानकारों की मानें तो प्याज की कीमतें 100 रुपये से ऊपर निकल सकती हैं। दिल्ली की आजादपुर मंडी में प्याज 65 रुपये किलोग्राम तक मिल रहा है। विक्रेता और खरीदारों के मुताबिक प्याज की कीमत में हर दिन तेजी हो रही है। उधर सरकार ने प्याज की कीमतों पर लगाम के लिए बफर स्टॉक से प्याज निकालना शुरू कर दिया है। प्याज की कीमतों में कमी की वजह असमान्य बरसात को बताया जा रहा है। कुछ इलाकों में

बरसात बहुत अधिक हो जाने व कुछ इलाकों में बेहद कम बरसात होने से फसलें खराब हुई हैं। कर्नाटक में प्याज की फसलों पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है। प्याज की आवक के कम हो जाने व त्योहारों के सीजन में मांग बढ़ जाने के कारण कीमतों में तेज उछाल देखने को मिल रहा है।

आरबीआई ने नियमों के उल्लंघन पर गुजरात के 3 बैंकों पर जुर्माना लगाया

मुंबई।

आरबीआई ने अपने परिचालन के संचालन में आधिकारिक मानदंडों का उल्लंघन करने के लिए गुजरात में तीन सहकारी बैंकों पर मौद्रिक जुर्माना लगाया है।प्राथमिक (शहरी) सहकारी बैंकों (यूसीबी) द्वारा अन्य बैंकों में जमा राशि रखने पर जारी आरबीआई के निर्देशों के उल्लंघन के लिए उमा को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड, वडोदरा पर 7 लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया है। आरबीआई द्वारा किए गए बैंक के वैधानिक निरीक्षण से पता चला कि बैंक ने निर्धारित अंतर-बैंक प्रतिपक्ष जोखिम सीमा का उल्लंघन किया था और निर्धारित अंतर-बैंक सकल एक्सपोज़र सीमा का भी उल्लंघन किया। नतीजतन, बैंक को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया। आरबीआई ने सोमवार को जारी एक बयान में कहा, ÷नोटिस पर बैंक के जवाब और व्यक्तिगत सुनवाई के दौरान मौखिक प्रस्तुतियों पर विचार करने के बाद आरबीआई इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि आरबीआई के उपरोक्त निर्देशों का पालन न करने का आरोप प्रमाणित हुआ और बैंक पर मौद्रिक जुर्माना लगाना जरूरी हो गया।इसी तरह, आरबीआई ने निदेशकों, रिश्तेदारों और फर्मों/संस्थाओं को ऋण और अग्रिम पर अपने निर्देशों का पालन न करने के कारण गुजरात के बनासकांठा में शिहोरी नागरिक सहकारी बैंक लिमिटेड पर 1 लाख रुपये का जुर्माना लगाया है।आरबीआई ने नो योर कस्टमर (केवाईसी) मानदंडों से संबंधित निर्देशों का पालन न करने के लिए खेड़ा जिले में पिज पीपुल्स को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड, पिज पर 2 लाख रुपये का जुर्माना भी लगाया है। बैंक के वैधानिक निरीक्षण से पता चला कि वह खातों के जोखिम वर्गीकरण की समय-समय पर समीक्षा करने में विफल रहा है। आरबीआई ने यह भी कहा कि ये कार्रवाइयां विनियामक अनुपालन में कमियों पर आधारित थीं और बैंकों द्वारा अपने ग्राहकों के साथ किए गए किसी भी लेनदेन या समझौते की वैधता पर फैसला देने का इरादा नहीं था।

इजराइल-हमास संघर्ष गहराने से कच्चे तेल की कीमतें फिर गिरीं

लंदन।

गाजा में अपने सैन्य अभियानों का विस्तार करने के इजरायल के कदम से क्षेत्रीय संघर्ष बढ़ने की आशंका में कच्चे तेल की कीमतें सोमवार को फिर से गिर गईं। मीडिया रिपोर्टों में कहा गया है कि युद्ध की विस्तार होने पर वैश्विक अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। वैश्विक कच्चा तेल बेंचमार्क ब्रेंट क्रूड 1.2 प्रतिशत गिरकर 89 डॉलर प्रति बैरल पर आ गया। अमेरिकी बेंचमार्क वेस्ट टेक्सास इंटरमीडिएट (डब्ल्यूटीआई) क्रूड 1.3 प्रतिशत टूटकर 84 डॉलर प्रति बैरल बोला गया। पिछले सप्ताह ब्रेंट में 1.8 फीसदी और डब्ल्यूटीआई में 3.6 फीसदी की गिरावट आई थी।

सीएनएन की रिपोर्ट के अनुसार, हरग्रीव्स लैंसडाउन में धन और बाजार प्रमुख सुज़ाना स्ट्रीटर ने सोमवार को लिखा कि हालांकि युद्ध के क्षेत्रीय विस्तार के जोखिम अभी भी स्पष्ट रूप से मौजूद हैं, लेकिन गाजा में जमीनी हमले की व्यापक रूप से उम्मीद की गई थी। उन्होंने कहा, हालांकि आपूर्ति संबंधी चिंताएं अभी भी बनी हुई हैं, जिससे तेल की कीमतों में गिरावट सीमित है, लेकिन आगे चलकर (वैश्विक) विकास दर में गिरावट की चिंताओं के कारण कमजोर मांग से तेल की कीमतों में गिरावट आई है। सीएनएन की रिपोर्ट के अनुसार, यूरोप की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था जर्मनी में तीसरी तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद में गिरावट के आंकड़े आने के बाद वैश्विक आर्थिक विकास के बारे में चिंताएं फिर से उजागर हो गई हैं और उपभोक्ताओं ने खर्च पर लगाम लगा दी है। विश्व बैंक ने कहा कि गाजा में लड़ाई तेज होने से तेल बाजार सहित वैश्विक कमोडिटी बाजार अज्ञात संकट में जा सकते हैं। उसने तीन ऐसे परिदृश्य बताये हैं जिनमें तेल की कीमतें बढ़ सकती हैं।

विस्तारा ने हांगकांग के लिए सीधी उड़ान सेवा शुरू की

नई दिल्ली।

विस्तारा एयरलाइंस ने दिल्ली और हांगकांग के बीच रोजाना नॉन-स्टॉप उड़ानें शुरू की हैं। एयरलाइन के एक अधिकारी ने सोमवार को यह जानकारी दी। विस्तारा का ए321नियो विमान रविवार को रात 9.05 बजे इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से शुरू हुई और सोमवार को हांगकांग अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पहुंची। एयरलाइन के प्रवक्ता ने कहा, ÷रूट पर ए321नियो विमान अपनी असाधारण विशेषताओं के लिए जाना जाता है, जिसमें बिजनेस क्लास में फ्लैट बेड के साथ आरामदायक बैठने की व्यवस्था, आंतरिक सज्जा, इन-फ्लाइट वायरलेस कनेक्टिविटी और एक अत्याधुनिक मनोरंजन सिस्टम विथ लाइव टीवी शामिल है। विस्तारा के मुख्य कार्यकारी अधिकारी विनोद कन्नन ने कहा कि हांगकांग के लिए सीधी कनेक्टिविटी की शुरुआत हमारे अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क को लगातार बढ़ाने की रणनीति के अनुरूप है। कन्नन ने कहा, हांगकांग दुनिया के शीर्ष वाणिज्यिक केंद्रों में से एक है। यह एक पॉपुलर लीजर डेस्टिनेशन के अलावा, भारत से बहुत सारे व्यवसाय और वीएफआर यात्रा को आकर्षित करता है। हमें इस मार्ग पर यात्रा करने वाले ग्राहकों को बेहतरीन एयरलाइन में उड़ान भरने का विकल्प प्रदान करते हुए खुशी हो रही है और हमें विश्वास है कि वे हमारे विश्व स्तरीय उसेवाओं की सराहना करेंगे।

स्मार्ट बाज़ार में त्यौहार पर जबरदस्त ऑफर

नई दिल्ली ।

बचत हमेशा भारतीय उपभोक्ता के लिए केंद्रीय आकर्षण रही है। और जब रोजमर्रा की वस्तुओं पर बचत की बात आती है, तो स्मार्ट बाजार इस श्रेणी में अग्रणी है। स्मार्ट बाजार कई श्रेणियों के लिए वन-स्टॉप शॉपिंग गंतव्य है, जिसमें स्टेपल, पैकेज्ड फूड, घरेलू और व्यक्तिगत देखभाल, फल, सब्जियां शामिल हैं। डेयरी, परिधान, घरेलू सामान, घरेलू साज-सज्जा, छोटे उपकरण, सामान, आदि।

स्मार्ट बाज़ार में जाने से पहले आपको दो बार सोचने की ज़रूरत नहीं है; दिन, सप्ताह के दिन या सप्ताहांत, महीने की शुरुआत या अंत की परवाह किए बिना, आप निश्चिंत हो सकते हैं कि आपको अपनी सभी खरीदारी आवश्यकताओं के लिए सबसे कम कीमत मिलेगी। इससे भी बेहतर, आपको 1999 रु. की खरीदारी पर केवल रु. 9 प्रति किलो के हिसाब से चीनी मिलती है। स्मार्ट बाज़ार ने माधुरी दीक्षित को अपना ब्रांड एंबेसडर बनाया और अपना ब्रांड अभियान, स्मार्ट बाज़ार चलें लॉन्च किया। माधुरी इस ब्रांड के लिए बिल्कुल उपयुक्त थीं, क्योंकि वह अपने विशिष्ट

आकर्षण के साथ ग्राहकों के लिए सापेक्षता का एक नया पहलू लेकर आई थीं।

इस उत्सव में आवश्यक वस्तुएं जैसे स्टेपल, परिधान और उपहार देने वाली वस्तुएं एक ही छत के नीचे सर्वोत्तम कीमतों और अद्भुत ऑफर के साथ उपलब्ध हैं।

रुपया 83.25 पर बंद

नई दिल्ली । अमेरिकी डॉलर के मुकाबल सोमवार को भारतीय रुपया स्पाट स्तर पर कारोबार करने के साथ ही 83.25 पर बंद हुआ। इससे पहले आज सुबह विदेशी निवेशकों की बिकवाली से भारतीय मुद्रा सीमित दायरे में कारोबार करती रही। सप्ताह के पहले कारोबारी` दिन शुरुआती कारोबार में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया एक सीमित दायरे में कारोबार करता रहा। वहीं विदेशी मुद्रा व्यापारियों ने कहा कि रुपया एक सीमित दायरे में कारोबार कर रहा है क्योंकि विदेशी कोषों की निरंतर निकासी और विदेशी बाजार में अमेरिकी मुद्रा की मजबूती से भी निवेशकों की भावनाओं को प्रभावित किया। वहीं इंटरबैंक विदेशी मुद्रा बाजार में भारतीय रुपया डॉलर के मुकाबले 83.25 पर खुला और फिर 83.24 के शुरुआती उच्च स्तर और ग्रीनबैक के मुकाबले 83.26 के निचले स्तर पर पहुंचा। वहीं शुक्रवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया 83.25 पर बंद हुआ था।

त्योहारी सीजन में सोना 61 हजार और चांदी 72 हजार

नई दिल्ली । सोने और चांदी के वायदा भाव सोमवार को शुरुआत में तेजी के साथ खुले। सोने के वायदा भाव अब बढकर 61 हजार और चांदी के वायदा भाव 72 हजार रुपये से ऊपर कारोबार कर रहे हैं। सोने के वायदा भाव 2,000 डॉलर को पार कर चुका है। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमएसएक्स) पर सोने का दिसंबर कॉन्ट्रेक्ट 240 रुपये की तेजी के साथ 61,396 रुपये के भाव पर खुला। फिलहाल यह कॉन्ट्रेक्ट 213 रुपये की तेजी के साथ 61,369 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। इस समय इसने 61,396 रुपये के भाव पर दिन का उच्च स्तर और 61,320 रुपये के भाव पर निचला स्तर छू लिया। मई महीने में सोने के वायदा भाव ने 61,845 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर सर्वोच्च स्तर छू लिया था। एमसीएक्स पर चांदी का बेंचमार्क दिसंबर कॉन्ट्रेक्ट 122 रुपये की तेजी के साथ 71,839 रुपये के भाव पर खुला।` फिलहाल यह कॉन्ट्रेक्ट 604 रुपये की तेजी के साथ 72,321 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। इस समय इसने 72,468 रुपये के भाव पर दिन का उच्च और 71,839 रुपये प्रति किलो के भाव पर दिन का निचला स्तर छू लिया। वैश्विक बाजार में भी कॉमेक्स पर सोना 2013.50 डॉलर प्रति औंस के भाव पर खुला। पिछला बंद भाव 1998.50 डॉलर था। फिलहाल यह 13.30 डॉलर की तेजी के साथ 2011.90 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार कर रहा था। कॉमेक्स पर चांदी के वायदा भाव 23.24 डॉलर के भाव पर खुले, पिछला बंद भाव भी 22.88 डॉलर था।` फिलहाल यह 0.35 डॉलर की तेजी के साथ 23.24 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार कर रहा था।

अल्ट्राटैक सीमेंट उत्पादन बढ़ाने करेगी 13,000 करोड़ का निवेश

नई दिल्ली । सीमेंट उत्पादक अल्ट्राटेक ने अपनी बढ़ोतरी के तीसरे चरण में अपनी क्षमता में 2.19 करोड़ टन प्रति वर्ष की बढ़ाने के लिए 13,000 करोड़ रुपये का निवेश करने की घोषणा की। आदित्य बिड़ला समूह की कंपनी अल्ट्राटेक के निदेशक मंडल ने कंपनी की उत्पादन क्षमता के विस्तार के तीसरे चरण पर 13,000 करोड़ रुपये का निवेश करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी। इसमें चार नई इकाइयां लगाने के अलावा इतनी ही पुरानी इकाइयों का विस्तार भी किया जाएगा। कंपनी ने कहा कि इस विस्तार के बाद उसकी कुल उत्पादन क्षमता बढ़कर 18.2 करोड़ टन प्रति वर्ष हो जाएगी। इसकी मौजूदा क्षमता 13.24 करोड़ टन है। दुनिया की तीसरी बड़ी सीमेंट कंपनी अल्ट्राटेक ने कहा कि तीसरे चरण में स्थापित होने वाली नई परियोजनाओं से वाणिज्यिक उत्पादन वित्त वर्ष 2025-26 से शुरू होगा। आदित्य बिड़ला समूह के चेयरमैन कुमार मंगलम बिड़ला ने कहा कि यह निवेश भारत की वृद्धि में अल्ट्राटेक की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। बीते सात वर्षों में कंपनी ने भारत की ढांचागत जरूरतों को पूरा करने पर 50,000 करोड़ रुपये से अधिक निवेश किया है।

शेयर बाजार बढ़त पर बंद

सेंसेक्स 330 , निफ्टी 93 अंक ऊपर आया

मुम्बई ।

घरेलू शेयर बाजार सोमवार को तेजी के साथ बंद हुआ। सप्ताह के पहले ही कारोबारी दिन बाजार में ये उछाल दुनिया भर से मिले-जुले संकेतों के बाद भी दिग्गज कंपनियों की खरीददारी के कारण आया है। आज कारोबार के दौरान रिलायंस इंडस्ट्रीज, भारती एयरटेल, आईसीआईसीआई बैंक, एचडीएफसी बैंक, एलएंडटी और टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज टीसीएस के शेयरों में भारी उछाला आया जिसका लाभ बाजार को मिला। आज के कारोबार के दौरान व्यापक बाजारों में सुधार की प्रक्रिया धीमी रही। बीएसई मिडकैप और स्मॉलकैप सूचकांकों में 0.13 फीसदी और 0.06 फीसदी की बढ़त दर्ज की गयी। दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों वाला बीएसई मानक सूचकांक सेंसेक्स 329.85 अंक करीब 0.52 फीसदी बढ़कर 64,112 अंक पर बंद हुआ। वहीं कारोबार के दौरान सेंसेक्स 64,184 तक ऊपर जाने के बाद 63,431 तक फिसला। वहीं दूसरी ओर पचास शेयरों वाला नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 93.65 अंक तकरीबन 0.49 फीसदी ऊपर आने के बाद अंत में 19,140 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान निफ्टी 19,158 तक ऊपर जाने के बाद 18,940 तक गिरा। आज के कारोबार में सेंसेक्स के शेयरों में से 16 शेयर लाभ के साथ ही उछले। अल्ट्राटेक सीमेंट, रिलायंस, आईसीआईसीआई बैंक, भारती एयरटेल और एचडीएफसी बैंक सबसे अधिक लाभ वाले पांच शेयरों में शामिल रहे। सबसे ज्यादा लाभ अल्ट्राटेक सीमेंट के शेयरों को 2.44 फीसदी हुआ।

वहीं, दूसरी ओर सेंसेक्स के शेयरों में 14 शेयर नुकसान के साथ ही लाल निशान पर बंद हुए। टाटा मोटर्स, मारुति, एक्सिस बैंक, एमएंडएम और आईटीसी सेंसेक्स के सबसे अधिक नुकसान वाले पांच शेयरों में रहे। सबसे ज्यादा नुकसान टाटा मोटर्स के शेयरों को 1.94 फीसदी हुआ। इससे पहले आज सुबह वैश्विक बाजारों से मिले कमजोर रुख तथा विदेशी कोषों की सतत निकासी के बीच ही शुरुआती कारोबार में घरेलू शेयर बाजार गिरावट के साथ खुले। बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स शुरुआती कारोबार में 179.06 अंक नीचे आकर 63,603.74 अंक पर आ गया। वहीं नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी 49.26 अंक के नुकसान से 18,998 अंक पर कारोबार कर रहा था।

एलजी की दमदार बैटरी लाइफ के साथ ऑडियो स्पीकर सीरीज लॉन्च

नई दिल्ली। एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स ने भारत में उन्नत बैटरी लाइफ के साथ एक नई ऑडियो स्पीकर सीरीज एलजी एक्सबूम लॉन्च की। एलजी एक्सबूम में दो मॉडल - एक्सएल 7एस और एक्सएल 5एस शामिल हैं, जो 54,990 रुपये और 44,990 रुपये की शुरुआती कीमत पर उपलब्ध होंगे। एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया के होम एंटरटेनमेंट के निदेशक हाक ह्यून किम ने कहा, उत्कृष्ट विशेषताओं, मजबूत ध्वनि और मनमोहक प्रकाश प्रभावों के साथ नई एलजी एक्सबूम सीरीज समारोहों, अवसरों और रोजमर्रा के आनंद लेने वालों के लिए शीर्ष पसंद के रूप में तैयार है। कंपनी के अनुसार, एलजी एक्सबूम में एक्सएल 7एस की बैटरी लाइफ 20 घंटे तक है, जबकि एक्सएल 5एस की बैटरी लाइफ 12 घंटे है, और दोनों स्पीकर में आईपीएक्स 4 वॉटर रेसिस्टेंट रेटिंग है। उपयोगकर्ता कराओके सत्रों के लिए भी स्पीकर का उपयोग कर सकते हैं और यहां तक कि एक गिटार भी कनेक्ट कर सकते हैं और अपने स्वयं के ध्वनिक संगीत कार्यक्रम की मेजबानी कर सकते हैं। यूजर्स एक्सबूम ऐप पर माई पिक सुविधा का भी उपयोग कर सकते हैं। 250 वॉट आउटपुट के साथ, एक्सएल 7एस मॉडल बड़ी सभाओं के लिए बनाया गया है। 20.32 सेमी विशाल वूफर की विशेषता वाला यह स्पीकर अधिक शक्तिशाली बास प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया है, जो एक गहरी और बोल्ड ध्वनि प्रदान करता है। इसके अलावा, एलजी एक्सबूम एक्सएल 5एस 16.51 सेमी विशाल वूफर के साथ आता है, जो शक्तिशाली बास प्रदान करता है जो किसी भी स्थान के लिए मंच तैयार करता है।कंपनी ने कहा कि स्पीकर डायनेमिक बास ऑप्टिमाइजर से लैस हैं।

नीता अंबानी को मिला ग्लोबल लीडरशिप अवॉर्ड

- नीता अंबानी ने कहा, देश के छोटे बच्चे सभी के लिए शिक्षा और खेल की सुविधाएं होनी चाहिए

नई दिल्ली ।

रिलायंस फाउंडेशन की फाउंडर एवं चेयरपर्सन नीता अंबानी को ग्लोबल लीडरशिप अवॉर्ड दिया गया। यह अवार्ड उन्हें यूएस इंडिया स्ट्रैटेजिक पार्टनरशिप फोरम (यूएसआईएसपीएफ) द्वारा दिल्ली में आयोजित एक समारोह में फोरम के अध्यक्ष जॉन चैंबर्स ने दिया। इस दौरान भारत सरकार के वरिष्ठ अधिकारी और बिजनेस लीडर्स उपे स्थित थे। ग्लोबल लीडरशिप अवॉर्ड के बाद नीता अंबानी ने कहा कि मैं यह पुरस्कार पाकर बेहद सम्मानित और गौरवान्वित महसूस कर रही हूं, रिलायंस फाउंडेशन के रूप में हम भारत में 75 मिलियन लोगों तक पहुंच चुके हैं और जो चीज मेरे दिल के सबसे करीब है, वह है महिलाओं को सशक्त बनाना, उन्हें शिक्षित करना। देश के छोटे बच्चे सभी के लिए शिक्षा और खेल की सुविधाएं होनी चाहिए। प्रत्येक बच्चे को खेलने और सीखने का अधिकार होना चाहिए। हम 40 साल के अंतराल के बाद ओलंपिक आंदोलन को अपने देश में वापस लाए, आईओसी ने क्रिकेट को ओलंपिक खेल बना दिया। उन्होंने कहा कि 128 साल बाद क्रिकेट ओलंपिक में शामिल किया जा रहा है। अमेरिका के लॉस एंजल्स में होने वाले 2028 ओलंपिक में क्रिकेट भी खेला जाएगा। जिस तहर से क्रिकेट को अमेरिका तक ले जा रहा है, हम भी भारत में बेसबॉल ला सकते हैं। खेलों का आदान-प्रदान सपनों और दोस्ती का आदान-प्रदान है। यह दृढ़ता और लचीलेपन दोनों की कहानी है। लीडरशिप अवॉर्ड सेरेमनी के दौरान मंच पर नीता अंबानी के साथ युवा बैडमिंटन सनसनी सायना नेहवाल भी मौजूद रहीं। बता दें कि भारत की महिला बैडमिंटन खिलाड़ियों में सायना का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। इनके बाद अब पीवी सिंधु समेत कई युवा हैं जो युवा महिला खिलाड़ियों को प्रेरित कर रही हैं।

10 साल बाद टर्किश एयरलाइंस ने श्रीलंका के लिए शुरू की सीधी उड़ान

कोलंबो। एयरपोर्ट एंड एविएशन सर्विसेज श्रीलंका लिमिटेड के अध्यक्ष जी.ए. चंद्रसिरी ने कहा, एक दशक के बाद टर्किश एयरलाइंस ने श्रीलंका और इस्तांबुल के बीच सीधी उड़ानें शुरू कर दी हैं। समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, तुर्की विमान के श्रीलंका पहुंचने के अवसर पर एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए चंद्रसिरी ने कहा कि दोनों देशों के बीच सप्ताह में चार उड़ानें संचालित होंगी। उन्होंने कहा, 2024 से तुर्की एयरलाइंस की उड़ानें सप्ताह के सभी सातों दिन श्रीलंका पहुंचेंगी। तुर्की से यात्रियों की संख्या अब 300 प्रतिशत बढ़ जाएगी। श्रीलंका के पर्यटन और भूमि मंत्री हरिन फर्नांडो ने भी कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि श्रीलंका 2024 में 2.5 मिलियन पर्यटकों को आकर्षित करने की योजना बना रहा है। श्रीलंका के पर्यटन उद्योग का लक्ष्य 2023 में 2 मिलियन पर्यटकों को आकर्षित करने का है, जबकि पिछला लक्ष्य 1.5 मिलियन का था।

श्रृंगार आपके व्यक्तित्व में लगाए

चार चांद

शादियों का मौसम शुरू हो गया है। ऐसे में सजने-संवरने की आकांक्षा को पंख लग ही जाते हैं। कुछ बातों का ध्यान रख कर आप ऐसे मौसम में अपनी खूबसूरती को और निखार सकती हैं। पारंपरिक श्रृंगार आपके रूप-रंग में चार-चांद लगा देते हैं। यदि आप भी पारंपरिक रंग में अपने आप को रंगने की सोच रही हैं तो ऐसे मौके पर लहंगा, साड़ी या सूट को अपने लिए चुन सकती हैं।

परफेक्ट शुरुआत के लिए सबसे पहले फेस प्राइमर लगाएं। इसे लगाने से चेहरे की छोटी-छोटी खामियां जैसे फाइन लाइन्स, ओपन पोर्स और पिट्स भर जाएंगे और मेकअप भी लंबे समय तक टिका रहेगा। सर्दियों के इस मौसम में बेस ऐसा हो, जो आपकी त्वचा को फ्लॉलैस लुक देने के साथ-साथ उसे मॉइश्चराइज भी करें। ऐसे में फाउंडेशन के तौर पर टिंटिड मॉइश्चराइजर लगाएं। इससे त्वचा मुलायम हो जाएगी और ग्लोइंग नजर आएगी। त्वचा पर यदि कोई एक्ने या स्कॉर्स है तो उसे कंसीलर की मदद से कंसील कर लें।

अपनी त्वचा टोन से मैच करता ब्लशऑन लगाएं। जैसे गोरे मुखड़े पर पिंक कलर का ब्लशऑन इस्तेमाल करें और यदि सांवली हैं तो आप पर पीच शेड का ब्लशर बहुत अच्छा लगेगा। नाक के दोनों साइड, चीक्स बोंस और डबल चिन को छुपाने के लिए डार्क ब्राउन शेड के ब्लशऑन से कॉन्टोरिंग कर लें। इससे आपका फेस पतला नजर आएगा। चीक्स बोन्स पर हाइलाइटर जरूर इस्तेमाल करें।

इन दिनों ऑरेंज, रेड और वाइन शेड काफी चलन में हैं। अपनी आंखों को इन शेड्स से सजाएं और आईब्रोज के नीचे वनीला शेड से हाइलाइट करें। ये इस मौसम में और भी खूबसूरत लगेंगे। इसलिए आई-मेकअप करते वक्त इन्हें जरूर शामिल करें। अपनी आंखों को ब्लैक जैल आइलाइनर से खूबसूरत शेप दें और आंखों में काजल जरूर लगाएं।

इस मौके पर आंखों के आउटर या इनर कॉर्नर पर स्वरोस्की का इस्तेमाल करने से आई-मेकअप और भी खूबसूरती से उभर कर आएगा। पलकों पर मसकारा का डबल कोट लगाकर उन्हें लंबा व खूबसूरत दिखाएं।

लिप्स का पूरा ध्यान रखें

आंखों पर डार्क मेकअप करने के बाद लिप्स पर ब्रॉन्ज या रस्ट शेड की लिपस्टिक लगाएं। इसके बाद लिप सीलर से लिप्स को सील कर दें। इसे लगाने से लिपस्टिक देर तक टिकी रहेगी और लिप्स शाइन भी करेंगे। अपने श्रृंगार में पूरी तरह ट्रेडिशनल लुक लाने के लिए बिंदी भी लगा सकती हैं। ब्रेड्स इन दिनों काफी चलन में हैं। बालों में फिशटेल, फ्रेंच चोटी या साइड चोटी बनाएं और चोटी को स्वरोस्की जडिम्त हेयर एक्सेसरीज से सजाएं। बालों में कलर्स करवाकर उसे खुले छोड़ सकती हैं। फ्रंट से हाई पफ बनाकर एक साइड से टक कर लें और दूसरे साइड पर कलर्स रख लें। टक करने के लिए हेयर एक्सेसरीज का इस्तेमाल करें।

सफर में भी खूबसूरत!

समंदर का खारा पानी, रेगिस्तान की बालू, ट्रैकिंग की थकावट और बर्फीली हवाएं। इस बार छुट्टियां जहां भी प्लान कर रही हों, कीजिए और त्वचा की चिंता भूल जाइए। क्योंकि कुछ आसान सी बातों को ध्यान में रखकर आप अपनी खूबसूरती बरकरार रख सकती हैं

त्योहारों की छुट्टियां भले ही अभी हाल ही में खत्म हुई हों, पर आने वाले दिनों में छुट्टी का प्लान पक्का है। आपने अभी से ही प्लानिंग भी शुरू कर दी होगी। क्या आपने सोचा है कि छुट्टियों में आपकी त्वचा का ध्यान कौन रखेगा? जब छुट्टियों में कहीं बाहर जाएं तो इन बातों को ध्यान में रखें, ताकि सफर में भी आपकी त्वचा मुस्कुराती रहे -

पानी से निखरेगी त्वचा

लम्बी दूरी की ट्रिप पर हों या फिर एक-दो दिन की छोटी ट्रिप पर, कभी ज्यादा धूप तो कभी मौसम के बदलने का असर सीधा त्वचा पर होता है। इसलिए जरूरी है कि सफर के दौरान आप खूब सारा पानी पिएं। त्वचा को नमी पहुंचाने के लिए पानी से बेहतर कुछ और नहीं। ओरीफ्लेम इंडिया की ब्यूटी एंड मेकअप एक्सपर्ट आकृति कोचर कहती हैं, 'ट्रैवलिंग के दौरान ताजे फल और सब्जियां भी बेहतरीन ब्यूटी टीट्रमेंट साबित हो सकते हैं।'

मॉइस्चराइजर, सन ब्लॉक रखेंगे खयाल

अपने हैंडबैग में एक मॉइस्चराइजर और सन ब्लॉक हमेशा रखें। यह आपकी त्वचा का ध्यान रखेंगे और आप अपने सफर का मजा ले पाएंगी। समय-समय पर इन्हें त्वचा पर जरूर लगाएं।

सेनीटाइजर भी रखिए याद

यह कहना सही होगा एक एंटी बैक्टीरियल सैनीटाइजर आपके लिए सबसे जरूरी चीज होनी चाहिए। चाहे आप ट्रैकिंग कर रही हों या फिर हवाई यात्रा कर रही हों, हाथ गंदे तो हो ही जाते हैं। ऐसे में समय-समय पर हैंड सैनीटाइजर का इस्तेमाल करना बहुत जरूरी है। हाथ साफ होंगे तो बहुत सारी चीजों पर अच्छा असर पड़ेगा। हाथों की गंदगी आपके चेहरे पर नहीं लगेगी और आप बाहर से ही नहीं, अंदर से भी स्वच्छ रहेंगी।

हर 6 घंटे हो फेस वॉश

जब त्वचा में एक्सट्रा ऑयल इकट्ठा हो जाते हैं तो यह मुहांसों और दाग-धब्बों का कारण बनता है। इसलिए कहीं भी ट्रैवल करें, तो हर छह घंटे पर चेहरा धोना न भूलें। ज्यादा लम्बी दूरी पर जा रही हैं तो एक एंटी बैक्टीरियल फेस वॉश आपके लिए बेहद जरूरी है।

ऑयली स्किन है तो

ऐसे में फेस वॉश और सेनीटाइजर के साथ आपके पास टोनर भी होना जरूरी हो जाता है। आकृति कहती हैं कि टोनर या एस्ट्रीजेंट को साथ रख कर त्वचा को हेल्दी और साफ रखा जा सकता है। ब्लॉटिंग पेपर को भी एक्स्ट्रा ऑयल निकालने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। त्वचा पर तेल इकट्ठा नहीं होगा तो मुहांसे और दानों से भी आपकी त्वचा सुरक्षित रहेगी।

मेकअप टिप्स भी रखिए याद

ट्रैवलिंग के दौरान मेकअप कम से कम होना चाहिए। सबसे पहले तो त्वचा के मुताबिक मॉइस्चराइजर का इस्तेमाल करें। फिर कॉम्पेक्ट या पाउडर फाउंडेशन इस्तेमाल करें। पर, याद रखें कि यह मैट फिनिश वाले हों। त्वचा को हेल्दी ग्लो देने के लिए मैट फिनिश वाले साफ्ट पिंक या कोरल ब्लश का इस्तेमाल करें।

हॉट पार्टी

न्यू ईयर ईव के लिए आप वॉयलैट, ब्लैक, मैरून, पर्पल, क्रिमसन रैड कलर की कॉकटेल ड्रैस ट्राई कर सकती हैं। यदि आप साड़ी वियर कर रही हैं, तो लाइट शेड व बार्डर वाली प्लेन साड़ी पहनें, इससे आपको सॉफिस्टिकेटेड लुक मिलेगी और साथ ही आपफी होकर पार्टी एंज्वॉय कर सकेंगी। अगर आपको सर्दी का डर सता रहा है तो ट्राऊजर्स के साथ लांग स्टाइलिश कोट और मफलर पहन सकती हैं। इनके साथ बूट पहनना न भूलें। स्कर्ट के साथ फर जैकेट पहनें और साथ ही ट्राई करें कैप या हैट। लॉन्ग बूट्स स्कर्ट्स के साथ बहुत बढ़िया दिखते हैं।

कूल सीजन में खुद को हॉट बनाए रखने के लिए अपना फैशन स्टेटमैंट भी खूबसूरती के साथ ट्राई करें। पर्सनैलिटी से सूट करती ड्रैस व मेकअप करें तो पार्टी में आम से खास दिख सकती हैं। अगर आप न्यू ईयर ईव पर ज्यादा एक्सपैरीमैंट्स नहीं करते हुए कैजुअल लुक ही कैरी करना चाहती हैं तो भी आप बिंदास नजर आ सकती हैं। इस दौरान यह ध्यान रखें कि आप जो भी पहनें वह आप पर सूट करे और डिसैंट लुक दे। अधिक एक्सपोज करने वाली ड्रैस पहनने से बचें।

पार्टी ड्रैस

थोड़ा-सा क्रिएटिव होकर आप पार्टी की सैंटर ऑफ अट्रैक्शन बन सकती हैं। हां, लेकिन पार्टी पर जाने से पहले यह जरूर चैक कर लें कि आपकी पार्टी के लिए कोई थीम या ड्रैस कोड तो निर्धारित नहीं किया गया है। ड्रैस वही कैरी करें, जो आपकी पर्सनैलिटी को सूट करती हो और आपको डीसैंट लुक दे। पार्टी में हैवी ड्रैसेका की बजाय लाइट ड्रैसेस कैरी करना मुनासिब होगा। हैवी एम्ब्रायड्री या वर्क वाली ड्रैस पहनने से आप एंटरटेनमैंट और एंज्वायमैंट के माहौल में कंफर्ट महसूस नहीं कर पाएंगी। न्यू ईयर ईव के लिए आप वॉयलैट, ब्लैक, मैरून, पर्पल, क्रिमसन रैड कलर की कॉकटेल ड्रैस ट्राई कर सकती हैं। यदि आप साड़ी वियर कर रही हैं, तो लाइट शेड व बार्डर वाली प्लेन साड़ी पहनें, इससे आपको सॉफिस्टिकेटेड लुक मिलेगी और साथ ही आपफी होकर पार्टी एंज्वॉय कर सकेंगी। अगर आपको सर्दी का डर सता रहा है तो ट्राऊजर्स के साथ लांग स्टाइलिश कोट और मफलर पहन सकती हैं। इनके साथ बूट पहनना न भूलें। स्कर्ट के साथ फर जैकेट पहनें और साथ ही ट्राई करें कैप या हैट। लॉन्ग बूट्स स्कर्ट्स के साथ बहुत बढ़िया दिखते हैं। स्टाइलिश वूलन स्टोल भी वैस्टर्न आऊटफिट के साथ कैरी कर सकती हैं। अगर आप न्यू ईयर ईव पर ज्यादा एक्सपैरीमैंट नहीं करते हुए कैजुअल लुक ही कैरी करना चाहती हैं तो ट्रैंडी कुर्ती के साथ वूलन लैगिंग्स में भी आप बिंदास नजर आ सकती हैं। अगर आप न्यू ईयर पार्टी में मस्ती करने के मूड में जा रही हैं और बिल्कुल फ्री स्टाइल चाहती हैं, तो आपको पुराना लुक कैरी करने की जरूरत नहीं है, बल्कि कुछ नया आजमाना चाहिए। इस बार इंडो-वैस्टर्न लुक ट्राई करें। बेशक यह अंदाज आपको डिफरैंट लुक्स देने के साथ पार्टी में कंफर्ट भी देगा।

ज्यूलरी

गुड लुक के लिए परफैक्ट ज्यूलरी का होना बहुत जरूरी है। अच्छी ज्यूलरी से डल ड्रैस को भी स्मार्ट लुक दिया जा सकता है। यदि ड्रैस को ध्यान में रखकर ज्यूलरी पहनेंगी, तो ज्यादा फैशनेबल और स्टाइलिश दिखेंगी। ज्यूलरी कुछ डिफरैंट होनी चाहिए ताकि जब आप पार्टी में जाएं, तो लोग आप पर से अपनी निगाहें हटा ही न सकें। ज्यूलरी के फ्रैश ट्रैंड्स को एलिगैंस के साथ कैरी करें।

नैकपीस

अगर कानों में कुछ पहन रही हैं तो नैक को खाली रखें और अगर नैक में कुछ पहन रही हैं तो कानों में कुछ न पहनें। इससे आपके खूबसूरत नैकपीस या ईयररिंग्स दूसरों को अपनी ओर अट्रैक्ट कर पाएंगे। वैस्टर्न ड्रैस के साथ लॉन्ग सिंगल पर्ल नैकलैस पहना जा सकता है। हॉल्टर और हाई नैक के साथ एक मोती का नैकलाइन इस्तेमाल किया जा सकता है। आप नैकपीस को स्टेटमैंट ज्यूलरी बना रही हैं, तो यह सिंगल स्ट्रिग से लेकर दो, तीन या मल्टीपल स्ट्रिंग्स में हो सकती है। इसके अलावा ट्रांसपैरैंट थ्रैड में बड़े स्टोंस वाले नैकपीस फैशन में है।

कूल लुक

ईयर रिंग्स

ईयर रिंग्स से लुक्स में इंस्टैंट चेंज आता है। इन दिनों बहुत ही खूबसूरत और अफोर्डेबल ईयर रिंग्स की रेंज बाजारों में उपलब्ध है। आप अपनी ड्रैस के स्टाइल और रंग के हिसाब से इनका चयन कर सकती हैं। बस यह ध्यान रखें कि लॉन्ग ईयररिंग्स पहनें, यानी आपकी मिड नैक तक आते हों। मैटल या ऑक्सीडाइज्ड सिल्वर के बड़े ईयररिंग्स पहन सकती हैं। इंडियन ड्रैस के साथ ट्रैडीशनल और एथनिक लुक में कुंदन, पोलकी, रंगीन क्रिस्टल, मोती और बीड्स वाले ईयररिंग्स अच्छे लगेंगे। एंटीक ज्यूलरी का ऑप्शन भी आपको कुछ डिफरैंट लुक दे सकता है। जंक ईयररिंग्स वैस्टर्न ड्रैस पर खूब जंचते हैं। इससे आपका चेहरा ज्यादा सुंदर दिखेगा और अटैंशन भी हासिल करेगा।

रिंग्स

वैसे तो हर महिला हाथ में एक-दो रिंग्स हमेशा कैरी करती है, लेकिन पार्टी पर आपका अंदाज रूटीन से कुछ अलग होना चाहिए। मार्कीट में खूबसूरत रिंग्स की भी खूब वैरायटी मिल जाएगी। आजकल रंग-बिरंगे पत्थरों की बनी रिंग्स काफी पसंद की जा रही हैं,जो सिम्पल और हैवी दोनों लुक्स में मौजूद हैं। इन्हें आप अपनी ड्रैस के रंग के अनुसार पहन सकती हैं।

बैंगल्स

दोनों हाथों की बजाय सिर्फ एक ही हाथ में एकसैसरी पहनें। इंडियन ड्रैस पहन रही हों, तो हाथों के लिए ड्रैस से मेल खाती गोल्डन या सिल्वर मिक्स्ड बैंगल्स पहनें। आप जड़ाऊ या स्टोन वाले ब्रेसलेट को भी अपनी फैशनेबल वैस्टर्न ड्रैस के साथ कैरी कर सकती हैं। स्टाइलिश वुडन आर्ट के लिए वुडन बैंगल्स भी ट्राई कर सकती हैं।

एंकलेट्स

एंकलेट्स यानी पायल का आजकल युवाओं में काफी क्रेज है। खूबसूरत एंकलेट्स ट्रैडीशनल और एथनिक लुक के साथ ही कैजुअल लुक में सुंदर दिखेंगी। ये कई रंगों में मौजूद हैं जिन्हें ट्रैडीशनल सलवार-कमीज, साड़ी, चूड़ीदार के साथ ही स्टाइलिश स्कर्ट के साथ भी पहना जा सकता है। आप एंकलेट्स ब्रेसलेट भी ट्राई कर सकती हैं।

बच्चे का गुस्सा नहीं है अच्छा

आजकल के बच्चों को भी तुरंत गुस्सा आता है। छोटी-छोटी बातों पर कहासुनी तक तो ठीक है, पर अगर आपका बच्चा मारपीट करके घर आ रहा है तो आपको इस बात को गंभीरता से लेना होगा। यह जानना होगा कि इस व्यवहार के पीछे क्या कारण है और उसमें सुधार कैसे संभव है। अगर समय पर आपने सही कदम नहीं उठाया तो भविष्य में आपकी परेशानी बढ़ सकती है।

च्चे तो शरारती होते ही हैं। पर वे जितना शरारत में तेज होते हैं उतना ही पढ़ाई और दूसरे कामों में भी हो सकते हैं, बशर्ते उन्हें सही दिशा मिले। आप उनकी ऊर्जा को सही दिशा में लगा सकें। अगर उन्हें कहीं से भी सही प्रोत्साहन न मिले और हमेशा उनकी गलतियों पर टोका-टाकी या डांट-फटकार ही लगाई जाए तो ऐसे बच्चे अति उत्साह में कभी-कभी गलत काम भी कर बैठते हैं। एक छोटी-सी बात पर कई बार बच्चे झगड़ा एवं मार-पीट करते हैं और एक-दूसरे को हानि पहुंचा देते हैं।जब इस तरह की घटनाएं बढ़ने लगती हैं तो बच्चे का व्यवहार भी आक्रामक होता जाता है।

दरअसल, बचपन में मां-बाप और शिक्षक बच्चे को कुम्हार की तरह उनके विचारों को रचते हैं। इसलिए मां-बाप और शिक्षकों को समय-समय पर सही और गलत के ज्ञान के साथ-साथ हर परिस्थिति में सामंजस्य बैठाना सिखाना चाहिए। बच्चों में स्कूल, घर और बाहर में कई कारणों से झगड़े होते हैं जो कई बार उग्र रूप ले सकते हैं। इन झगड़ों में किसी बच्चे की चीज उससे बिना पूछे लेना, सहपाठियों का मजाक उड़ाना, खुद शरारत करके दूसरे बच्चे का नाम लगा देना, सहपाठी या दोस्त को थप्पड़ मार देना आदि आम है। पर, अगर सही समय पर इन गलत आदतों को न रोका जाए तो ये बच्चे के व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाती हैं। कई बार बच्चा घर के सदस्यों को छोटी-छोटी बात पर झगड़ते देखता है तो वो बातें उसके दिमाग में घर कर जाती हैं उसके व्यवहार में भी वो बातें आ जाती हैं। अगर घर में एक बच्चे को दूसरे बच्चे से ज्यादा तवज्जो मिले या फिर घर में बड़े-बुजुर्ग अधिक लाड़-प्यार में बच्चों के गलत बातों को नजरअंदाज कर दें, तो भी ऐसा होता है।

मैं नहीं हूं लड़ाकू

बच्चों को छोटी-छोटी बातें सिखानी चाहिए। जैसे गलती करने पर सॉरी बोलना या गलती मानना। किसी दूसरे का सामान इस्तेमाल करने से पहले उससे पूछना। ऊंची आवाज में बात नहीं करना आदि। उनके गलत व्यवहार को इस तरह से समझाना कि यदि उनके साथ कोई ऐसा करे तो उन्हें कैसा लगेगा। बच्चों को दूसरों की वस्तुओं की कद्र करना सिखाना चाहिए। आपको अपने बच्चे को यह सिखाना होगा कि नकारात्मक परिस्थिति में उसे कैसा व्यवहार करना चाहिए। अगर वह बहुत नाराज है तो उसे समझाना चाहिए कि वह अपने गुस्से पर कैसे काबू रखे, जैसे थोड़ी देर चुप रहना, कहीं और देखना, पानी पीना या थोड़ी देर के लिए वहां से चले जाना, उल्टी गिनती गिनना इत्यादि। आप उसके लिए स्वयं को उदाहरण बनाकर पेश करें। बच्चों की अपनी बुराई सुनना सिखाना चाहिए। इससे भविष्य में अगर कोई उसके सामने ही उसकी बुराई करेगा, तो वह उत्तेजित नहीं होगा और उसे सकारात्मक तौर पर लेगा। संभव है कि अपनी बुराई सुनकर वह खुद में सकारात्मक बदलाव लाने की कोशिश भी करे। बच्चा चिड़चिड़ापन या झगड़ालू व्यवहार का ना हो इसके लिए घर में हर समय खुशी का माहौल होना चाहिए। घर में ज्यादा से ज्यादा समय एक दूसरे के साथ गुजारें। हर छोटी-सी खुशियां शेयर करें। बच्चों को मार-पीट से दूर रहने की सलाह दें। झगड़ालू या दबंग बच्चों से दोस्ती न रखने की सलाह दें। उनकी संगत पर नजर रखें।

कॉर्बेट टाइगर रिजर्व की बिजरानी रेंज में बाघिन की मौत से मचा हड़कंप

रामनगर । कॉर्बेट टाइगर रिजर्व की बिजरानी रेंज में एक बाघिन की मौत होने के समाचार मिले हैं । जानकारी के अनुसार कॉर्बेट टाइगर रिजर्व की बिजरानी रेंज में गश्ती दल को रहस्यमयी परिस्थितियों में एक बाघिन का शव मिलने से महकमे में हड़कंप मच गया, जिसकी सूचना गश्ती दल ने आलाधिकारियों को दी । मौके पर पहुंचे कॉर्बेट के अधिकारियों ने घटनास्थल का मुआयना किया । इस मामले में बिजरानी रेंज के एक वन अधिकारी ने बताया कि एनटीसीए की गाइडलाइन के अनुसार, बाघिन के शव का पोस्टमार्टम कराया गया । बीते शनिवार को शाम साढ़े पांच बजे कार्बेट टाइगर रिजर्व की बिजरानी रेंज के तहत बिजरानी दक्षिणी बीट मलानी ब्लॉक क.सं.18 बिजरानी चीड क्षेत्र में हाथी गश्ती दलों को एक बाघिन का शव पड़ा मिला, जिसके बाद वनकर्मियों द्वारा घटना से उच्चाधिकारियों को अवगत कराया गया । उन?होंने बताया कि सूचना पाकर वन अधिकारी मौके पर पहुंचे और घटनास्थल का मौका मुआयना किया । इसके बाद बाघिन के शव का पोस्टमार्टम के लिए एक पैनल का गठन किया गया है । पैनल में डॉ. दुष्यंत शर्मा, वरिष्ठ पशु चिकित्साधिकारी, कार्बेट टाइगर रिजर्व, डॉ. आयुष उनियाल, पशु चिकित्साधिकारी, पश्चिमी वृत्त, हल्द्वानी, एजी अंसारी, एनटीसीए द्वारा नामित प्रतिनिधि तथा विश्व प्रकृति निधि के प्रतिनिधि कृतिका भावे आदि शामिल थे । वरिष्ठ पशु चिकित्साधिकारी द्वारा बाघिन के शव का पोस्टमार्टम किया गया । बाघिन की उम्र लगभग 15 वर्ष थी । मौके पर बाघ के नाखून, दांत, हड्डियों इत्यादि सभी अंग सुरक्षित पाए गए हैं । पोस्टमार्टम के बाद बाघिन के शव को राष्ट्रीय व्याघ्र संरक्षण प्राधिकरण के निर्धारित मानकों के अनुसार जलाया गया । मृत मादा बाघ के अंगों के सैम्पल एकत्र कर परीक्षण के लिए भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून भेजा जा रहा है । मृत मादा बाघ की मौत किन कारणों से हुई, इसकी जांच के लिए उप प्रभागीय वनाधिकारी, बिजरानी को जांच अधिकारी नियुक्त किया है ।

यूपी में युवती से 20 दिनों तक सामूहिक दुष्कर्म, सातों आरोपी फरार, पुलिस ने की एफआईआर दर्ज

संभल । संभल में 19 वर्षीय युवती का अपहरण कर पांच लोगों ने 20 दिनों तक उसके साथ सामूहिक बलात्कार किया । पुलिस ने कहा कि अपराध में कथित महिलाएं भी शामिल थीं । संभल कोतवाली थाने में सातों के खिलाफ विभिन्न धाराओं में एफआईआर दर्ज की गई है । मामले की जांच कर रहे एक पुलिस अधिकारी ने कहा कि सातों आरोपी फरार हैं और अभी तक कोई गिरफ्तारी नहीं हुई है । पीड़िता के मुताबिक 27 सितंबर को मोहम्मद अरशद और आसिम ने उसका अपहरण कर लिया था । दोनों उसे नशीला पदार्थ खिलाकर मुरादाबाद जिले में अपने दोस्त आशिक खान के घर ले गए, जहां तीनों ने उसके साथ दुष्कर्म किया । बाद में सोनी हुसैन और फैज़ आलम भी समूह में शामिल हो गए और उसके साथ कई बार मारपीट की । पीड़िता ने कहा कि आरोपियों को दो महिलाओं सायरा बेगम और ज़ेबा खान का समर्थन प्राप्त था । उसने कहा कि वह 12 अक्टूबर को घर से भागने में सफल रही और घर लौट आई । उसकी हालत ठीक नहीं होने पर उसके भाई ने उसे एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया । वहां से छुट्टी मिलने पर उसने पुलिस से संपर्क किया । पुलिस अधिकारी ने कहा कि एक युवती ने सात लोगों के खिलाफ अपहरण और सामूहिक बलात्कार का आरोप लगाया और प्रारंभिक जांच के बाद हमने सभी आरोपियों के खिलाफ संबंधित धाराओं के तहत प्राथमिकी दर्ज की है । पीड़िता को मेडिकल जांच के लिए भेजा गया है । आरोपियों को गिरफ्तार करने के लिए कई टीमें तैनात की गई हैं ।

तेलंगाना : वामपंथी उग्रवाद प्रभावित क्षेत्रों में 500 से अधिक मतदान केंद्रों पर कड़ी सुरक्षा होगी

हैदराबाद । छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र की सीमा से लगे तेलंगाना के वामपंथी उग्रवाद प्रभावित (एलडब्ल्यूई) इलाकों में 500 से अधिक मतदान केंद्रों पर अतिरिक्त संख्या में सुरक्षाकर्मी तैनात किए जाएंगे ताकि राज्य में 30 नवंबर को होने वाले विधानसभा चुनाव को बाधित करने की हर कोशिश को नाकाम किया जा सके । स्वतंत्र, निष्पक्ष और शांतिपूर्ण तरीके से चुनाव कराने के लिए सभी आवश्यक प्रबंध कर रहे निर्वाचन अधिकारियों ने कहा कि 119 में से 14 निर्वाचन क्षेत्रों की पहचान वामपंथी उग्रवाद के संदर्भ में संवेदनशील इलाकों के रूप में की गई है । अधिकारियों ने बताया कि छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र की सीमा से लगे तेलंगाना के आठ जिलों में लगभग 511 मतदान केंद्र ऐसे हैं जिनकी पहचान वामपंथी उग्रवाद प्रभावित इलाकों के रूप में की गई है । तेलंगाना के मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) विकास राज ने 'पीटीआई-भाषा' से कहा, 'इसी के अनुसार, राज्य पुलिस बल के अलावा केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल के जवानों को अतिरिक्त संख्या में इन इलाकों में तैनात किया जाएगा ।' उन्होंने कहा कि वामपंथी उग्रवाद प्रभावित क्षेत्रों में मतदान की अवधि अन्य क्षेत्रों की तुलना में थोड़ी भिन्न होगी । यह पूछे जाने पर कि क्या अधिकारियों को माओवादियों से किसी खतरे या हिंसा की आशंका है, सीईओ ने कहा, 'हमारे यहां ऐसी कोई घटना नहीं हुई है, इसलिए मुझे पूरी उम्मीद है कि ऐसा कुछ नहीं होगा ।' उन्होंने साथ ही कहा कि पुलिस किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना के निपटने के लिए पूरी तरह तैयार और सतर्क है । विकास राज कहा कि अब तक राज्य में केंद्रीय बलों की 100 से अधिक कंपनी आ चुकी हैं जिन्हें जांच चौकी और विभिन्न दलों की आवश्यकता के आधार पर तैनात किया गया है और वे 'फ्लैग मार्च' कर रही हैं ।

अनिश्चितकालीन अनशन पर बैठे मराठा आरक्षण कार्यकर्ता जरांगे का स्वास्थ्य जांच कराने से इनकार

मुंबई । मराठा समुदाय के लिए आरक्षण की मांग को लेकर महाराष्ट्र के जालना जिले में अनिश्चितकालीन अनशन पर बैठे सामाजिक कार्यकर्ता मनोज जरांगे ने स्वास्थ्य जांच करवाने से इनकार कर दिया है । जालना के कार्यवाहक सिविल सर्जन डॉ. प्रताप घोडके ने सोमवार को पीटीआई-से कहा कि लंबे समय तक भोजन न करने से उनके आवश्यक अंगों और स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ सकता है । मराठा समुदाय के सदस्य अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) श्रेणी के तहत सरकारी नौकरियों एवं शिक्षा में आरक्षण की मांग को लेकर प्रदर्शन कर रहे हैं । प्रदर्शन ने तब जोर पकड़ लिया जब सामाजिक कार्यकर्ता जरांगे प्रदर्शन के दूसरे चरण के तहत जालना में अंतरवाली सराटी गांव में 25 अक्टूबर से अनिश्चितकालीन अनशन पर बैठ गए । उनकी अपील पर कई ग्रामीणों ने गांव में राजनीतिक दलों के नेताओं का प्रवेश प्रतिबंधित कर दिया है । डॉ. घोडके ने कहा, ''जिलाधिकारी और चिकित्सक हर दो-तीन घंटे के बाद जरांगे से संपर्क कर रहे हैं । लेकिन हर बार उन्होंने स्वास्थ्य जांच और उपचार से इनकार कर दिया । इससे उनके जरूरी अंगों जैसे कि गुर्दे और मस्तिष्क पर असर पर सकता है । उनके शरीर में शर्करा का स्तर निम्न हो सकता है और शरीर में पानी की कमी हो सकती है ।'' उन्होंने कहा, ''हमने अंतरवाली सराटी में उनके पारिवारिक चिकित्सक के साथ तथा अन्य चिकित्सकों से संपर्क किया है ।

दुनियाभर में 650 अरब डॉलर की मादक पदार्थ तस्करी : सीबीआईसी प्रमुख

नई दिल्ली । केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीआईसी) के चेयरमैन संजय कुमार अग्रवाल ने मादक पदार्थों का वैश्विक अवैध कारोबार 650 अरब डॉलर पर पहुंचने का जिक्र करते हुए सोमवार को कहा कि अंतरराष्ट्रीय सीमा-शुल्क अधिकारियों को इन अपराधों का पता लगाने वाली उन्नत तकनीकें एवं जानकारी साझा करनी चाहिए । अग्रवाल ने यहां राजस्व आसूचना निदेशालय (डीआरआई) की तरफ से प्रवर्तन मुद्दों में सहयोग विषय पर एक वैश्विक सम्मेलन में कहा कि नशीले पदार्थों का गैरकानूनी कारोबार अब भी मजबूती से जारी है । उन्होंने कहा, ''इनकी तस्करी का आकार करीब 650 अरब डॉलर है जो कुल अवैध अर्थव्यवस्था का 30 प्रतिशत है । इसका विनाशकारी प्रभाव पड़ रहा है ।'' सीबीआईसी प्रमुख ने कहा कि गैरकानूनी कारोबार से जुड़े अपराधों का संबंध कई बार धनशोधन एवं आतंकवादी गतिविधियों के वित्तपोषण से भी होता है जो राष्ट्रीय सुरक्षा पर असर डालते हैं । उन्होंने कहा, ''निर्यात-आयात धोखाधड़ी से वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला को खतरा होने की बात हम समझते हैं और यह आर्थिक एवं राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए भी हानिकारक है । इस तरह हम अंतरराष्ट्रीय सिंडिकेट को हराने के लिए मिलकर काम करते हैं । इसके लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कानून प्रवर्तन एजेंसियों के सहयोग एवं समन्वय की निरंतर जरूरत है ।' अग्रवाल ने कहा कि इस सम्मेलन का विषय 'नेटवर्क से लड़ने के लिए नेटवर्क की जरूरत' को रेखांकित करता है । यह अवैध व्यापार पर अंकुश लगाने के लिए खुफिया जानकारी और सूचना साझा करने के महत्व पर जोर देता है ।

कांग्रेस की सत्ता बरकरार रही तो सिलेंडर रिफिल करने पर पांच सौ रुपए की सब्सिडी मिलेगी : प्रियंका

खैरागढ़ (एजेंसी)। कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वाद्रा ने छत्तीसगढ़ की जनता से वादा किया है कि राज्य में पार्टी की सरकार बरकरार रहने पर महतारी न्याय योजना लागू की जाएगी जिसके तहत प्रति सिलेंडर की रिफिल करने पर पांच सौ रुपए की सब्सिडी दी जाएगी तथा राज्य में दो सौ यूनिट तक बिजली भी मुफ्त दी जाएगी। प्रियंका ने खैरागढ़ विधानसभा क्षेत्र के जालबांधा गांव में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए महिलाओं, आम जनता और किसानों के लिए आठ घोषणाएं कीं। उन्होंने कहा, छत्तीसगढ़ की माताओं बहनों के लिए महतारी न्याय योजना लागू करेंगे, प्रति सिलेंडर की रिफिल करने पर करने पर पांच सौ रुपए की सब्सिडी दी जाएगी। राज्य में 200 यूनिट तक बिजली भी मुफ्त दी जाएगी। महिला स्व-सहायता समूहों के तथा सक्षम योजना के अंतर्गत लिए गए ऋण माफ किए जाएंगे।

आगामी वर्षों में 700 नए ग्रामीण औद्योगिक पार्कों की स्थापना की जाएगी। प्रियंका ने घोषणा की, राज्य के सभी सरकारी स्कूलों को स्वामी आत्मानंद इंग्लिश और हिंदी मीडियम स्कूलों में अपग्रेड किया जाएगा। छत्तीसगढ़ के निवासियों के सड़क दुर्घटनाओं में तथा अन्य आकस्मिक दुर्घटनाओं में घायल होने पर मुख्यमंत्री विशेष स्वास्थ्य सहायता योजना के तहत निःशुल्क इलाज किया जाएगा। परिवहन व्यवसाय से जुड़े 6,600 से अधिक वाहन मालिकों के वर्ष 2018 तक के 726 करोड़ राशि के बकाया मोटरयान कर और कर्ज के ब्याज को माफ किया जाएगा तथा राज्य के किसानों से तिवरा फसल को भी न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदा जाएगा। बाद में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर अपने हैंडल पर पोस्ट किया, हमारी गारंटी : महतारी न्याय योजना।

फिर से कांग्रेस की सरकार बनते ही छत्तीसगढ़ की माताओं एवं बहनों के लिए महतारी न्याय योजना लागू कर प्रति सिलेंडर की रिफिल करने पर 500 रुपए की सब्सिडी घर की महिला के बैंक खाते में सरकार द्वारा सीधे जमा की जाएगी।'' प्रियंका गांधी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि उन्हें बुखार है लेकिन जनता की खुशी देखकर उन्हें खुशी हो रही है। उन्होंने कहा कि वह पड़ोसी राज्य मध्य प्रदेश गई थीं लेकिन वहां की जनता खुश नहीं थी। उन्होंने कहा कि खैरागढ़ राजपरिवार और गांधी–नेहरू परिवार के बीच हमेशा से अच्छे रिश्ते रहे हैं और मुख्यमंत्री बघेल ने कांग्रेस की तरफ से उस रिश्ते को निभाते हुए खैरागढ़ को जिला बनाने की मांग पूरी की। प्रियंका ने छत्तीसगढ़ सरकार की ओर से जनता के कल्याण के लिए किए गए कामों की सराहना की और कहा कि मध्य प्रदेश की (भाजपा) सरकार के कारण वहां की जनता दुखी है।

उन्होंने कहा ''वहां की सरकार ने 22000 घोषणाएं कीं, लेकिन एक को भी पूरा नहीं किया बल्कि 220 घोटाले कर दिए।'' उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ सरकार ने राज्य में किसानों, महिलाओं, आदिवासियों, दलितों सभी के लिए काम किया। उन्होंने कहा कि पहले बस्तर नक्सल समस्या के लिए जाना जाता था लेकिन आज वह मिलेट यानी मोटे अनाज के उत्पादन के लिए जाना जाता है। प्रियंका ने जाति आधारित जनगणना की वकालत करते हुए कहा ''जब संख्या के बारे में जानकारी ही नहीं होगी तब योजनाएं कैसी बनेंगी? लोगों का विकास कैसे होगा? भाजपा केवल कहती है कि वह एसटी, एससी, ओबीसी का उत्थान करना चाहती है लेकिन जब जाति जनगणना की बात आती है तब वह साफ मना कर देती है।'' उन्होंने महिला आरक्षण विधेयक को लेकर केंद्र सरकार को घेरते हुए कहा, महिला आरक्षण विधेयक पारित कर दिया गया।

खूब प्रचार किया गया लेकिन जानकारी मिली कि यह 10 साल तक लागू नहीं होगा। प्रचार हो जाता है, पब्लिसिटी भी हो जाती है लेकिन जमीन पर काम नहीं होता है। यह इनकी राजनीति है। प्रियंका ने जनता से आग्रह किया कि वह अपने और अपने बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए कांग्रेस को वोट दें। खैरागढ़ छत्तीसगढ़ की उन 20 विधानसभा सीटों में से एक है जहां सात नवंबर को पहले चरण में मतदान होगा। अन्य 70 सीटों पर दूसरे चरण में 17 नवंबर को मतदान होगा। कांग्रेस ने खैरागढ़ सीट से मौजूदा विधायक यशोदा वर्मा को चुनाव मैदान में उतारा है।

सुप्रीम कोर्ट में राजनीतिक दलों को मिलने वाले चंदे को लेकर दिया सरकार ने बयान, कहा जानकारी हासिल करना जनता का मौलिक अधिकार नहीं

नई दिल्ली। राजनीतिक दलों को मिलने वाले चंदू को लेकर सुप्रीम कोर्ट में खास सुनवाई हो रही है। इस मामले में इलेक्टोरल बॉन्ड व्यवस्था को चुनौती दिए जाने पर सुनवाई हो रही है। अटॉर्नी जनरल अरे वेंकट रमन ने सुप्रीम कोर्ट में इस संबंध में अपना जवाब दाखिल कर दिया है। इस मामले पर केंद्र सरकार की वकील का कहना है कि किसी राजनीतिक दल को मिलने वाले चांदी की जानकारी हासिल करना नागरिकों का मौलिक अधिकार नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि चांदी की जानकारी लोगों को नहीं मिल पाती सिर्फ इस आधार पर इलेक्टोरल बॉन्ड की व्यवस्था को खारिज नहीं किया जा सकता है। बता दे कि इस मामले पर चीफ जस्टिस डी य चंद्रचूड़ की अध्यक्षता में पांच जजों की संविधान पीठ 31 अक्टूबर को सुनवाई शुरू करेगी। पांच जजों की संविधान पीठ की सुनवाई से पहले सुप्रीम कोर्ट ने अटॉर्नी जनरल से इस मामले पर राय मांगी थी। इस मामले पर अटॉर्नी जनरल ने कहा है कि राजनीतिक दलों को मिलने वाले चांदी के लिए बनाई गई इलेक्टोरल बांड की व्यवस्था एक नीतिगत विषय है। सुप्रीम कोर्ट के दखल को लेकर यह भी कहा गया कि कोर्ट सिर्फ तभी दखल देता है जब नागरिकों के मौलिक या कानूनी अधिकारों का उल्लंघन होता है। हालांकि इलेक्टरल बॉन्ड की जानकारी पाना किसी भी स्थिति में जनता का अधिकार नहीं है। बल्कि संविधान के अनुच्छेद 19 (1)(सी) के तहत संगठन बनाना और उसे चलाना मौलिक अधिकार है। संविधान के आदेश के तहत यह अधिकार राजनीतिक दलों को भी मिलता है। अटॉर्नी जनरल ने कहा कि अपने आपराधिक रिकार्ड की जानकारी उम्मीदवार चुनावी हलफनामे में उपलब्ध कराता है। फिलहाल जनता को ऐसा कोई अधिकार नहीं दिया गया है कि राजनीतिक चांदी की जानकारी उन्हें उपलब्ध कराई जाए। इस मामले में चुनाव आयोग भी अपनी राय पहले दे चुका है। इलेक्टरल बॉन्ड व्यवस्था को लेकर चुनाव आयोग ने कहा था कि इसमें पारदर्शिता नहीं है।

आतंकवाद पर सीधा संदेश, भारत की मजबूत स्वतंत्र विदेश नीति को लेकर एस जयशंकर ने क्या कहा?

नई दिल्ली (एजेंसी)। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने आतंकवाद पर सुसंगत रुख अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया और कहा कि भारत आतंकवाद पर एक मजबूत रुख रखता है क्योंकि हम आतंकवाद के बड़े पीड़ित हैं। भोपाल के एक टाउन हॉल में बोलते हुए जयशंकर ने कहा कि आज, एक अच्छी सरकार और मजबूत शासन अपने लोगों के लिए खड़ा होता है। जिस तरह घर में सुशासन जरूरी है, उसी तरह विदेश में भी सही निर्णय जरूरी है। हम इस पर मजबूत रुख अपनाते हैं। आतंकवाद क्योंकि हम आतंकवाद के बड़े पीड़ित हैं।

उन्होंने कहा कि हमारी कोई विश्वसनीयता नहीं होगी अगर हम कहें कि जब आतंकवाद हमें प्रभावित करता है, तो यह बहुत गंभीर है। जब यह किसी और के साथ होता है, तो यह गंभीर नहीं है। हमें एक सुसंगत स्थिति रखने की आवश्यकता है। भारत ने संयुक्त राष्ट्र के उस प्रस्ताव को रोक दिया था जिसमें हमास के आतंकवादी हमलों की निंदा नहीं की गई थी। जॉर्डन के प्रस्ताव में गाजा में इजरायली बलों और हमास आतंकवादियों के बीच तत्काल, टिकाऊ और निरंतर मानवीय संघर्ष विराम का आह्वान किया गया, जिस पर भारत ने मतदान में भाग नहीं लिया। हालाँकि, भारत ने कनाडाई प्रस्ताव का समर्थन किया जिसमें हमास द्वारा आतंकवादी हमलों की निंदा की गई थी।

जॉर्डन के नेतृत्व में मसौदा प्रस्ताव को पक्ष में 120 वोटों के साथ महासभा से मंजूरी मिल गई, जबकि 14 ने इसके खिलाफ मतदान किया और आइसलैंड, भारत, पनामा, लिथुआनिया और ग्रीस सहित 45 मतदान से अनुपस्थित रहे। इस प्रस्ताव को संयुक्त राष्ट्र महासभा के आपातकालीन विशेष सत्र के दौरान इज़राइल-फिलिस्तीन संकट को संबोधित करते हुए अपनाया गया था। यूएनजीए ने अतिरिक्त रूप से एन्क्लेव के भीतर नागरिकों को जीवन रक्षक सहायता और सेवाओं की निरंतर, पर्याप्त और निर्बाध डिलीवरी का आह्वान किया। भोपाल में विदेश मंत्री जयशंकर ने इस बात पर जोर दिया कि दुनिया भर में भारत की छवि कैसे बदल गई है और कहा कि एक मजबूत सरकार और अच्छी सरकार एक सिक्के के दो पहलू हैं। पिछले कुछ दशकों में, दुनिया में भारत की छवि बहुत बदल गई है। 'मेड इन इंडिया'...'इनवेंट इन इंडिया' वैक्सीन, हमारे पास COWIN प्लेटफॉर्म भी हमने बनाया है। जयशंकर ने यह भी कहा कि पिछले पांच वर्षों में, हमने अपनी खुद की 5जी तकनीक बनाई है...आज हमने कोविड से लड़ाई लड़ी है, हमने 5जी तैनात किया है; पिछले कुछ हफ्तों में जो कुछ भी हुआ है, चंद्रयान मिशन...उसने पूरी दुनिया पर प्रभाव छोड़ा है।

मप्र में 50 एकड़ जमीन का मालिक भी घूस देकर गरीबी रेखा से नीचे की सूची में शामिल हो सकता है : कमलनाथ

इंदौर (एजेंसी)। मध्यप्रदेश की भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार पर भ्रष्टाचार को शासकीय व्यवस्था का अंग बना देने का आरोप लगाते हुए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ ने सोमवार को कहा कि राज्य में 50 एकड़ जमीन का मालिक भी घूस देकर गरीबी रेखा से नीचे की सूची में शामिल हो सकता है। कमलनाथ ने इंदौर जिले की नौ विधानसभा सीटों के लिए कांग्रेस उम्मीदवारों की नामांकन रैली में कहा,''सूबे में भ्रष्टाचार की व्यवस्था बना दी गई है-पैसे दो, काम लो। कल मैं रायसेन और विदिशा में था। मुझे वहां बताया गया कि भ्रष्टाचार इस हद तक पहुंच गया है कि कोई व्यक्ति 50 एकड़ जमीन का मालिक होने पर भी पैसे देकर गरीबी रेखा से नीचे की सूची में अपना नाम लिखवा सकता है।''

कमलनाथ ने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान पर हमला बोलते हुए कहा,''शिवराज कहूं या ठगराज, इन्होंने पिछले 18 सालों में किस तरह हमारे प्रदेश को ठगा है। शिक्षा, स्वास्थ्य या निवेश हो, इन्होंने सब कुछ चौपट कर दिया है और मध्यप्रदेश को चौपट प्रदेश बना दिया है।'' उन्होंने चौहान पर झूठी घोषणाओं का आरोप लगाते हुए कहा कि पिछले पांच महीनों में मुख्यमंत्री की झूठ बोलने की मशीन दोगुनी रफ्तार से चल रही है। कमलनाथ ने यह दावा भी किया कि सूबे में एक करोड़ नौजवान बेरोजगार हैं।

कांग्रेस उम्मीदवारों की नामांकन रैली में पार्टी की पंजाब इकाई के अध्यक्ष अमरिंदर सिंह राजा वडिंग भी शामिल हुए। वडिंग ने 1984 के सिख विरोधी दंगों का जिक्र किए बगैर कहा कि भाजपा द्वारा कमलनाथ के खिलाफ दुष्प्रचार किया जाता है कि उन्होंने सिखों पर अत्याचार किया था। पंजाब कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा,''कमलनाथ के खिलाफ कोई प्राथमिकी दर्ज नहीं है, लेकिन भाजपा के साथियों को कमलनाथ से डर लगने लगा है। इसलिए वे दिल्ली से सरदार (सिख) भेजते हैं जो दुष्प्रचार करते हैं कि उन्होंने (सिखों पर) अत्याचार किया था।

सहमति से विवाह करने वाले वयस्कों के जीवन में कोई भी हस्तक्षेप नहीं कर सकता, अनुच्छेद 21 को लेकर दिल्ली उच्च न्यायालय ने दिया बयान

नई दिल्ली । दो व्यस्कों के स्वेच्छा से विवाह करने के मामले पर दिल्ली उच्च न्यायालय ने बड़ा बयान दिया है । दिल्ली उच्च न्यायालय ने कहा है कि जब दो लोग स्वेच्छा से एक दूसरे से विवाह करने का फैसला लेते हैं तो ऐसी स्थिति में उनके जीवन में हस्तक्षेप करने का किसी को कोई अधिकार नहीं होता है । यह कहते हुए संविधान के अनुच्छेद 21 में व्यक्तिगत पसंद के अधिकार का जिक्र भी हाईकोर्ट ने किया है । इस मामले पर सुनवाई के दौरान न्यायमूर्ति सौरभ बनर्जी ने कहा कि भारतीय संविधान का अनुच्छेद 21 सभी व्यक्तियों को जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की सुरक्षा देता है, जिसके तहत व्यक्तिगत पसंद का चुनाव करना, विशेष रूप से विवाह से संबंधित मामलों में, प्रत्येक व्यक्ति का अंतर्निहित अधिकार है । अदालत ने एक जोड़े को पुलिस सुरक्षा प्रदान करते हुए यह टिप्पणी की, जिन्होंने अपने परिवार की इच्छा के विरुद्ध मुस्लिम रीति-रिवाजों और समारोहों के अनुसार 6 अक्टूबर को शादी की थी । जब यहां पार्टियां दो सहमति वाले वयस्क हैं जिन्होंने स्वेच्छा से विवाह के माध्यम से हाथ मिलाने के लिए सहमति व्यक्त की है, तो कोई बाधा नहीं होनी चाहिए । ऐसी स्थिति में समाज, माता-पिता, रिश्तेदार कोई भी बाधा नहीं बन सकता है । अदालत ने ये भी कहा कि यहां पार्टियों के जीवन में हस्तक्षेप करने के लिए किसी के पास कुछ भी नहीं बचा है । बता दें कि अदालत ने एक दंपति द्वारा परिवार के सदस्यों की ओर से मिली धमकियों के खिलाफ सुरक्षा की मांग करते हुए अदालत का रुख किया था और अदालत से मदद मांगी थी । उनका मामला था कि उस व्यक्ति के परिवार के सदस्यों को गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी दी जा रही थी ।

सड़कों पर उतरने के बजाय न्यायिक प्रणाली में भरोसा रखें लोग: उपराष्ट्रपति धनखड़

गुवाहाटी (एजेंसी)। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने सोमवार को लोगों से कानूनी मुद्दों से निपटने के लिए सड़कों पर उतरने के बजाय देश की न्यायिक प्रणाली में भरोसा रखने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि देश की शासन प्रणाली की 'सफाई कर दी गई है और सत्ता के दलालों को निष्प्रभावी बना दिया गया है।' असम की एक दिवसीय यात्रा के दौरान गुवाहाटी की कॉटन यूनिवर्सिटी में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए धनखड़ ने कहा, ''कुछ लोग ऐसे भी हैं, जिन्हें जब भी अदालत या जांच एजेंसियों से समन मिलता है, तो वे सड़कों पर उतर आते हैं।'' उन्होंने कहा, ''हमारे पास एक मजबूत न्यायिक प्रणाली है। हम इसका लाभ क्यों नहीं उठाते? हमारी अदालतों ने बहुत शानदार काम किया है।''

उपराष्ट्रपति ने कहा कि मौजूदा शासन के तहत भ्रष्टाचार को सिस्टम से खत्म कर दिया गया है। उन्होंने कहा, ''मैंने ऐसा समय भी देखा है, जब यह सोचा जाता था कि कानून कुछ लोगों तक नहीं पहुंच सकता, दलाल हर जगह थे और भ्रष्टाचार व्याप्त था। लेकिन वह समय अब खत्म हो गया है।'' धनखड़ ने कहा, ''एक दौर था, जब हमारे सत्ता के गलियारे और शासन प्रणाली सत्ता के दलालों और भ्रष्ट तत्वों से भरे हुए थे। इन गलियारों को अब साफ कर दिया गया है और दलालों को निष्क्रिय बना दिया गया है।''

उपराष्ट्रपति ने दावा किया कि आम नागरिकों और छात्रों को मौजूदा स्थिति से सबसे ज्यादा फायदा होगा। उन्होंने युवाओं से सभी क्षेत्रों में राष्ट्र निर्माण में योगदान देने का आग्रह किया। धनखड़ ने कहा कि भारत का विकास कुछ वर्गों को पसंद नहीं आ रहा है और उन्होंने छात्रों से ऐसी ताकतों को हराने का आह्वान किया। उन्होंने कहा, ''भारत की आवाज अब वैश्विक स्तर पर शीर्ष पर है, लेकिन यह कई लोगों को पसंद नहीं आ रही है... भारत विरोधी विमर्श को बेअसर करना हमारा कर्तव्य है।

राम लला की दर्शन नए मंदिर में इस दिन से कर सकेंगे भक्त

नई दिल्ली (एजेंसी)। अयोध्या में राम मंदिर निर्माण कार्य तेजी से किया जा रहा है। राम मंदिर के निर्माण का प्रथम चरण दिसंबर में समाप्त हो जाएगा। इसी बीच भक्तों के लिए एक बड़ी जानकारी सामने आई है। राम भक्त अब राम लला के दर्शन जनवरी 2024 से कर सकेंगे। जानकारी के मुताबिक श्रद्धालुओं के लिए राम मंदिर में दर्शन अगले वर्ष 16 जनवरी से 24 जनवरी के बीच शुरू हो सकता है। इसी दौरान रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की जा सकती है।

बता दें कि 16 जनवरी से प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम शुरू होगा जो की 22 जनवरी तक जारी रह सकता है। इस बेहद खास समझ में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी शिरकत करेंगे। वही भक्तों के लिए रामलला के दर्शन प्राण प्रतिष्ठा होने के दो दिन बाद शुभ मुहूर्त के अनुसार खोले जाएंगे।

जाने कब होगी राम लला की प्राण प्रतिष्ठा

बता दें कि 22 जनवरी 2024 को अयोध्या में बन रहे भव्य राम मंदिर में रामलाल की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की जानी है। प्राण प्रतिष्ठा करने के लिए शुभ मुहूर्त निकाला जा चुका है जो लगभग दोपहर 12:30 बजे का है। बता दें कि प्राण प्रतिष्ठा के लिए शुभ मुहूर्त मृगशिरा नक्षत्र को लिया गया है।

लगभग मंदिर निर्माण 1 वर्ष पहले शुरू हुआ था जिसमें अब काफी उन्नति हो चुकी है। अयोध्या में बन रहे भव्य राम मंदिर निर्माण का पहला चरण पूरा होने वाला है। पहले चरण का अधिकतर काम पूरा हो चुका है और मंदिर अपना मूर्त रूप ले चुका है। बताने की मंदिर का निर्माण कार्य दो भागों में होना है। पहले चरण के अंतर्गत मंदिर का ग्राउंड फ्लोर बनकर तैयार हो चुका है जो ढाई एकड़ से अधिक जमीन में फैला हुआ है।

चक्रवात 'ओटिस' से मरने वालों की संख्या 48 हुई, 36 लापता...तलाश-बचाव अभियान जारी

अकापुल्को (मैक्सिको)। मैक्सिको के दक्षिणी प्रशांत तटीय क्षेत्र में चक्रवात 'ओटिस' के प्रभाव के कारण कम से कम 48 लोगों की मौत हो गई जिनमें से अधिकतर की जान अकापुल्को में गई। मैक्सिको के अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी देते हुए बताया कि प्राकृतिक आपदा के कारण जान गंवाने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। मैक्सिको की नागरिक रक्षा एजेंसी ने एक बयान में कहा कि मृतकों में से 43 अकापुल्को शहर से और पांच पास के कोयुका दे बिनेतेज शहर से हैं। गुएरेरो राज्य के गवर्नर ने इससे पहले लापता लोगों की संख्या 10 बताई थी जो बढ़कर अब 36 हो गई है। अधिकारियों ने शनिवार को मृतक संख्या 39 बताई थी जिसके बाद इसमें फिर से इजाफा हुआ है। अकापुल्को में परिजनों ने रविवार को अपने प्रियजनों का अंतिम संस्कार किया। वहीं सरकारी कर्मचारी और स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं ने शक्तिशाली पांच श्रेणी के चक्रवात के कारण सड़कों पर जमा मलबे और गंदगी को साफ किया। कैथी बरेरा (30) ने रविवार को कहा कि उनकी चाची का परिवार भूस्खलन में दब गया, जब मिट्टी और चट्टानें उनके घर पर गिरीं। उसकी चाची का शव उनके दो से 21 वर्ष की उम्र के तीन बच्चों के शवों के साथ मिला था। उसके चाचा अब भी लापता हैं। इसके अलावा, बरेरा की अपनी मां और भाई भी लापता हैं। रविवार को अधिकारियों ने बरेरा की चाची ओर उनके दो छोटे बच्चों के शव परिजनों को सौंपे। राष्ट्रपति एंड्रेस मैनुएल लोपेज ओब्राडोर ने शनिवार को कहा कि उनके विरोधी उन्हें राजनीतिक रूप से नुकसान पहुंचाने के लिए मृतकों की संख्या बढ़ा चढ़ाकर बताने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन सैकड़ों परिवार अब भी अपने प्रियजनों के संदेश का इंतजार कर रहे हैं और मृतक संख्या बढ़ने की आशंका है। चक्रवात 'ओटिस' बुधवार तड़के 266 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तट पर पहुंचा और लोगों के पास चक्रवात से बचाव की तैयारी के लिए बहुत कम समय था।

कोई विकल्प नहीं होने के कारण गाजा में माता-पिता बच्चों को पिला रहे खारा पानी : संयुक्त राष्ट्र

गाजा। संयुक्त राष्ट्र बाल सहायता एजेंसी यूनिसेफ ने कहा कि गाजा में आवश्यक वस्तुओं की कमी के कारण लोग अपने बच्चों को खारा पानी देने के लिए मजबूर हैं। बीबीसी ने यूनिसेफ के प्रवक्ता टोबी फ्रिकर के हवाले से कहा कि गाजा जिस कमी का सामना कर रहा था, उसे दूसरे स्तर पर बढ़ा दिया गया है। सहायता आपूर्ति के बारे में बात करते हुए फ्रिकर ने कहा कि सहायता आपूर्ति आ रही है, लेकिन न्यूनतम है। उन्होंने तत्काल मानवीय युद्धविराम और गाजा को सहायता आपूर्ति बढ़ाने का आह्वान किया। संयुक्त राष्ट्र ने कहा कि रविवार को 30 से अधिक सहायता ट्रक गाजा में दाखिल हुए, जो सीमित आपूर्ति की अनुमति के बाद से क्षेत्र में सबसे बड़ा मानवीय सहायता काफिला है।

जॉर्डन ने गाजा को अधिक मानवीय सहायता देने का किया आग्रह

अम्मान। जॉर्डन के विदेश मंत्री अयमान सफादी ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से गाजा पट्टी में तत्काल मानवीय सहायता पहुंचाने के लिए तुरंत मिलकर काम करने का आह्वान किया है। रविवार को उनके मंत्रालय के एक बयान के अनुसार, सफादी ने राजधानी अम्मान में अपने साइप्रस समकक्ष कॉन्स्टेंटिनोस कोम्बोस और बेल्जियम समकक्ष हदजा लाहबीब के साथ अलग-अलग बैठकों के दौरान यह टिप्पणी की, जहां उन्होंने गाजा में वृद्धि को रोकने के प्रयासों पर चर्चा की। समाचार एजेंसी शिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, उनकी बातचीत तब हुई जब इजरायल ने 7 अक्टूबर को इजरायली सीमावर्ती शहरों पर हमास द्वारा किए गए हमले का जवाब देने के लिए हमास शासित गाजा पट्टी के खिलाफ अपने हवाई हमले और जमीनी अभियान तेज कर दिए। बैठकों के दौरान, जॉर्डन के मंत्री ने गाजा में चल रहे संघर्ष के फैलने के खिलाफ चेतावनी दी और इजरायल के हमलों को अंतरराष्ट्रीय कानून का स्पष्ट उल्लंघन बताया। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा हाल ही में अपनाए गए एक प्रस्ताव को आगे बढ़ाने के महत्व पर जोर दिया, जिसमें कानूनी और मानवीय दायित्वों को कायम रखते हुए शत्रुता को समाप्त करने और नागरिकों की सुरक्षा का आह्वान किया गया। सफादी ने कहा कि केवल दो-राज्य समाधान पर आधारित एक न्यायसंगत और स्थायी शांति ही फिलिस्तीनियों और इजरायलियों दोनों के लिए सुरक्षा और शांति सुनिश्चित करेगी। उन्होंने दोनों पक्षों के नागरिकों की हत्या की निंदा की, सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों को बनाए रखने और नागरिकों के जीवन का सम्मान करने पर जोर दिया।

इज़राइल ने रूस में रह रहे इज़राइली नागरिकों की रक्षा करने किया आह्वान

तेल अवीव। इजरायल के प्रधान मंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के कार्यालय ने रविवार देर रात एक बयान में रूसी कानून प्रवर्तन एजेंसियों से रूस में रहने वाले इजराइली नागरिकों और यहूदियों की रक्षा करने का आह्वान किया है। यह बयान फिलिस्तीनी झंडे लहराते हुए मुसलमानों के एक समूह द्वारा रूस के दागिस्तान क्षेत्र में माखचकाला हवाई अड्डे में घुसने के बाद दिया गया। प्रदर्शनकारी इन खबरों के बीच हवाईअड्डे पर पहुंचे थे कि रूसी एयरलाइन 'रेड विंग्स' यहूदी शरणार्थियों को लेकर तेल अवीव से हवाईअड्डे पर पहुंची है। इजराइली प्रधान मंत्री के कार्यालय ने दंगाइयों और यहूदियों व इजरायली नागरिकों के खिलाफ उकसाने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की।

महिला की उम्र 26 साल और 22 बच्चे की है मां, महिला का शतक लगाने का है इरादा

अटलांटा। आपको जानकर हैरानी होगी कि एक रूसी महिला 22 बच्चों की मां है, और वो सिर्फ 26 साल की उम्र है! यह रूसी महिला क्रिस्टीना ऑजटर्क जॉर्जिया में रहती हैं। उनके 22 बच्चे हैं, पर वो इस संख्या को 3 अंकों में ले जाना चाहती हैं, यानी वो बच्चों के मामले में शतक लगाना चाहती हैं। आप अगर इस बात से हैरान हो रहे हैं कि सिर्फ 26 साल की महिला के 22 बच्चे कैसे हो सकते हैं, तो चलिए आपको बताते हैं कि पूरा मामला क्या है। क्रिस्टीना की सबसे बड़ी बेटी, 8 साल की विक्टोरिया नेचुरल तरीके से कंसीव हुई थी। पर उसके बाद के सारे 21 बच्चे सरोगेसी से पैदा हुए थे। इन 21 में से 20 बच्चे साल 2020 में पैदा हुए थे।साल 2021 में उन्होंने अपनी सबसे छोटी बेटी ओलीविया का स्वागत किया था। महिला ने बताया कि वो अपने करोड़पति पति से 105 बच्चे चाहती हैं। आपको बता दें कि उनके पति उनसे 32 साल बड़े हैं।58 साल के गैलिप ऑजटर्क होटल के मालिक हैं। इसी साल की शुरुआत में उन्हें 8 साल की जेल हो गई थी। उनके ऊपर गैरकानूनी ड्रग्स खरीदने और रखने का आरोप लगा था। कपल सरोगेसी की मदद से अपने बच्चों का स्वागत इस दुनिया में कर रहे हैं, इस वजह से गैलिप, जेल में रहते हुए भी पिता बन जाएंगे। क्रिस्टीना, जॉर्जिया के बाटुमी शहर में छुट्टियां मना रही थीं, तब उनकी मुलाकात गैलिप से हुई थी। इस साल फरवरी में क्रिस्टीना ने एक किताब लॉन्च की थी, जिसमें उन्होंने मेगा-मॉम होने का अपना अनुभव साझा किया था। क्रिस्टीना ने बताया कि जब से उनके पति गिरफ्तार हुए हैं, तब से बच्चों की देखभाल उन्हें अकेले ही करनी पड़ रही है। उन्होंने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो पोस्ट कर के बताया था कि पति के न होने की वजह से उन्हें अकेलापन काफी ज्यादा सताता था। उन्होंने बताया था कि मार्च 2020 से जुलाई 2021 के बीच उन्होंने सरोगेट्स को 1.4 करोड़ रुपये दिए थे। एक वक्त बीच में ऐसा भी था कि घर में एक साथ 16 दाइयां काम करती थीं, जिन्हें सैलरी के तौर पर कुल 68 लाख रुपये से ज्यादा दिए जाते थे। बता दें कि हर महिला के लिए मां बनना बेहद खास अनुभव होता है. पर ये सफर आसान नहीं होता।मानसिक से लेकर शारीरिक रूप से भी औरतें प्रेग्नेंसी के दौरान काफी समस्याओं से गुजरती हैं।प्रेग्नेंसी के बाद मां के तौर पर उनकी जिम्मेदारियां और भी ज्यादा बढ़ जाती हैं।इस वजह से आजकल औरतें एक से ज्यादा बच्चे नहीं चाहतीं।

मोदी, हसीना संयुक्त रूप से सीमा पार रेल प्रोजेक्ट का करेंगे उद्घाटन, दोनों देशों को जोड़ेगी ये परियोजना

नई दिल्ली/ढाका (एजेंसी)। अधिकारियों ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनके बांग्लादेश समकक्ष शेख हसीना बुधवार को संयुक्त रूप से एक प्रमुख सीमा पार रेलवे परियोजना का उद्घाटन करेंगे। उन्होंने कहा कि दोनों पड़ोसी देशों के प्रधान मंत्री सुबह 11 बजे एक आभासी समारोह में अगरतला-अखौरा क्रॉस बॉर्डर रेल लिंक परियोजना का शुभारंभ करेंगे। अधिकारियों ने कहा कि 15 किलोमीटर लंबा रेल लिंक (भारत में 5 किलोमीटर और बांग्लादेश में 10 किलोमीटर) सीमा पार व्यापार को बढ़ावा देगा और ढाका के रास्ते अगरतला और कोलकाता के बीच यात्रा के समय को काफी कम कर देगा।

प्रोजेक्ट का ट्रायल सोमवार दोपहर 12 बजे होगा। इसमें एक प्रमुख पुल और तीन छोटे पुल शामिल हैं। एक अधिकारी ने कहा कि मौजूदा समय में ट्रेन से अगरतला से कोलकाता पहुंचने में करीब 31 घंटे का समय लगता है, जो घटकर सिर्फ 10 घंटे रह जाएगा। उन्होंने कहा कि भारतीय रेलवे ने परियोजना के काम में तेजी लाने के लिए अपने बजट से 153.84 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं।

अखौरा-अगरतला नई रेलवे लाइन (भारत में 5.05 किमी और बांग्लादेश में 10.014 किमी) पश्चिमी त्रिपुरा के निश्चिंतपुर में एक अंतरराष्ट्रीय आव्रजन स्टेशन के माध्यम से बांग्लादेश के रेलवे स्टेशन अखौरा को जोड़ेगी। भारत द्वारा वित्त पोषित, पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे (एनएफआर) 1,000 करोड़ रुपये की अगरतला-अखौरा रेलवे परियोजना की नोडल एजेंसी है, जिसे जनवरी 2010 में अंतिम रूप दिया गया था जब बांग्लादेश की प्रधान मंत्री ने अपनी नई दिल्ली यात्रा के दौरान तत्कालीन भारतीय प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह से मुलाकात की थी।

अगरतला-अखौरा रेलवे परियोजना, जो भारत और बांग्लादेश के बीच यात्री और माल दोनों के आदान-प्रदान के लिए एक दोहरी गेज स्टेशन है, पूर्वोत्तर राज्यों, विशेष रूप से त्रिपुरा और असम और मिजोरम के दक्षिणी हिस्से के लोगों को 22 की बचत करके रेल द्वारा कोलकाता जाने में सक्षम बनाएगी। वर्तमान में क्षेत्र के लोग, विशेष रूप से त्रिपुरा और इसके आसपास के इलाकों के लोग, रेल मार्ग से गुवाहाटी के रास्ते कोलकाता जाते हैं, जिसमें 38 घंटे से अधिक समय खर्च होता है।

भारतीय-अमेरिकी चिकित्सक डॉ. बरई को अमेरिका के यहूदी समूह ने किया सम्मानित

शिकागो (अमेरिका)। अमेरिका में एक प्रभावशाली यहूदी समूह ने भारतीय-अमेरिकी चिकित्सक डॉ. भरत बरई को भारत, अमेरिका और इजराइल के बीच संबंधों को मजबूत करने के उनके अथक प्रयासों और यहूदी विरोधी भावना के खिलाफ खड़े होने के लिए सम्मानित किया। डॉ. बरई भारत-इजराइल संबंध के बड़े समर्थक रहे हैं। उन्होंने कहा, ''हम आपके, अपने यहूदी भाइयों और बहनों के साथ हैं। डॉ. बरई ने कहा कि हिंदू और यहूदी समुदाय के बीच सहयोगात्मक संबंधों से दोनों को लाभ हुआ है। यहूदी विरोधी भावना के खिलाफ खड़े होने के लिए'' डॉ. बरई को रविवार को ''कैम्पस चैंपियनशिप गाला'' में यह पुरस्कार दिया गया। उपनगर शिकागो में आयोजित कार्यक्रम में मौजूद यहूदी समुदाय के लोगों ने बरई का खड़े होकर अभिवादन किया। बरई ने कहा, ''सभ्य दुनिया के अधिकतर लोगों के साथ दुनियाभर के हिंदू हमास के इस बर्बर हमले की निंदा करते हैं, यहूदी लोगों के प्रति अपनी एकजुटता प्रदर्शित करते हैं तथा इजराइल के अपनी रक्षा करने के अधिकार का समर्थन करते हैं।'' उन्होंने उम्मीद जताई कि इजराइल हमास का समूल नाश कर देगा और पश्चिम एशिया से अधिकतर देश 'अब्राहम समझौते' में शामिल होंगे। 'अब्राहम समझौता' अमेरिका की मध्यस्थता में 2020 में इजराइल और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के बीच हुआ समझौता है। इसमें इजराइल, बहरीन और यूएई के बीच संबंधों को सामान्य बनाने के लिए हुए समझौते का भी जिक्र है। अब्राहम समझौते ने निर्धारित किया कि यूएई और बहरीन इजराइल में अपने-अपने दूतावास स्थापित करेंगे और पर्यटन, व्यापार और सुरक्षा सहित कई क्षेत्रों में इजराइल के साथ मिलकर काम करेंगे। इसका धार्मिक महत्व यह है कि यह मुसलमानों को इस्लाम के सबसे पवित्र स्थलों में से एक यरूशलम स्थित अल-अक्सा मस्जिद में जाने की अनुमति देगा।

इजराइली सेना उत्तरी गाजा के अंदरुनी इलाकों तक पहुंची, अस्पतालों के समीप किए हवाई हमले

तेल अवीव (एजेंसी)। इजराइली सेना और उसके बख्तरबंद वाहन सोमवार को उत्तरी गाजा पट्टी के और अंदरुनी इलाकों तक पहुंच गए जिसके बाद संयुक्त राष्ट्र और चिकित्सा कर्मियों ने आगाह किया कि अस्पतालों के नजदीक हवाई हमले किए जा रहे हैं जहां हजारों घायलों के साथ ही हजारों फलस्तीनी नागरिकों ने शरण ली हुई है।

जमीनी आक्रमण में यह तेजी तब आयी है जब एक दिन पहले खाद्य सामग्री, दवा और अन्य सामान लेकर 33 ट्रकों ने मिस्र से गाजा में प्रवेश किया। इजराइल और हमास के बीच युद्ध शुरू होने के बाद से मानवीय सहायता की यह सबसे बड़ी खेप है। राहत कर्मियों ने सोमवार को कहा कि यह सहायता गाजा में आवश्यकता से बहुत कम है। गाजा के स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा कि जान गंवाने वाले फलस्तीनियों की संख्या 8,000 के पार चली गयी है जिनमें से ज्यादातर महिलाएं और नाबालिग हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इजराइली सैनिक उत्तरी गाजा में अंदरुनी इलाकों तक घुस गए हैं।

सेना द्वारा सोमवार को जारी वीडियो में बख्तरबंद वाहनों को इमारतों के बीच से गुजरते हुए और सैनिकों को एक मकान के भीतर कमान संभालते हुए देखा गया। अभी सटीक स्थान के बारे में नहीं पता चला है लेकिन शनिवार को सेना द्वारा जारी फुटेज में सैनिकों को गाजा की उत्तरी सीमा की बाड़बंदी के समीप सुनसान रेतीले स्थानों से गुजरते हुए देखा गया। सेना ने सोमवार को कहा कि उसके सैनिकों ने रात भर में इमारतों और सुरंगों के भीतर से हमला करने वाले कई आतंकवादियों को मार गिराया और हवाई हमलों में एक इमारत को ध्वस्त कर दिया गया जिसका इस्तेमाल हमास कर रहा था। उसने कहा कि पिछले कुछ दिनों में उसने आतंकवादियों के 600 से अधिक ठिकानों को निशाना बनाया है जिसमें हथियार डिपो और टैंक रोधी मिसाइल लॉन्चिंग स्थल भी शामिल हैं। इन खबरों की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं की जा सकी है। हमास की सैन्य शाखा ने बताया कि उसके आतंकवादियों की उत्तरपश्चिमी गाजा पट्टी में घुसने वाले इजराइली सैनिकों से झड़प हुई। फलस्तीनी आतंकवादी तेल अवीव समेत इजराइल में अभी रॉकेट हमले कर रहे हैं।

इजराइल की तरफ से बमबारी के बीच गाजा के अधिकतर हिस्सों में मोबाइल और इंटरनेट सेवाएं अचानक बंद होने के दो दिन बाद, भीड़भाड़ वाले इस क्षेत्र में रविवार को संचार सेवाएं धीरे-धीरे बहाल हो गईं। फलस्तीन के शरणार्थियों को मानवीय सहायता पहुंचाने के काम में लगी संयुक्त राष्ट्र की एजेंसी ने शनिवार को कहा कि हजारों लोग 'आटा' और रोजमर्रा की जरूरत की अन्य वस्तुएं लेने के लिए गाजा में राहत सहायता गोदामों पर टूट पड़े।

इस बीच, उत्तरी गाजा में खचाखच भरे अस्पतालों पर खतरा बढ़ता जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र ने सोमवार को कहा कि हाल के दिनों में गाजा शहर के शिफा और अल-कुद्स अस्पतालों और उत्तरी गाजा में इंडोनेशियाई अस्पताल के समीप हवाई हमले किए गए। संयुक्त राष्ट्र के मानवीय मामलों के समन्वय संबंधी कार्यालय ने बताया कि उत्तर गाजा में संचालित 10 अस्पतालों को हाल के दिनों में जगह खाली करने का आदेश मिला है। हजारों मरीजों और कर्मियों के साथ करीब 1,17,000 विस्थापित लोग इन अस्पतालों में रह रहे हैं। इजराइल ने हमास पर अस्पताल के नीचे एक गुप्त कमांड पोस्ट बनाने का आरोप लगाया है लेकिन इसके समर्थन में ज्यादा सबूत उपलब्ध नहीं कराए हैं। हमास इन आरोपों से इनकार करता है। इजराइल ने खान यूनिस में रविवार को दो मंजिला मकान पर हवाई हमला किया जिसमें एक ही परिवार के 10 सदस्यों समेत कम से कम 13 लोगों की मौत हो गयी। इजराइली सेना ने सोमवार को तड़के कहा कि उसके विमान ने सीरिया की ओर से रॉकेट दागे जाने के बाद वहां सैन्य बुनियादी ढांचे को निशाना बनाया।

बीजिंग में सुरक्षा मंच की बैठक, चीन और रूस के निशाने पर अमेरिका

बीजिंग (एजेंसी)। चीनी और रूसी सैन्य प्रमुखों ने सोमवार को बीजिंग में एक सुरक्षा मंच पर आलोचना के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका पर निशाना साधा, जबकि चीन के दूसरे सबसे वरिष्ठ सैन्य कमांडर ने वाशिंगटन के साथ रक्षा संबंधों को बढ़ावा देने की कसम खाई। देशों के बीच तनाव और दक्षिण चीन सागर या ताइवान के पास आकस्मिक झड़प के खतरे के बीच अमेरिका और चीनी सेनाओं के बीच नियमित संचार की कमी वाशिंगटन के लिए लगातार चिंता का विषय रही है।

बीजिंग जियांगशान फोरम, चीन की सैन्य कूटनीति का सबसे बड़ा वार्षिक शो, रविवार को देश के रक्षा मंत्री के बिना शुरू हुआ, जो आम तौर पर इस कार्यक्रम की मेजबानी करते हैं, लेकिन बढ़ते क्षेत्रीय तनाव के बीच इसमें एक अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल भी शामिल था। रूस के रक्षा मंत्री सर्गेई शोइगु ने पश्चिम को चेतावनी दी कि यूक्रेन युद्ध में उसकी भागीदारी से गंभीर खतरा पैदा हो गया है।

रूस की TASS राज्य समाचार एजेंसी ने फोरम में शोइगु के हवाले से कहा कि रूस के साथ संघर्ष की पश्चिमी रेखा में लगातार वृद्धि से परमाणु शक्तियों के बीच सीधे सैन्य टकराव का खतरा है, जो विनाशकारी परिणामों से भरा है। चीन के केंद्रीय सैन्य आयोग में राष्ट्रपति शी जिनपिंग के उपाध्यक्ष झांग यूक्सिया ने 'कुछ देशों' पर सरकार को कमजोर करने की कोशिश करने का आरोप लगाते हुए संयुक्त राज्य अमेरिका और उसके सहयोगियों की परोक्ष आलोचना की।

पाकिस्तान से एनओसी मिलने के बाद भारत लौटेगी अंजू

लौहार (एजेंसी)। दो बच्चों की 34 वर्षीय भारतीय मां पाकिस्तान सरकार से मंजूरी मिलने के बाद भारत लौट आएगी। दरअसल, राजस्थान की रहने वाली अंजू ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म फेसबुक पर मिले दोस्त से शादी करने के लिए खैबर पख्तूनख्वा के एक दूरदराज के गांव गई थी। इसके बाद अगस्त में पाकिस्तान ने अंजू का वीजा एक साल के लिए बढ़ा दिया था। अंजू ने इस्लाम भी कबूल कर लिया था। नसरुल्लाह से शादी के बाद अंजू ने नाम बदलकर फातिमा कर दिया गया था। अंजू के पाकिस्तानी पति ने बताया कि हम इस्लामाबाद में आंतरिक मंत्रालय से एनओसी (अनापत्ति प्रमाणपत्र) का इंतजार कर रहे हैं। इसके लिए हमने पहले ही आवेदन कर दिया है। एनओसी प्रक्रिया थोड़ी लंबी है और इसे पूरा होने में समय लगता है।

निश्चित रूप से वापस आएंगी- नसरुल्लाह

उन्होंने बताया कि जैसे ही वाघा सीमा बिंदु से बाहर जाने और वापस आने के लिए दस्तावेज पूरे हो जाएंगे, अंजू भारत की यात्रा करेंगी। वह भारत में अपने बच्चों से मिलने के बाद पाकिस्तान लौटेंगी। उन्होंने कहा कि वह निश्चित रूप से वापस आएंगी, क्योंकि पाकिस्तान अब उनका घर है।

क्या है मामला?

पिछले महीने नसरुल्ला ने कहा था कि अंजू मानसिक रूप से परेशान हैं और अपने दो बच्चों को याद कर रही हैं। इससे पहले 25 जुलाई को अंजू ने अपने 29 वर्षीय दोस्त नसरुल्लाह से शादी की थी। उनका घर खैबर पख्तूनख्वा के ऊपरी दीर जिले में है। दोनों 2019 में फेसबुक पर दोस्त बने थे। अंजू की पहली शादी राजस्थान के रहने वाले अरविंद से हुई थी। उनकी एक 15 साल की बेटी और छह साल का बेटा है।

कातिलों को नहीं छोड़ेंगे नारों के साथ रूस में विमान पर टूट पड़ी भीड़

मास्कॉ। फिलिस्तीन के नागरिकों की सुरक्षा को लेकर पूरी दुनिया में प्रदर्शन किए जा रहे हैं। लेकिन रूस के मखाचकला एयरपोर्ट पर जिस तरह का प्रदर्शन हुआ है वो इजराइल के लिए डराने वाला है। यहां फिलिस्तीन के समर्थन में प्रदर्शन कर रहे सैकड़ों लोगों की भीड़ ने हाथ में पत्थर और फिलिस्तीन का झंडा लेकर नारेबाजी की। देखते ही देखते बेकाबू भीड़ ने यहूदियों की मॉब लिंचिंग की कोशिश की। दागीस्तान में यहूदियों के साथ हुई इस घटना के बाद इजराइल ने रूसी राजदूत को तलब किया है और यहूदियों की सुरक्षा को लेकर चिंता जताई है। प्रदर्शनकारियों को जैसे ही सूचना मिली कि इजराइल की राजधानी तेल अवीव से एक फ्लाइट आ रही है तो भीड़ ने फ्लाइट को रनवे पर घेर लिया। हजारों मुस्लिम एयरपोर्ट के गेट को तोड़कर अंदर आ गए। हालात इतने बिगड़ गए कि दंगाइयों को रोकने के लिए स्पेशल फोर्स बुलानी पड़ी। भीड़ फिलिस्तीन का झड़ा लेकर लगातार 'बच्चों के कातिलों को नहीं छोड़ेंगे' का नारा लगा रही थी। बताया जा रहा है कि फ्लाइट के यात्रियों में भीड़ यहूदियों को खोजने लगी। भीड़ एक-एक पैसेंजर का पासपोर्ट चेक करती रही। जबरदस्त विरोध प्रदर्शन के बाद कुछ देर के लिए एयरपोर्ट को भी बंद करना पड़ा।

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री सुनक ने इजराइल-गाजा संघर्ष के बीच घरेलू सुरक्षा बैठक बुलायी

लंदन (एजेंसी)। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक इजराइल-गाजा संघर्ष के बीच और देश की सड़कों पर व्यापक प्रदर्शनों की पृष्ठभूमि में ब्रिटेन के लिए घरेलू सुरक्षा मुद्दों का विश्लेषण करने के लिए सोमवार को लंदन में 10 डाउनिंग स्ट्रीट में एक उच्च स्तरीय बैठक की अध्यक्षता कर रहे हैं।

'कैबिनेट ऑफिस ब्रीफिंग रूम्स ए' (कोबरा) बैठक ऐसे समय में हो रही है जब एक और सप्ताहांत में हजारों लोगों ने पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष के खिलाफ प्रदर्शन किए। प्रदर्शन के दौरान नौ लोगों को गिरफ्तार किया गया और पांच पर सार्वजनिक व्यवस्था संबंधी अपराधों के आरोप लगाए गए हैं।

बैठक में ब्रिटेन की गृह मंत्री सुएला ब्रेवरमैन भी शामिल हुईं। ब्रिटेन के शिक्षा मंत्री रॉबर्ट हाफटन ने डाउनिंग स्ट्रीट में उच्च स्तरीय कोबरा बैठक के संदर्भ में 'टाइम्स रेडियो' से कहा, ''हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि ब्रिटिश नागरिक आतंकवाद के खतरे से सुरक्षित रहें जैसा कि सरकार हमेशा करती है।''

इस बैठक से पहले मेट्रोपोलिटन पुलिस आयुक्त सर मार्क रॉवले ने ब्रिटेन की सड़कों पर चरमपंथ से निपटने के लिए ''सख्त'' कानून बनाने का आह्वान किया था। ब्रिटेन सरकार ने अपने देश में हमले की आशंका जतायी है।

मेट्रोपोलिटन पुलिस के अनुसार, तीन सप्ताह पहले पश्चिम एशिया में संकट गहराने के बाद से देश में यहूदी विरोधी घटनाओं में 14 गुना वृद्धि हुई है खबरों के अनुसार, ब्रिटेन सरकार देश में प्रदर्शन से जुड़ी कुछ चरमपंथी चिंताओं से निपटने के लिए आतंकवाद संबंधी कानूनों को कड़ा करने के तरीकों पर विचार कर सकती है।

ब्रेवरमैन ने ऐसी घटनाओं के खिलाफ कड़ी पुलिस कार्रवाई न करने को लेकर सवाल किया जबकि पुलिस ने आगाह किया कि ऐसे मामलों के खिलाफ कानून को पूरी तरह परिभाषित नहीं किया गया है। इस माह के शुरू में इजराइल-हमास संघर्ष बढ़ने के बाद से लंदन में लगभग 100 गिरफ्तारियां की गई हैं।

मेट्रोपोलिटन पुलिस प्रमुख का अनुमान है कि अगले कुछ हफ्तों में और भी गिरफ्तारियां होंगी क्योंकि पुलिस उन लोगों का पता लगा रही है जिन्होंने हाल के प्रदर्शनों में सार्वजनिक व्यवस्था और आतंकवाद संबंधी कानूनों का उल्लंघन किया था।

इस बीच, ब्रिटेन के अपराध और पुलिसिंग मंत्री क्रिस फिलिप ने देश के पुलिस प्रमुखों को पत्र लिखकर उनसे अपराधियों को पकड़ने के लिए चेहरे की पहचान करने वाली, कृत्रिम बुद्धिमत्ता से लैस तकनीक का इस्तेमाल कर छापेमारी की संख्या दोगुनी करने को कहा है।

मानवीय सहायता को रोकना युद्ध अपराध है : आईसीसी

तेल अवीव (एजेंसी)। अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय यानि इंटरनेशनल क्रिमिनल कोर्ट (आईसीसी) ने इजराइल को चेतावनी दी है कि प्रभावित लोगों तक मानवीय सहायता पहुंचने से रोकना युद्ध अपराध माना जाएगा। आईसीसी अभियोजक करीम खान ने मिस्र और गाजा पट्टी के बीच रफा सीमा का दौरा करने के बाद यह टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि कई ट्रक गाजा पट्टी में प्रवेश की अनुमति का इंतजार मिस्र में कर रहे हैं। उन्होंने इज़राइल से गाजा में मानवीय सहायता वाले अधिक ट्रकों को अनुमति देने का आह्वान किया और कहा कि आईसीसी 7 अक्टूबर के नरसंहार की गंभीरता से जांच कर रही है जिसमें 1,400 इज़राइली नागरिक मारे गए, 3,000 से अधिक घायल हुए और 239 को बंधक बना लिया गया।

हालांकि, आईसीसी का अधिकार क्षेत्र केवल गाजा और वेस्ट बैंक में है, लेकिन खान ने कहा कि वह 7 अक्टूबर की तबाही की सक्रिय रूप से जांच कर रहे हैं। खान ने कहा कि उनका दफ्तर फिलिस्तीन के क्षेत्र में इज़राइल द्वारा या फिलिस्तीन से इज़राइल में किए गए अपराध की विस्तृत जांच कर रहा है। उन्होंने यह भी संकेत दिया कि चल रही जांच 2014 के हमास-इजरायल संघर्ष के दौरान आईसीसी द्वारा की गई जांच का विस्तार है, जिसे उनके पूर्ववर्ती फतौ बेनसौदा द्वारा शुरू किया गया था और 2021 में अनुमोदित किया गया था। इज़राइल आईसीसी का सदस्य नहीं है और उसने रोम क़ानून की पुष्टि नहीं की है और आईसीसी के साथ सहयोग करने से इनकार कर दिया है।

विश्वकप : बांग्लादेश के खिलाफ जीत के इरादे से उतरेगा पाकिस्तान

कोलकाता (एजेंसी)। विश्वकप में मंगलवार को पाकिस्तान का मुकाबला बांग्लादेश से होगा। दक्षिण अफ्रीका से पिछले मुकाबले में मिली हार के बाद ही पाक सेमीफाइनल से तकरीबन बाहर हो गयी है। ऐसे में उसका लक्ष्य किसी भी प्रकार बांग्लादेश को हराकर लय हासिल करने के साथ ही कुछ अंक हासिल करना रहेगा। इस मैच में पाक टीम जीत की दावेदार नजर आती है क्योंकि बांग्लादेश का प्रदर्शन अब तक इस टूर्नामेंट में उससे भी बेकार रहा है और उसके केवल दो अंक ही हैं। वहीं पाक के अब तक चार अंक हैं और ऐसे में वह अब बचे हुए तीन मैच जीतकर अधिकतम छह अंक और हासिल करना चाहेगा है जिससे लीग चरण के बाद उसके अधिकतम 10 अंक हो सकते हैं जिससे उसकी आगे जाने की कुछ संभावनाएं बनें। दो टीम पहले ही 10 या इससे अधिक अंक हासिल कर चुकी है। इसके अलावा तीन और टीमें पाक से आगे हैं जिससे उसके लिए सेमीफाइनल में पहुंचना बेहद कठिन है।

वहीं धीमी शुरुआत के बाद ऑस्ट्रेलिया ने लगातार जीत के साथ वापसी की है। इसके अलावा न्यूजीलैंड की टीम भी जबरदस्त फार्म में है। भारत 12 अंक के साथ सेमीफाइनल में पहुंच गया है जबकि चुका दक्षिण अफ्रीका के 10 अंक हैं। ऐसे में पाक न केवल अपने बाकी बचे तीनों मैच जीतने होंगे बल्कि बड़े अंतर से जीत दर्ज करनी होगी जिससे उसका नेट रन रेट भी बेहतर बने जो अभी माइनस 0.205 है।

बांग्लादेश के खिलाफ अगर ये मैच पाक हारता है तो उसकी बची हुई सभी संभावनाएं समाप्त हो जाएंगी। ऐसे में बांग्लादेश के खिलाफ मुकाबले में पाक टीम अपनी ओर से पूरी ताकत लगा देगी। पाक के बल्लेबाज और गेंदबाज अभी तक उम्मीद के अनुसर प्रदर्शन नहीं कर पाये हैं। उसके बल्लेबाज छह में से चार मैच में पूरे ओवर भी नहीं खेल पाये। अब ईडन गार्डन्स की तेज गेंदबाजी की मददगार पिच पर पाकिस्तान को उम्मीद होगी कि शाहीन शाह अफरीदी, हारिस राउफ और मोहम्मद वसीम बांग्लादेश के खिलाफ उसे अच्छी सफलताएं दिलाएंगे। पाकिस्तान के

लिए सबसे राहत की बात मोहम्मद वसीम जूनियर का प्रदर्शन रहा है जो दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ बीमार हसन अली की जगह उतरे और विश्व कप में पदार्पण किया। वसीम ने 62 रन देकर दो विकेट लिए इसके साथ ही डेथ ओवरों में उन्होंने केशव महाराज पर काफी दबाव बनाया था। वसीम के टीम में अपनी जगह बनाए रखने की उम्मीद है क्योंकि पाकिस्तान टूर्नामेंट में बांग्लादेश के बल्लेबाजों पर दबाव बनाने का प्रयास करेगा।

पाक के लिए सबसे बड़ी परेशानी उसकी खराब बल्लेबाजी रही है। उसके बल्लेबाज चार मैचों में पूरे 50 ओवर भी नहीं खेल पाये। यहां तक कि कप्तान बाबर आजम भी अच्छी शुरुआत को बड़ी पारी में बदल नहीं पाये। बाबर ने अब तक तीन अर्धशतक जड़े हैं और बांग्लादेश के खिलाफ उनकी नजरें बड़े शतक पर होंगी। वहीं दूसरी ओर बांग्लादेश टीम भी अब तक इस टूर्नामेंट में अफसल रही है। कप्तान शाकिब अल हसन सहित सभी खिलाड़ी अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाये हैं। नीदरलैंड के खिलाफ पिछले मैच में भी उसे हार का सामना करना पड़ा। इस मुकाबले में टीम के शीर्ष छह बल्लेबाजों में से चार ही दो अंकों तक दोहरे अंक में भी पहुंचने में नाकाम रहे जिससे 230 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए टीम 142 रन ही बना पायी। बांग्लादेश की टीम लगातार पांच मैच हार चुकी है और उसके केवल दो अंक हैं। ऐसे में पाक को इस मुकाबले में जीत का प्रबल दावेदार माना जा सकता है।

दोनो ही टीमें इस प्रकार हैं

पाकिस्तान - बाबर आजम (कप्तान), अब्दुल्ला शफीक, इमाम-उल-हक, मोहम्मद रिजवान, सऊद शकील, इफ्तिखार अहमद, शादाब खान, शाहीन अफरीदी, मोहम्मद वसीम जूनियर, हसन अली, उसामा मीर

बांग्लादेश - शाकिब अल हसन (कप्तान), तंज़ीद हसन, लिटन दास, नजमुल हुसैन शान्तो, मुश्फिकुर रहीम (विकेटकीपर), महमूदुल्लाह, मेहदी हसन मिराज, महेदी हसन, तस्कीन अहमद, मुस्तफिजुर रहमान, शोरफुल इस्लाम।

निशानेबाज अनीष भानवाला ने भारत को 12वां पेरिस ओलंपिक कोटा दिलाया, कांस्य पदक जीता

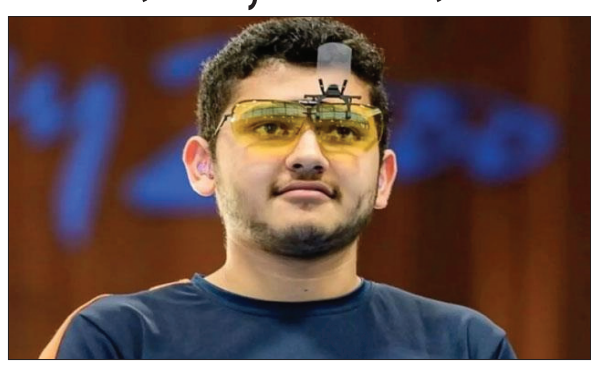

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रमंडल खेलों के स्वर्ण पदक विजेता अनीष भानवाला ने सोमवार को कोरिया के चांगवान में चल रही एशियाई चैम्पियनशिप की पुरुष 25 मीटर रैपिड फायर पिस्टल स्पर्धा में कांस्य पदक जीतकर भारत को निशानेबाजी में 12वां पेरिस ओलंपिक कोटा दिलाया। अनीष भानवाला शूटआउट में जापान के दाई योशिओका से हार गए जिन्होंने रजत पदक जीता।

करनाल के 21 साल के निशानेबाज ने फाइनल में 28 निशाने लगाए थे। स्थानीय प्रबल दावेदार निशानेबाज ली गुनहियोक ने स्वर्ण पदक जीता। अनीष भानवाला ने फाइनल में पहुंचते ही पेरिस ओलंपिक के लिए कोटा हासिल कर लिया था क्योंकि चीन, जापान और कोरिया पहले ही इस स्पर्धा में दो दो ओलंपिक कोटे हासिल कर चुके थे। भानवाला के अलावा फाइनल में पहुंचने वाले अन्य निशानेबाज चीन, जापान और कोरिया के थे। भानवाला क्वालीफिकेशन चरण में 588 अंक से तीसरे स्थान पर रहकर फाइनल में पहुंचे थे।

एक अन्य भारतीय भावेश शेखावत 584 अंक से क्वालीफिकेशन में शीर्ष आठ में शामिल थे लेकिन फाइनल में नहीं पहुंच सके क्योंकि वह केवल रैंकिंग अंक (आरपीओ) के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे थे और फाइनल में पहुंचने के लिए योग्य नहीं थे।

पंड्या अब सेमीफाइनल में ही वापसी करेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया के ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या अपनी चोट से उबर रहे हैं और अब उनके सीधे सेमीफाइनल में ही खेलने की उम्मीद है। भारतीय टीम इंग्लैंड के खिलाफ जीत के साथ ही पहले ही सेमीफाइनल में पहुंच गयी है जिससे अब टीम के लिए लीग के अगले मुकाबले औपचारिक ही हैं। पंड्या ने अभ्यास भी शुरु कर दिया है। टीम इंडिया को अगला मुकाबला 2 नवंबर को श्रीलंका के खिलाफ खेलना है पर उसमें पंड्या की जगह पर तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी ही खेलेंगे। टीम इंडिया सेमीफाइनल में पहुंच गई है। ऐसे में टीम प्रबंधन पंड्या को लेकर कोई जल्दी नहीं करना चाहता। वहीं एक रिपोर्ट के मुताबिक पंड्या सेमीफाइनल में खेलते हुए दिख सकते हैं। वह अभी बेंगलुरु स्थित एनसीए में उबर रहे हैं। पंड्या बांग्लादेश के खिलाफ गेंदबाजी के दौरान चोटिल हो गए थे। उनकी एड़ी में दर्द है। पंड्या ने एनसीए में कई नेट सत्र में भी भाग लिया। इस दौरान बीसीसीआई की मेडिकल टीम की उनपर नजरें बनी हुई हैं। इस समय पंड्या को यात्रा के लिए नहीं कहा जा सकता। वह अभी बेंगलुरु में हैं और वहीं से टीम से दोबारा जुड़ सकते हैं। पंड्या के बाहर होने के बाद से टीम इंडिया सिर्फ 5 ही गेंदबाजों के साथ उतर रही है। हालांकि अब तक इसका अधिक असर नहीं दिखा है. लेकिन उनकी वापसी से टीम संयोजन में फिर से बदलाव होना तय है। अभी पक्के तौर पर पंड्या के मैदान पर वापसी की तारीख नहीं बताई जा सकती पर वह तेजी से उबर रहे हैं। सेमीफाइनल के लिए समय है। ऐसे में उन्हें उबरने के लिए और अधिक समय मिल जाएगा। ऐसे में वे नॉकआउट के मुकाबले के दौरान वापसी कर सकते हैं।

वनडे विश्व कप: नाथन लायन ने की भविष्यवाणी, भारत और इस टीम के बीच होगा फाइनल मुकाबला

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर नाथन लायन ने वनडे विश्व कप 2023 में फाइनल मैच को लेकर भविष्यवाणी की है। लायन का मानना है कि पुराने प्रतिद्वंद्वी पांच बार के चैंपियन ऑस्ट्रेलिया और दो बार के विजेता भारत के बीच 19 नवंबर को अहमदाबाद में आईसीसी पुरुष क्रिकेट विश्व कप 2023 के फाइनल में होगा। दोनों टीमों ने सप्ताहांत में लगातार जीत दर्ज की है जिसमें ऑस्ट्रेलिया ने शनिवार को न्यूजीलैंड के खिलाफ पांच रन से जबकि भारत ने धीमी शुरुआत से उबरते हुए अगले दिन इंग्लैंड पर 100 रन के अंतर से जीत हासिल की।

लायन ने कहा, 'मैं ईमानदारी से मानता हूं कि यह ऑस्ट्रेलिया बनाम भारत फाइनल होगा। लायन ने कहा, 'भारत मेरे लिए नंबर एक (पसंदीदा) है (और) इसे देखना रोमांचक है। ऐसा कहा जा रहा है, मुझे लगता है कि शक्तिशाली बल्लेबाजी लाइनअप के साथ दक्षिण अफ्रीका अभी भी एक खतरनाक टीम है। आपको बस उनके तीसरे नंबर पर रासी वैन डेर डुसेन, एडेन मार्कराम, हेनरिक क्लासेन और फिर डेविड मिलर को देखना होगा।'

लियोन ने आगे कहा कि भारत पर भी दबाव है क्योंकि पूरे देश की उनसे प्रतिष्ठित ट्रॉफी जीतने की उम्मीदें हैं। उन्होंने कहा, 'भारत पर पूरे देश का दबाव

है जो उनसे जीत की उम्मीद कर रहे हैं और उनके प्रशंसक बहुत उत्साहित हैं। फाइनल में ऑस्ट्रेलिया के पास बोर्ड पर रन हैं इसलिए उम्मीद है कि वे सभी तरह से आगे बढ़ सकते हैं।'

अब तक, घरेलू टीम भारत छह मैचों में प्रत्येक में जीत के साथ शीर्ष पर है, दक्षिण अफ्रीका पांच जीत और हार के साथ दूसरे स्थान पर है जबकि न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया दोनों के नाम चार जीत और दो हार हैं लेकिन नेट रन रेट के कारण कीवी टीम ऑस्ट्रेलिया से उपर है।

इंजमाम उल हक ने दिया पीसीबी चीफ सिलेक्टर पद से इस्तीफा

क्रिकेट विश्व कप 2023 में पाकिस्तान टीम के खराब प्रदर्शन के बाद अनुभवी पाकिस्तानी क्रिकेटर इंजमाम उल हक ने टीम के मुख्य चयनकर्ता के पद से इस्तीफा दे दिया है। इंजमाम उल हक को खिलाड़ी एजेंट तल्हा रहमानी से जुड़ी कंपनी याजो इंटरनेशनल लिमिटेड में उनकी हिस्सेदारी के आरोपों के कारण भी जांच का सामना करना पड़ रहा है। रहमानी बाबर आजम, मोहम्मद रिजवान और शाहीन शाह अफरीदी सहित कई प्रमुख पाकिस्तानी क्रिकेटरों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इससे हितों के टकराव का मामला बन गया है।

इसके अलावा यह भी जांच का विषय बन गया है कि क्या टॉप क्रिकेटरों का प्रतिनिधित्व करने वाली कंपनी में मुख्य चयनकर्ता और शेयरधारक के रूप में इंजमाम की दोहरी भूमिकाएं खिलाड़ी चयन निर्णयों को प्रभावित कर रही हैं या नहीं। उक्त विवाद पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) और खिलाड़ियों के बीच केंद्रीय अनुबंधों को लेकर महत्वपूर्ण असहमति के बाद सामने आया है।

एनसीए में बल्लेबाजी के साथ-साथ विकेटकीपिंग पर भी काफी ध्यान दिया : राहुल

लखनऊ । विकेटकीपर बल्लेबाज केएल राहुन ने इस बार सर्जरी के बाद वापसी करते हुए अपने प्रदर्शन से सभी को प्रभावित किया है। राहुल ने फिटनेस हासिल करने के लिए राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) में जमकर अभ्यास किया। राहुल को इंडियन प्रीमियर लीग में जांघ की मांसपेशियों में गंभीर चोट लगी थी। इस चोट से उबरने के लिए सर्जरी की आवश्यकता थी और इसने शारीरिक और मानसिक रूप से राहुल पर बहुत बड़ा प्रभाव डाला। अब राहुल ने उस दौर को याद किया, जिसने उन्हें एक मजबूत इंसान बनाया था। उन्होंने कहा कि फिट होने की प्रक्रिया के दौरान, मैंने अपनी बल्लेबाजी के साथ-साथ विकेटकीपिंग पर भी काफी ध्यान दिया था। एनसीए की मेडिकल टीम को लगा, जिस तरह की चोट मुझे लगी थी, उसमें ज्यादा विकेटकीपिंग करना मुश्किल होगा। उन्होंने कहा कि मैंने इस दौरान अपनी फिटनेस और विकेटकीपिंग पर ज्यादा ध्यान दिया। इसके बाद बल्लेबाजी का नंबर आया। मैंने विकेटकीपिंग में काफी समय बिताया है। मुझे लगता है कि इसके लिए मेरी ओर से थोड़ा और समय और प्रयास की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि यह किसी भी अन्य कौशल की तरह ही सरल है। जितना अधिक आप इस पर काम करेंगे, आपके पास अच्छा प्रदर्शन करने का उतना बेहतर मौका होगा। मैं विकेटकीपिंग को गंभीरता से ले रहा हूं क्योंकि भारत में इन परिस्थितियों में यह काफी महत्वपूर्ण चीज है।

गंभीर ने इंग्लैंड के खराब प्रदर्शन के लिए रुट को जिम्मेदार बताया

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व सलामी बल्लेबाज गौतम गंभीर ने एकदिवसीय विश्वकप में खराब प्रदर्शन के लिए इंग्लैंड के प्रमुख बल्लेबाज जो रूट के खराब प्रदर्शन को जिम्मेदार बताया है। गंभीर ने कहा कि इंग्लैंड की पूरी बल्लेबाज रूट के इर्द-गिर्द घूमती है और जब वह उम्मीद के अनुसार प्रदर्शन नहीं करते हैं तो टीम की बल्लेबाजी ढ़ह जाती है। गंभीर ने ये बात इंग्लैंड की भारत के खिलाफ हार के बाद कही है। गंभीर ने कहा, अगर आप इंग्लैंड की बल्लेबाजी लाइनअप को देखें, तो जो रूट के अलावा बाकी सभी लोग आक्रामक क्रिकेट खेलना चाहते हैं। यह जो रूट का खराब फॉर्म है जो इस बल्लेबाजी लाइनअप के लिए सबसे ज्यादा नुकसानदेह साबित हुआ है। उनके विफल होने से पूरी टीम लड़खड़ा गयी। उन्होंने कहा कि रूट को एंकर की भूमिका निभानी चाहिए थी जिससे अन्य खिलाड़ी अपने अनुसार खेल सकें पर वह विफल रहे। रूट भारत के खिलाफ मैच में खाता भी नहीं खोल पाये थे। गंभीर ने कहा, वह वह एंकर था जो एक छोर से बल्लेबाजी कर सकता था और बाकी लोग वास्तव में उस तरह से खेल सकते थे जैसा वे चाहते थे। जिस क्षण रूट ने अच्छा प्रदर्शन नहीं किया, हर कोई विफल हो गया। बहुत से लोगों में सीमिंग और स्विंग होती गेंदों के खिलाफ खेलने के दबाव को झेलने की क्षमता नहीं होती है। रूट ने इस टूर्नामेंट में अच्छी शुरुआत करते हुए न्यूजीलैंड और बांग्लादेश के खिलाफ अर्धशतक बनाए थे पर उसके बाद से ही वह रन नहीं बना पाये हैं। उन्होंने छह मैचों में 29.16 की औसत और 93.08 की स्ट्राइक रेट से कुल 175 रन ही बनाए हैं। टीम अभी दो अंकों और -1.652 के नेट रन रेट के साथ अंक तालिका में सबसे नीचे हैं।

लियोन फुटबॉल टीम की बस पर हमले के बाद फ्रेंच लीग मैच स्थगित, 9 लोग हिरासत में

पेरिस । फ्रांस की पुलिस ने लियोन फुटबॉल टीम और प्रशंसकों को लेकर जा रही बसों पर हिंसक हमले के बाद नौ लोगों को हिरासत में लिया है और अन्य संदिग्धों की तलाश जारी है। इस हमले में ल्योन टीम के कोच फैबियो ग्रोसो के सिर में चोट लग गयी जिसके बाद मार्सेले में फ्रेंच लीग का मैच स्थगित कर दिया गया। फ्रांस के मंत्री गेराल्ड डरमानिन ने बीएफएम टीवी पर कहा कि रविवार को रात हुए इस हमले में पांच पुलिस अधिकारी भी घायल हो गये। यह घटना वेलोड्रोम स्टेडियम के बाहर हुई जिसमें 'प्रोजेक्टाइल' से हमला किया गया और बस की खिड़कियां टूट गईं। कांच के टुकड़ों से कोच ग्रोसो घायल हो गये और उनके चेहरे से खून बहने लगा। क्लब के सहायक कोच राफाएल लोंगो भी इस दौरान घायल हो गए। ग्रोसो की आंख के ऊपर गहरी चोट आई है जिस पर टांके लगाये गए। हालांकि नौ बार की चैम्पियन टीम के खिलाफ अनुशासनात्मक प्रतिबंध लगाने की संभावना नहीं है क्योंकि यह घटना स्टेडियम के बाहर हुई थी।

सूर्यकुमार के शानदार प्रदर्शन से हार्दिक की वापसी पर श्रेयस हो सकते है अंतिम एकादश से बाहर

मुम्बई (एजेंसी)। इंग्लैंड के खिलाफ मौजूदा विश्व कप मैच में मुश्किल परिस्थितियों में शानदार बल्लेबाजी करने वाले सूर्यकुमार यादव टीम में हरफनमौला हार्दिक पंड्या की वापसी के बाद अपनी जगह बरकरार रख सकते हैं जबकि पिछले कुछ मैचों में बल्ले से अच्छा नहीं कर पा रहे श्रेयस यादव को अंतिम एकादश से बाहर होना पड़ सकता है। सूर्यकुमार के कौशल और मजबूत मानसिकता पर किसी को संदेह नहीं है लेकिन टी20 प्रारूप ने अपनी धाकड़ बल्लेबाजी से धाक जमाने वाले इस बल्लेबाज ने लंबे समय तक एकदिवसीय में निराश किया है। इंग्लैंड के खिलाफ भारतीय टीम जब मुश्किल परिस्थिति में थी तब मुंबई के इस बल्लेबाज ने कप्तान रोहित शर्मा के साथ धैर्य से बल्लेबाजी कर अपने बदले हुए रुख का परिचय दिया। उन्होंने बल्लेबाजी के लिए मुश्किल परिस्थितियों में 47 गेंद में 49 रन की पारी खेल अंतिम एकादश में अपनी जगह मजबूत की। सूर्यकुमार की इस पारी ने श्रेयस के लिए खतरे

की घंटी बजा दी है। हार्दिक टखने की चोट से उबर कर विश्व कप के आखिरी कुछ मैचों में वापसी कर सकते हैं। भारतीय टीम के पूर्व चयनकर्ता जतिन परांजपे ने कहा, '' हम सभी जानते हैं कि सूर्या टी20 में क्या कर सकते हैं। इंग्लैंड के खिलाफ मैच में अच्छी बात यह रही कि उन्होंने स्थिति को समझा और रोहित की मौजूदगी में सहायक बल्लेबाज की भूमिका निभाई। परिस्थितियों के मुताबिक उनकी बल्लेबाजी शीर्ष स्तर की थी। उन्होंने स्क्वायर के पीछे अपना पसंदीदा पिक-अप शॉट तभी खेला जब उन्हें पता था कि अब आक्रमण करने का समय है।'' भारत के लिए चार एकदिवसीय खेलने वाले परांजपे ने कहा, '' इंग्लैंड के खिलाफ उन्होंने गेंदबाजों का डटकर सामना किया। हार्दिक की टीम में वापसी पर लोकेश राहुल चौथे क्रम पर श्रेयस की जगह बल्लेबाजी कर सकते हैं।'' सूर्यकुमार को मैदान के चारों ओर सहजता से बड़े शॉट खेलने के लिए जाना जाता है। वनडे क्रिकेट में उन पर स्ट्राइक रोटेट (दौड़ कर रन बनाने) करने में विफल रहने का आरोप लगता रहा है लेकिन इंग्लैंड के खिलाफ उन्होंने 19 बार एक रन चुराये। भारत के पूर्व विकेटकीपर और कमेंटेटर दीप दास गुप्ता ने कहा, '' वह आकलन करने में सफल रहा था कि इस पिच पर 280 से आस-पास का स्कोर खड़ा करना मुश्किल होगा और प्रतिद्वंद्वी टीम को चुनौती देने के लिए 240 रन काफी होंगे।

अकरम ने बुमराह को विश्व का सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज बताया

-नई गेंद पर उनका नियंत्रण मेरे से भी बेहतर

लाहौर (एजेंसी)। पाकिस्तान क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान वसीम अकरम ने टीम इंडिया के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह की जमकर प्रशंसा करते हुए कहा है कि अभी वह विश्व के सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज हैं। अकरम के अलवा पाक के ही दिग्गज क्रिकेटर मिस्बाह उल हक ने भी इंग्लैंड के खिलाफ शानदार गेंदबाजी के लिए बुमराह और मोहम्मद शमी की जमकर सराहना की है। बुमराह और शमी दोनो ने ही इंग्लैंड के खिलाफ लखनऊ में हुए विश्वकप लीग मैच में तीन और चार विकेट लिए थे। कुल मिलाकर सात विकेट लिए थे। 7 विकेट लिए थे. दोनों ने नई गेंद से कमाल की गेंदबाजी की थी और इंग्लैंड की बल्लेबाजी को ढ़हा दिया।

अकरम ने बुमराह की जमकर तारीफ करते हुए कहा, अभी बुमराह फिलहाल, दुनिया के सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज होने के कारण नंबर एक पर हैं। उनके पास अच्छा नियंत्रण है। इसके साथ ही उनकी गेंदों में विविधता के साथ ही तेजी भी है। वह एक प्रकार से पूर्ण गेंदबाज हैं। उन्हें गेंदबाजी करते देखना अच्छा लगता है। नई गेंद के साथ, इस तरह के विकेट पर ऐसा मूवमेंट हासिल करना साथ में रफ्तार, शानदार फॉलोथ्रू होना एक संपूर्ण गेंदबाज की निशानी हैं। अकरम ने तो यहां तक कहा कि नई गेंद से बुमराह के पास जो नियंत्रण है, वो मेरे से भी अच्छा है। अकरम बुमराह के इतने खतरनाक गेंदबाज होने के कारण भी बताये हैं। अकरम के अनुसार, जब बुमराह राउंड द विकेट बाएं हाथ के बल्लेबाज को गेंदबाजी कर रहे हैं और गेंद को सीम पर हिट करते हैं और जब वह क्रीज के बाहर से गेंदबाजी करते हैं, तो बल्लेबाज को लगता है कि गेंद अंदर की तरफ आ रही है। ऐसे में बल्लेबाज उसी हिसाब से शॉट खेलता है लेकिन गेंद पिच पर पड़ने के बाद अंदर आने के बजाए बाहर की तरफ जाती है और अधिकतर मौकों पर बल्लेबाज या तो बीट होता है या विकेट खोता है। अकरम ने अपनी गेंदबाजी की बात करते हुए कहा, जब मैं नई गेंद से दाएं हाथ के बल्लेबाजों को इस तरह की आउटस्विंगर करता था, तो कभी-कभी मैं गेंद पर नियंत्रण भी नहीं रख पाता था पर नई गेंद पर बुमराह का नियंत्रण निश्चित रूप से मुझसे बेहतर है। वो नई गेंद से जिस लेंथ पर बॉलिंग करते हैं, उससे बल्लेबाजों के मन में हमेशा संदेह बना रहता है।

बाबर का व्हाट्सऐप मैसेज लीक कर विवादों में आये पीसीबी प्रमुख अशरफ

लाहौर। पाकिस्तान क्रिकेट टीम जहां भारत में जारी एकदिवसीय विश्वकप के सेमीफाइनल से तकरीबन बाहर हो गयी है। वहीं पाक क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) में भी सबकुछ ठीक नहीं चल रहा है। इसका अंदाजा इसी से हो। है कि क्रिकेट बोर्ड के चेयरमैन जका अशरफ ने कप्तान बाबर आजम के भेजे व्हाट्सऐप मैसेज को लीक कर दिया। अशरफ ने ऐसा पूर्व क्रिकेटर राशिद लतीफ के उन पर लगाए आरोपों का जवाब देते हुए किया। लतीफ ने कहा था कि अशरफ कप्तान के भेजे संदेशों का जवाब नहीं दे रहे। पीसीबी प्रमुख के इस प्रकार व्हाट्सऐप मैसेज लीक करने से इस मामले में विवाद बढ़ने की उम्मीद है। अभी नहीं पता चला है कि बाबर ने उन्हें लाइव टीवी शो पर अपने निजी मैसेज शेयर करने की इजाजत दी थी या नहीं। अगर बाबर ने ऐसा नहीं किया है तो फिर ये गोपनीयता के उल्लंघन का गंभीर मामला बन सकता है। लतीफ ने हाल ही में कहा था कि बाबर ने अशरफ को कॉल और मैसेज किए थे पर उन्होंने जवाब नहीं दिया था। इन्हीं आरोपों पर अशरफ ने एक साक्षात्कार में अपना पक्ष रखा। उन्होंने अपने ऊपर लगाए लतीफ के आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि बाबर ने उनसे सीधे बात करने की कोशिश ही नहीं की। पीसीबी चीफ ने कहा, वो लतीफ कह रहे कि मैंने बाबर का फोन नहीं उठाया पर असलियत तो ये है कि बाबर ने उन्हें फोन ही नहीं किया था। वैसे भी कप्तान टीम डायरेक्टर या फिर पीसीबी के चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर से बात करता है। ऐसे में बाबर उन्हें फोन कर भी नहीं सकते थे। अशरफ ने अपनी बात को सही साबित करने के लिए आजम के व्हाट्सऐप मैसेज शेयर किया। ये बातचीत बाबर और पीसीबी के एक अधिकारी सलमान नसीर के बीच हुई थी, जिसे लाइव टीवी शो में भी दिखाया गया। पीसीबी चेयरमैन के ऐसा करने की वजह बस यही थी कि वो ये साबित करना चाहते थे कि बाबर ने उन्हें न तो फोन किया और न ही उनका कोई मैसेज आया।

अकमल बोले अगले मैच भी हार जाये तो भी होगा पाक क्रिकेट में सुधार

लाहौर। विश्वकप में पाकिस्तान क्रिकेट टीम के खराब प्रदर्शन को लेकर जहां पूर्व क्रिकेटर टीम की आलोचना कर रहे हैं। वहीं पूर्व विकेटकीपर बल्लेबाज कामरान अकमल ने कहा है कि अगर टीम को फिर से बेहतर होना है तो कप्तान बाबर आजम और उनकी टीम को विश्व कप में अपने बचे हुए मैच भी हार जायें। अकमल बोले, तभी पाक क्रिकेट में सुधार होगा जब नये सिरे से शुरुआत होगी एक दो मैच में जीतने के बाद फिर टीम पुराने तरीके से चलने लगेगी।

बिग बॉस-17 में शामिल हुई मनस्वी ममगई

अजय देवगन स्टारर एक्शन जैक्सन और कट्टी बट्टी जैसी फिल्मों में काम कर चुकीं मॉडल-एक्ट्रेस मनस्वी ममगई ने बिग बॉस 17 में बतौर वाइल्ड कार्ड एंट्री ले ली है। बता दें, मनस्वी शो में शुरुआत से ही पार्टिसिपेट करने वाली थीं। हालांकि शो शुरू होने के कुछ घंटे पहले ही मनस्वी की एंट्री को रोक दिया गया था। हाल ही में खास बातचीत के दौरान, मनस्वी ने बिग बॉस और अपनी पर्सनल लाइफ से जुडी कुछ दिलचस्प बातें शेयर कीं।

मैं इस शो का ट्रंप कार्ड हूं

कहते हैं कि हुकुम की इक्का हमेशा बाद में ही अपना रंग दिखाता हैं। मैं इस शो का ट्रंप कार्ड हूं और इसीलिए मेकर्स ने मुझे अब तक शो में जाने से रोककर रखा था। वैसे, सच कहूं तो मेरे कुछ पर्सनल कमिटमेंट भी थे जिन्हें मैं घर में जाने से पहले पूरा करना चाहती थी। बस, यही वजह रही की मेरी शो के पहले एपिसोड में एंट्री नहीं हो सकी। हालांकि, अभी मैं पूरी तरह से इस गेम के लिए तैयार हूं। कई लोगों को शो में मेरा आना पसंद नहीं होगा मैंने शो के कुछ एपिसोड देखे हैं जो मेरे लिए फायदेमंद ही साबित होगा। मुझे घर के अंदर मौजूद कंटेस्टेंट्स के बारे में पूरी तरह से ना सही लेकिन थोडा बहुत जानकारी जरूर हो गई है। हालांकि, इसका अपना नुकसान भी हैं। शायद उनमें से कई लोगों को मेरा शो के बीच में आना पसंद नहीं आएगा। उन्होंने घर में अपनी जगह बना ली है, अब ऐसे में उनके बीच जाकर अपनी जगह बनाना मेरे लिए आसान नहीं होगा।

खुद पर कॉन्फिडेंस और भरोसा रखकर आगे बढ़ना चाहती हूं

अब तक मुझे विक्की, मुनव्वर फारुकी, अभिषेक कुमार और जिगना वोरा का गेम पसंद आया है। जिस तरह से ये लोग डिप्लोमेटिक होने के साथ-साथ चालाकी से खेल रहे हैं, वह वाकई में काबिल-ए-तारीफ है। वैसे, ये बहुत ही उतार-चढ़ाव वाला शो है, आपको नहीं पता कब क्या हो जाए। मैं चाहकर भी इसकी तैयारी नहीं कर सकती। मैं बस खुद पर कॉन्फिडेंस और भरोसा रखकर आगे बढ़ना चाहती हूं।

बहुत ही सेंसिटिव और इमोशनल हूं

रियल लाइफ में मैं बहुत ही सेंसिटिव और इमोशनल हूं। कई बार मैं इमोशंस में बह जाती हूं। कहीं ना कहीं मैं अपनी इस पर्सनालिटी को घर के अंदर संभालना चाहूंगी। हालांकि, इमोशनल होना गलत बात नहीं, बस कोशिश यही रहेगी कि लोग इसका फायदा ना उठाएं।

'तेजस' पहली एरियल एक्शन फिल्म जिसमें विदेशी क्रू मेंबर नहीं

बीते कुछ दिनों में बॉलीवुड में कई एरियल एक्शन फिल्मों की अनाउंसमेंट हुई है। इसकी शुरुआत कंगना रनोट स्टारर तेजस से हुई है। आगे ऋतिक रोशन स्टारर 'फाइटर' और अक्षय कुमार की 'स्काईफोर्स' आने वाली हैं। तेजस 27 नवंबर को रिलीज हुई है। इसमें कंगना रनोट एयरफोर्स पायलट के रोल में हैं। इसके डायरेक्टर सर्वेश मेवाड़ा हैं।

बतौर डायरेक्टर पहली फिल्म बनाने का सफर 17 साल लंबा रहा?

जी हां। मैं साल 2006 में बॉलीवुड में आया था। मैं सुभाष घई के स्कूल व्हिसलिंग वुड्स इंटरनेशनल के फर्स्ट बैच का स्टूडेंट रहा हूं। तब से लेकर अब तक मैं बतौर राइटर-डायरेक्टर अलग-अलग प्रोडक्शन हाउस में काम कर रहा था। मैंने कभी किसी को असिस्ट नहीं किया। सच कहूं तो मैं बहुत ही गंदा असिस्टेंट हूं। शुरू से ही मेरा स्ट्रॉन्ग पॉइंट राइटिंग रहा है तो सोचा कि मेरा राइटर-डायरेक्टर बनना ही बेहतर होगा। फैमिली का पूरा सपोर्ट मिला। उन्होंने कभी एहसास नहीं होने दिया कि मैं स्ट्रगल कर रहा हूं। रॉनी स्क्रूवाला के साथ काम करता रहा हूं। एक दिन वहां एसोसिएट सलोनी जी ने बताया कि हमें एक फीमेल एयरक्राफ्ट फाइटर पर फिल्म बनानी है। अब मेरा बचपन असम में बीता है और वहां पर मैं आर्मी स्कूल में था। एयरफोर्स स्कूल में पढ़ता था। तो अपने आसपास मैंने वैसा कल्चर देखा है। तो इस तरह से तेजस की शुरुआत हुई।

फिल्म के लिए कंगना ही पहली पसंद थीं?

मुझे ऐसे एक्टर की तलाश थी, जो उम्दा कलाकार होने के साथ-साथ देशभक्त भी हो। कंगना में वो दोनों ही चीजे हैं। वो सही कॉम्बो साबित हुईं। उन्होंने जो सुर पकड़ा, उससे सब काफी प्रेरित हैं। फिल्म में वो जिस बदले हुए अंदाज में 'भारत को छेड़ोगे तो छोड़ेंगे नहीं' बोलती हैं, उसे सुनकर कई लोग तो पहचान नहीं पाए कि आवाज कंगना की है। हमने जो लिखा था उसे 100 गुना बेहतर परफॉर्म किया कंगना ने।

फिल्म में जो आपने फाइटर प्लेन दिखाया है उसे कैसे बनाया?

हमने रिसर्च करके तेजस का पूरा कॉकपिट बनाया। पूरा एयरक्राफ्ट बनाया और फिर उस पर VFX वर्क हुआ। हमने तेजस बनाकर IAF ऑफिसर्स को दिखाया भी और उनसे फीडबैक भी लिया। इससे इसकी ऑथेंटिसिटी और बढ़ गई। आप यकीन नहीं मानेंगे कि जब लखनऊ में इसके सेट पर था तब कई पायलेट्स हमसे मिलने आए थे। उन्होंने कहा कि यह बहुत बढ़िया बना है। कोई कह नहीं सकता कि यह असली एयरक्राफ्ट नहीं है। यह मेरी पूरी टीम के लिए बहुत बड़ा कॉम्पलीमेंट था। खास तौर पर अमित दा और सुबु दा के लिए जो इसमें आर्ट डायरेक्टर और प्रोडक्शन डिजाइनर हैं। हमने इसे करीबन 2 से 3 महीने में तैयार किया था।

यह फिल्म किन लोकेशंस पर और कितने दिनों में शूट हुई है?

लगभग 60 से 68 दिनों में हमने इसे राजस्थान, मुंबई, अंडमान और यूपी में शूट किया। जब हम इसकी शूटिंग कर रहे थे तब कोविड चल रहा था। उसके चलते हम अब्रॉड भी नहीं जा सके। पूरी फिल्म इंडिया में ही शूट की। अमूमन ऐसे जॉनर की फिल्मों में बाहर से टेक्निकल टीम आती है। जो 'मिशन इंपॉसिबल' या 'टॉप गन मेवरिक' जैसी फिल्मों में काम कर चुकी हो। मगर कोविड के चलते वह टीम यहां हायर नहीं हुई। हमारे प्रोडक्शन डिजाइनर से लेकर बाकी क्रू मेंबर सब इंडिया से रहे। यह असल मायनों में मेक इन इंडिया फिल्म है।

क्या आप बॉलीवुड में एरियल एक्शन फिल्मों के फ्लैग बेरियर कहलाना पसंद करेंगे?

मैं तो बस इतना चाहता हूं कि लोग मेरी फिल्म पसंद करें। बाकी तो मैं चाहता हूं कि तेजस के बाद आने वाली सारी एरियल एक्शन फिल्में चलें। स्काई फोर्स भी चले और फाइटर भी चले। सबकी फिल्में सबको अच्छी लगें। सबने अपने-अपनी जगह मेहनत की है।

फिल्म अपूर्वा का ट्रेलर रिलीज, इंटेंस किरदार निभाती दिखीं तारा सुतारिया

आज तारा सुतारिया की फिल्म अपूर्वा का ट्रेलर आउट हो गया। ये फिल्म एक जबरदस्त ड्रामा-थ्रिलर है। फिल्म में तारा सुतारिया के साथ-साथ राजपाल यादव, अभिषेक बनर्जी भी अहम किरदारों में नजर आएंगे। 15 नवंबर को अपूर्वा डिज्नी हॉटस्टार पर रिलीज होगी।

ट्रेलर की शुरुआत में तारा सुतारिया एक भोली-भाली लड़की के किरदार में नजर आती है, जो अपने होने वाले पति के प्यार में पागल है। फिल्म में, धैर्य करवा उनके पति की भूमिका में दिखे। इन दोनों की रोमांटिक केमिस्ट्री में ट्विस्ट तब आता है, जब तारा का अपहरण हो जाता है। अभिषेक बनर्जी ने किडनैपर की भूमिका निभाई है। ट्रेलर में आगे अपूर्वा यानी तारा को किस तरह की मुश्किलों का सामना करना पड़ता है, और कितनी खतरनाक परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है, बखूबी नजर आता है। क्या आखिर में तारा की जिंदगी में सब ठीक हो जाता है, किस हद तक वे सर्वाइवल के लिए लड़ती है, फिल्म की कहानी इसी के इर्द-गिर्द घूमती है। बता दें, तारा सुतारिया इस फिल्म से ओटीटी प्लेटफॉर्म पर अपना डेब्यू कर रही हैं। एक्ट्रेस को इसके पहले कभी इतने इंटेंस किरदार में नहीं देखा गया है। फिल्म के डायरेक्टर निखिल नागेश भट्ट हैं, जिन्हें 2022 में रिलीज हुई फिल्म हुड़दंग, और 2020 में रिलीज हुई वेब-सीरीज रसभरी के लिए जाना जाता है।

ऑडियो सीरीज में ईशान खट्टर ने दी रावण को आवाज

फिल्मों में सक्रिय रहते हुए एक्टर ईशान खट्टर ने ऑडियो सीरीज में भी हाथ आजमाया है। ऑडिबल पर उनकी 'रावण राइजिंग' नामक ऑडियो सीरीज रिलीज हुई है। इसमें उन्होंने युवा रावण को आवाज दी है। आगे ईशान की वॉर फिल्म 'पिप्पा' भी रिलीज होने वाली है।

रावण का किरदार लार्जर दैन लाइफ है। आपकी क्या तैयारियां रहीं?

इस तरह का काम बहुत बड़ी जिम्मेदारी होता है। इससे कई लोगों की भावनाएं जुड़ी होती हैं। चुनौती यह भी रहती है कि इन किरदारों की कहानियां हमने पेरेंट्स या ग्रैंड पेरेंट्स से सुनी हुई हैं। रावण को लेकर लोगों के मन में एक इमेज भी है कि वह 10 सिर वाला और वॉरियर किंग था। पर यहां हमने रावण की कहानी के एक ऐसे हिस्से को छुआ है, जो हम सबके लिए डिस्कवरी साबित हो सकती है। उस पहलू ने मुझे भी काफी एक्साइट किया। हमने 6 से 7 दिनों तक रिकॉर्डिंग की। नई चीज सीखी कि लिमिटेड एपिसोड में पूरा ग्रंथ कैसे बयां किया जाता है। यह भी कि युद्ध के रोमांच और एक्शन को आवाज से कैसे असरदार बनाया जा सकता है। ताकि दर्शकों के मन में युद्धस्थल और योद्धाओं के विजुअल्स बन सकें।

वर्ल्ड हिस्ट्री या माइथोलॉजी पुरानी होकर भी क्यों लगातार अडॉप्ट होती रहती हैं?

क्योंकि आप इतने सालों बाद भी उनके साथ इंट्रेक्ट कर सकते हैं और ये फिर भी रेलीवेंट रहती हैं। उसमें सारी कहानियां पहले से ही हैं। वो सारे रस हैं। ह्यूमन इमोशंस हैं। तो मेरे ख्याल से यह हमेशा अच्छा सब्जेक्ट ही बना रहेगा। हां, इसके साथ जरूर एक जिम्मेदारी आती है कि आप उस सब्जेक्ट से भटके ना.. उस प्रोजेक्ट को खराब ना करें। उसकी जो एक कोर वैल्यू है और जो सादगी है उसे बना रहने दें।

इस मोड़ पर नेगेटिव या ग्रे शेड करना सही होगा?

ऑडियंस इस मामले में बहुत आगे है। ऐसा नहीं है कि वह आपको एक ही डब्बे में बंद करके रखेगी। या आपसे सिर्फ एक ही उम्मीद रखेगी। हां, यह जरूर है कि आप अपना एक अंदाज ढूंढें और ऑडियंस के साथ इंट्रेक्ट करें। मैं अपने आप पर भी कभी यह रोक टोक नहीं लगना चाहूंगा कि मुझे ये करना चाहिए और यह नहीं। कई बार आपको रिस्क लेने के बाद ही अच्छा फीडबैक मिलता है। मेरे ख्याल से ग्रे शेड में किरदार को एप्रिशिएट किया जाता है। अगर आपका किरदार प्रिडिक्टेबल हो तो ऑडियंस आपसे बोर हो जाएगी। ऐसे में जितना ज्यादा आप उनको सरप्राइज करने की कोशिश करेंगे उतना ही अच्छा होगा।

विजय सेतुपति संग काम करेंगी कंगना

कंगना रनौत ने फैंस को बड़ी खुशखबरी दी है। कंगना रनौत ने बताया फैंस को जल्द ही 'तनु वेड्स मनु' का तीसरा पार्ट देखने को मिलने वाला है। एक्ट्रेस ने बताया कि वह आने वाले समय में तीन प्रोजेक्ट्स पर काम करने वाली हैं, उनमें से एक तनु वेड्स मन 3 है। वहीं उन्होंने साउथ स्टार विजय सेतुपति के साथ भी फिल्म साइन करने के बारे में बताया है। कंगना से इंटरव्यू में उनके आने वाले प्रोजेक्ट्स के बारे में सवाल किया गया था। जिस पर उन्होंने कहा, मैं विजय सेतुपति सर के साथ एक थ्रिलर शुरू कर रही हूं और एक फिल्म जिसका नाम 'नोटी बिनोदिनी' है। एक और फिल्म जिसका नाम 'तनु वेड्स मनु 3' है। 'तनु वेड्स मनु' के तीसरे पार्ट की घोषणा एक बड़ा सरप्राइज है। क्योंकि इससे पहले फिल्म के डायरेक्टर निर्देशक आनंद एल राय ने फिल्म के तीसरे पार्ट के लिए मना कर दिया था। 2015 के एक इंटरव्यू में उन्होंने कहा था, मैं तीसरा भाग सिर्फ इसलिए नहीं बनाऊंगा क्योंकि यह एक ब्रांड है, या क्योंकि यह काम करेगा। इसे एक सीरीज की तरह न मानें। अभी, कोई पार्ट थ्री नहीं है। मुझे लगता है कि कम से कम अभी के लिए मैंने किरदारों का काम पूरा कर लिया है। फिल्म के डायरेक्टर के अलावा लीड एक्टर आर माधवन ने भी तीसरे पार्ट को लेकर इनकार किया था। उन्होंने कहा था कि अब उन्हें नहीं लगता वह मनु का किरदार कर सकते हैं। इसके साथ ही एवेंजर की सीरीज से तुलना करते हुए एक्टर ने कहा था कि इसका तीसरा पार्ट बनाने का कोई फायदा नहीं है।

चचेरी बहन परिणीति की डुप्लीकेट बुलाने पर भड़कीं मन्नारा चोपड़ा

रियलिटी शो बिग बॉस 17 इसी महीने 15 तारीख को शुरू हुआ है। शो के अंदर कंटेस्टेंट्स जमकर लड़ाई- झगड़े कर रहे हैं। अपकमिंग एपिसोड में अभिषेक कुमार, मन्नारा चोपड़ा की तुलना उनकी चचेरी बहन परिणीति चोपड़ा से करते हुए दिखाई दिए, जिसके बाद दोनों के बीच काफी झगड़ा हुआ।

अभिषेक ने बुलाया डुप्लीकेट परिणीति

प्रोमो वीडियो में सभी घरवाले लिविंग एरिया में साथ बैठे हुए थे। इसी बीच अभिषेक, मन्नारा को डुप्लीकेट परिणीति बुलाते हैं। ये सुनकर मन्नारा भड़क जाती हैं और अभिषेक पर चिल्लाने लगती हैं। मन्नारा कहती हैं, मेरी फैमिली को इन्वॉल्व करके फुटेज ले रहा है। अभिषेक ने उन पर चिल्लाते हुए कहा, सुन आज के बात अगर तूने मुझे ये बोला तो देख लेना। गुस्से में मन्नारा ने अभिषेक पर तकिया फेंक दिया। मन्नारा ने यह भी कहा कि परिवारों के बारे में बात करना मना है। बता दें, बीते एपिसोड में अंकिता लोखंडे ने अभिषेक को बताया था कि जब भी कोई मन्नारा को चचेरी बहन परिणीति और प्रियंका चोपड़ा के बारे में बोलता है तो मन्नारा ट्रिगर होती हैं। अभिषेक को मन्नारा का ट्रिगर मिल गया और उसने इसे मन्नारा के खिलाफ इस्तेमाल करने का फैसला किया।